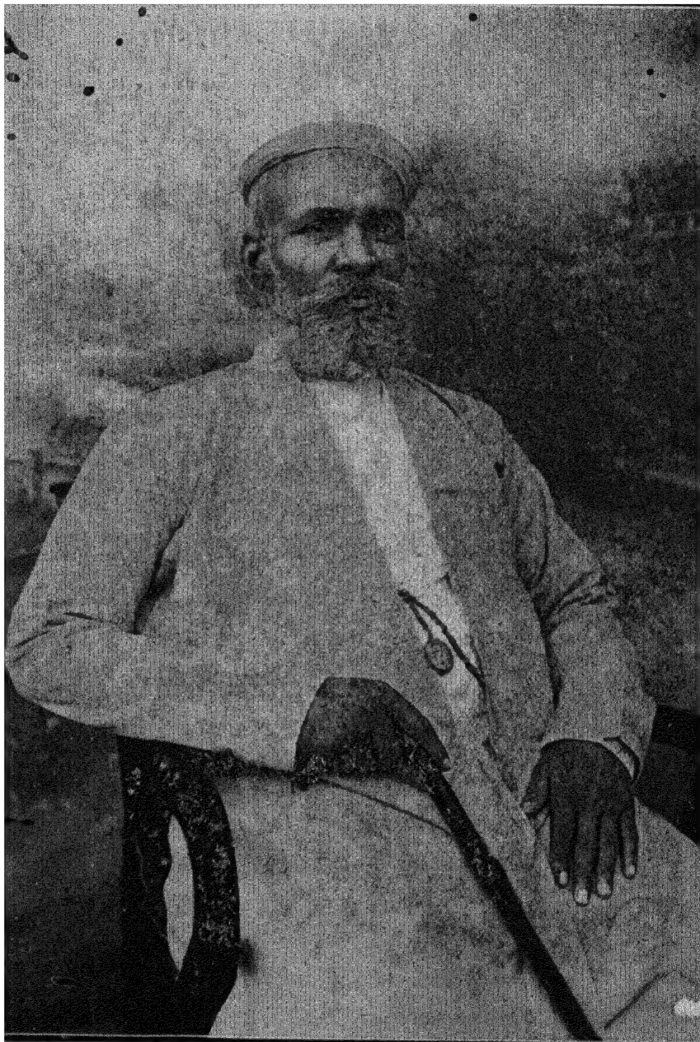
DAMAGE BOOK



श्रीमान् मुंशी रघुबरदयाल साहब।

कृष्ण प्रेस. प्रयाग।

समर्पण

सेवा में

श्रीमान् मुन्शी रघुबरदयाल साबह साबिक स्टेट कोन्सिल सेक्रेटरी राज्य बूंदी

मेरे परम पूज्य पिता जी—

जैसे श्रीमान् मेरे जन्म दाता हैं वैसे ही मेरे विचारों के भी प्राणदाता हैं. मैंने जो कुछ अच्छाई सीखी श्रीमान् ही से सीखी श्रीमान् का सम्पूर्ण जीवन शुद्ध सभ्यता का आदर्श नमूना रहा है। इच्छा थी कि श्रीमान् का पवित्र जीवन-चरित्र भी भेंट करता परन्तु समय न मिलने से असमर्थ रहा, ईश्वर की अनुग्रह हुई तो दूसरे एडीशन में यह कमी पूरी हो जायगी श्रीमान् का जीवन मुझे सदैव सत्मार्ग बताने वाला रहा और जीवन प्रयत्न रहेगा। इसलिये अपने तुच्छ विचारों की यह बानगी अत्यन्त नम्रता के साथ श्रीमान के चरण कमलों पर भेंट करके ईश्वर से प्रार्थी हूँ कि श्रीमान् के समान सर्व माता पितागण सन्तान धर्म से उरिण हों।

२७ मार्च
सन् १९२५ ई०

श्रीमान् का प्यारा पुत्र

प्रभु दयाल
वर्मन

समालोचना

श्रीमान "रसेन्द्र" राजकवि, कविरत्न, काव्याचार्य, नाज़िर, अशफ़ाकुल शोरा, मुंशी, शारदा प्रसाद साहब तहसीलदार चित्रकूट एडीटर शारदा-सदन बाँदा की ओर से

कुंडलिया।

प्यारा प्रभुदयालजी, कायस्थ कुल सरदार।
सब ही के उपकार हित, रचि सन्तान सुधार॥
रचि संतान सुधार कीन्ह उपकार महाई।
भाषा सरल अनूप पढ़ैं सब लोग लोगाई॥
पुत्री पुत्रन के सुधार हित ग्रंथ सुधारा।
धन्यवाद "शारद" सुलेख यह जग को प्यारा॥ १॥
सुन्दर पोथी यह रची, "रक़म" श्रीप्रभुदयाल।
नर नारी सुत सुता को, देन ज्ञान तत्काल॥
देत ज्ञान तत्काल सदा सन्तान सुधारे।
यह "सन्तान सुधार" नाम "शारद" उच्चारे।
चन्द्र, अंक, बसु, ब्रह्म, बिक्रमी सम्बत अन्दर।
१   ९   ८   १
करि विचार उपकार ग्रंथ यह विरच्यो सुन्दर॥ २॥

२ फ़रवरी १९२५ ई०   शारद रसेन्द्र

भूमिका

प्रिय पाठक गण !

मेरे ध्यान में भी न था कि मैं कभी कोई पुस्तक हिन्दी भाषा में लिख सकूंगा, क्योंकि दुर्भाग्यवश मैं इतनी हिन्दी नहीं जानता कि किसी पुस्तक को हिन्दी में लिखने का साहस कर सकूं। परन्तु सन्तान के बिगाड़ने का ख़ास कारण माता पिता का अयोग्य लाड़ प्यार होता है और सन्तान का सुधार अधिकाँश माताओं पर निर्भर है। चूंकि मातायें आमतौर पर हिन्दी भाषा जानती हैं इस कारण हिन्दी में लिखने की आवश्यकता हुई। आशा है कि मेरी अज्ञानता पर विचार करके सज्जन पाठक चूक क्षमा करेंगे।

मैंने इसके लिखने में किसी काव्य अलंकार से काम नहीं लिया विशेष अभिप्राय यह रहा है कि सर्व साधारण इसको समझ कर लाभ उठावें जहाँ कुछ कमी हो वह मेरी अयोग्यता का कारण होगा।

अन्त में कठिन शब्दों का कोष भी लगा दिया है जिसमें माताओं को सुभीता रहे।

इस पुस्तक के लिखने का विचार मुझे सन् १९१६ ई० में पैदा हुआ था।

मेरे बड़े भाई श्रीमान् बाबू रामसहाय साहब ने ट्रेनिंग आफ़ चिल्डरेन (Training of children) एक छोटा सा अँगरेज़ी पम्फ़लेट जो मदरास के क्रिश्चियन सुसाइटी का छपा हुआ था मुझे देकर फ़रमाया कि बच्चों के शिक्षार्थ पर किसी अच्छी

पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता है, इस पम्फ़लेट में बहुत सी अच्छी बातें हैं। इसके आधार पर ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिससे माता पिता और उनकी सन्तान का कल्याण हो। अतएव उनकी आज्ञा पालन में यह बुरी भली जैसी भी है छोटी पुस्तक अर्पण है।

संसारिक कारणों और दूसरी घटनाओं से इसके प्रकाश में बहुत बिलम्ब हुआ इसमें सिवाय अपनी दुर्भाग्य के क्या विनय करूँ। परन्तु हर्ष है कि आज यह कांक्षा पूर्ण हुई, साथ ही यह दुःख भी है कि मेरे पूज्य भ्राताजी जिनकी आज्ञा से यह पुस्तक लिखी गई वह विराजमान नहीं हैं सन् १९१८ ई० के इंफ़्ल्यूएञ्जा में पहिले ही इस असार संसार को त्याग कर परम धाम को पधार गये, तथास्तु मुझे यह दृढ़ विश्वास है कि उनका शुभ आशीर्वाद सदा इस पुस्तक के साथ रहेगा। यह इस पुस्तक के लिखने की संक्षेप कहानी है।

इस समय संतान की दशा शोचनीय है सौ में मुशक़िल से दस पाँच भाग्यवान ऐसे घराने होंगे जहाँ आज्ञाकारी सदाचारी और योग्य सन्तान दृष्टि गोचर होते हों, वरना सन्तान आज्ञा उल्लङ्घनकर्ता, और असभ्य की सर्वत्र शिकायतें हैं। इसका कारण यह है कि सन्तान को शुभ शिक्षा आरम्भ ही से नहीं दी जाती यदि इस पर ध्यान दिया जाय तो कदापि बिगाड़ न हो और सन्तान अयोग्य न होने पावे। इस पुस्तक में यही लेख है यह देखना कि इस कार्य में मुझे कहाँ तक सफलता हुई प्यारे पाठकों का काम है मुझे कुछ लिखना उचित नहीं है तथास्तु परमात्मा से यह प्रार्थना अवश्य है कि मेरा परिश्रम सुफल करें।

महात्मा शिवबर्न लालजी का लेख पत्र साधू या सन्त

संदेश में छपा था वह बहुत उपकारक है, पाठक १४५ पृष्ठ पर अवलोकन करें, इसी तरह पर किसी अँगरेज़ी लेखक का गृह प्रबंध पर लेख है वह भी इसके अंत में लिखा गया है देखने योग्य है जो कुछ भी है इस पुस्तक में है, भूमिका को बहुत बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु इसके समाप्ति करने से प्रथम मेरा धर्म है कि मैं अपने कृतज्ञता के तुच्छ पुष्प अपने मित्र श्रीमान मुन्शी शारदा प्रसाद साहब, रसेन्द्र, राजकवि, नाज़िर, शरीफुल शोरा कविरत्न, काव्याचार्य, एडीटर शारदा सदन बाँदा, तहसीलदार साहब चित्रकूट की सेवा में भेंट करूँ जिनके उत्साह दिलाने से मैं इस पुस्तक को फिर भी शीघ्र प्रकाशित करने पर समर्थ हुआ। श्रीमान ने छपने से पहिले भी इसको देखने और संशोधन करने का कष्ट उठाया और तब से अब तक मेरे परिश्रम में हाथ बटाने में सहायता करते रहे हैं।

२७ मार्च १९२५ ई०

सेवक
प्रभुदयाल वर्मन
बूंदी—राजपूताना

सन्तान-सुधार

इन्ट्रोडकशन

माता पिता ध्यान दें



र में जब बाल बच्चा पैदा होता है तो माता पिता और संबन्धियों की खुशी अपार होती है असल में इस खुशी से बढ़कर दुनियाँ में कोई खुशी नहीं परन्तु यह आनन्द उसी वक्त सार्थिक है कि औलाद बड़ी होकर लायक़ निकले, आज कल आमतौर पर औलाद के बिगड़ने की शिकायत देखने और सुनने में आती है और इसको समय का दोष बताया जाता है समय का दोष होता होगा परन्तु हम इसके मानने को तैयार नहीं हमारा तो अटल विश्वास है कि औलाद का बनाना या बिगाड़ना माता पिता के हाथ में है और जो माता पिता एक बार इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़ लेंगे उनका बिचार अवश्य बदल जायगा।

बच्चों के साथ माता पिता का प्रेम स्वभाविक होता है परन्तु वे इस प्रेम भाव का शुरू ही से अयोग्य व्यवहार करते हैं। छोटेपन में बच्चों को जीवित खिलोना समझ कर दिल बहलाते हैं और बड़े होने पर उनको बेलगाम छोड़ देते हैं और फिर

समय को दोष देते हैं, पूरे तौर पर यह नहीं समझते कि बच्चे ईश्वर की अमानत हैं और इनको सामाजिक व धार्मिक शिक्षा देना हमारा मुख्य धर्म है, यदि एक बाग़ को योंही छोड़ दिया जाय और उसकी निगरानी न की जाय तो बाग़ जंगल हो जायगा, उसको उपजाऊ बनाने के लिये बराबर निगरानी करना ज़रूरी है। बच्चों के हृदय को वह बाग़ समझिये जिसकी निगरानी करने की ज़रूरत सब से ज्यादा है बड़े बड़े देखे गये हैं कि उनको बाग़ और खेत की रात दिन चिन्ता रहती है रोजाना ख़बर मँगाते हैं, रखवाले रखते हैं, रुपया ख़र्च करते हैं और समय निकाल कर रोज़ नहीं तो दूसरे तीसरे खुद भी देखने जाते हैं उन्हीं घरानों के बच्चों का यह हाल देखा है कि पिताजी या महा पिता जी को यह ख़बर नहीं कि उनके बच्चे सुबह से शाम तक क्या क्या करते हैं, भोजन के समय देर हुई तो माता ने याद किया, तलाश हुई बच्चे बुलाये गये भोजन करा दिया चलो छुट्टी हुई अब बच्चों को वुही दण्डा है और वुही मैदान। माताएँ पढ़ी लिखी नहीं कि उनकी शिक्षा की देख भाल कर सकें और पिता जी को सांसारिक कार्यों से फ़ुरसत नहीं। कभी ख़्याल आया तो कुछ पूछ लिया और फिर काम धंधों में लगगये। जब बच्चों की ऊम्र १२। १४ वर्ष की हुई और देखा कि यह कंड के कंड रहे तो लगे तक़दीर को दोष देने अब कहिये इस निगरानी के साथ बच्चे बिगड़ते नहीं तो क्या सुधरते ?

बाग़ की निगरानी हो, खेत की रखवाली की जाय, गाय भैंसों को चराने चरवाहा ले जाय, और तुम्हारे कलेजे के टुकड़े आवारा फिरें—माना कि बाग़ फल देता है, खेत से अनाज आता है, मवेशी दूध देती है या बिककर टके परखाती है

लेकिन यह लाख की दौलत ख़ाक हो जायगी, तुमने बच्चों की निगरानी जानवरों के बराबर भी नहीं की, अब यह जानवर बनकर हमला करेंगे और इनका पहला हमला अपने माँ बाप और घराने पर ही होगा।

योग्य सन्तान से बढ़कर कोई सुख नहीं इसी तरह अयोग्य सन्तान से बढ़कर संसार में कोई दारुण दुःख नहीं। जिसके घर में आज्ञाकारी बच्चे हैं वह घर निर्धन होते हुए भी धनवान और सांसारिक क्लेश सहते हुए भी सुखी है परन्तु कृतघ्नी सन्तान को क्या कहा जाय यदि सर्प या नाहर कहो तो भी ठीक नहीं यह घातक पशु तो एक ही बार में प्राण लेलेते हैं पर ऐसी सन्तान जीवन भर दारुण दुःख देती रहती है जिसके मुकाबिले में एक बार का प्राण कष्ट कुछभी नहीं सच तो यह है कि ऐसे माता पिता राज पाट भोगते हुए भी कर्महीन हैं। मनुष्य सारा परिश्रम सुख के लिये करता है परन्तु बुरी औलाद होते हुए तीन लोक की संपत्ति भी सुख नहीं दे सकती।

माता पिता की लापरवाही से केवल उन्हीं को दुःख नहीं होता बलिक वह सन्तान भी जन्म भर दुःख पाती है जिसको माता पिता सुख में देखना चाहते थे और फिर यह सिलसिला बढ़ता ही जाता है क्योंकि जब बेटे कुपूत हुए तो पोते सुपूत कैसे होंगे मुसलमानों का क़िस्सा है कि एक दिन हजरत खिजरको अचानक शैतान मिलगया—हज़रत नाराज होकर उसको बुरा भला कहने लगे कि तू संसार में बड़ा नुक़सान करता है। शैतान ने जवाब दिया कि मैं बड़ा नुक़सान तो नहीं करता केवल छोटा सा करता हूँ और वह बड़ा होजाता है। खिजर बोले यह कैसे हो सकता है? छोटे काम का छोटा फल होना चाहिये। इस पर शैतान ने हँसकर कहा कि बड़ का बीज़ राई के दाने से भी

छोटा होता है लेकिन उसका दरख़्त कितना बड़ा हो जाता है। हजरत खिजर यह सुनकर सोचने लगे तो शैतान ने कहा कि आपको मेरी बातों का विश्वास नहीं आता चलिये मैं आपको तजुरबा करादूँ। खिजर साहब बोले मैं ऐसा तजुरबा नहीं चाहता जिससे लोगों का नुक़सान हो, शैतान फ़िर हँसा और अर्ज़ किया "हजरत मुझे तो जो कुछ करना है करता ही रहूँगा आप देखें, या न देखें, हाँ अगर आपने मेरे इशारे को देख लिया तो आप समझ जाँयेगे कि मैं किस ख़ूबसूरती से अपना काम करता हूँ और किसी बात का जानना न जानने से अच्छा ही है, आख़िर खिजर शैतान के साथ रवाना हुए और एक अति सुन्दर नगरी में पहुँचे, नगरी की शोभा देखकर हजरत खिजर का मन बहुत प्रसन्न हुआ तब शैतान ने कहा "देखिये अब मैं आपको अपने काम का तमाशा दिखाता हूँ" यह कह कर वह एक हलवाई की दुकान पर गया, कड़ाही में चाशनी पक रही थी, शैतान ने अपनी छोटी अंगुली चाशनी में डाली और उसको दीवार पर छिड़क दिया और खिजर के पास चला आया जो दूर खड़े तमाशा देख रहे थे, थोड़ी देर में मक्खियाँ चाशनी पर बैठीं और उसके शीरे में फँस गईं, एक मकड़ी ताक में बैठी थी वह झपटी और मक्खियों को खाने लगी एक छपकली ने जो मकड़ी को शिकार खाते देखा तो फ़ौरन पहुँची और मकड़ी पर मुँह मारा, हलवाई की बिल्ली ने जो छपकली को देखा तो हमला किया और दम के दम में छपकली और बिल्ली कड़ाही में गिरीं, पास ही कोई कुत्ता खड़ा था बिल्ली पर झपटा और वह भी कड़ाही में गिरा, अब हलवाई जो घबराया उसने कड़ाही उलट दी, चूल्हे की आग जल उठी दुकान को आग लग गई और उस

दूकान की आग ने धीरे धीरे सारे मोहल्ले बल्कि नगरी तक को जला कर खाक कर दिया, सैकड़ों जानें गईं, लाखों का शहर खाक होगया, पास के एक बादशाह ने जो मोका देखा फ़ौरन चढ़ाई करदी और बादशाह वजीर को मार कर उस राज्य का मालिक बन बैठा।

यह सब काम शैतान की एक अंगुली के इशारे से हुआ लेकिन वही इस सब कर्म फल का भागी होगा—यही हाल सन्तान के बिगाड़ के साथ है—शैतान में और ऐसे माता पिता में कुछ अन्तर नहीं अगर है तो केवल इतना सा कि शैतान जान बूझ कर ऐसा करता है और माता पिता अनजाने करते हैं परन्तु कर्म का नियम ऐसा प्रबल है कि वह यह नहीं देखता कि कर्म जान कर किया गया है या बेजाने वह फल अवश्य देता है। माता पिता भली भांति याद रक्खें कि सन्तान के बिगड़ जाने का दोष उन्हीं पर है। सन्तान का सुधार उनका मामूली धर्म है परन्तु उनका बिगाड़ महान पाप है जिस के लिये ईश्वर को जवाब देना पड़ेगा। माता पिता इस तरह अपना या अपनी सन्तान का ही नुकसान नहीं करते हैं बल्कि सब देश को बिगाड़ते हैं। तालाब में एक छोटी कंकरी डालिये तो छोटा सा दायरा बन कर उस से बड़ा और फिर उस से बड़ा दायरा बनता जायेगा और यह सिलसिला उस वक्त तक बन्द नहीं होगा जब तक कि वह छोटा दायरा बढ़ते बढ़ते उस बड़े तालाब के किनारों को न छूले—एक नालायक पुत्र या कन्या अपने जीवन में हज़ारों पुरुष स्त्रियों के बिगड़ने का कारण होता है—यदि शैतान एक उंगली चाशनी को दीवार पर छिड़कने से महान पाप का भागी हुवा तो क्या माता पिता इससे बच सकते हैं कदापि नहीं। यदि माता पिता को अपने पड़ोसियों के अपनी जाति के अथवा अपने देश के

सुधार की चिन्ता नहीं तो न सही वे कृपा करके केवल अपने हित ही के लिये अपनी सन्तान के सुधार पर ध्यानदें और वे सारे देश के आशीरबाद के भागी बनेंगे। अब पहले वह आम बातें लिखी जाती हैं जिन पर माता पिता को विशेष ध्यान देना चाहिये :—

१—बच्चे माता पिता के रूप होते हैं जैसा उनको करते देखते हैं वेसा ही खुद करने को कोशिश करते हैं। सब बातों में माता का प्रभाव बच्चे पर सब से अधिक और प्रबल होता है—माता नेक है तो वह सौ मास्टरों से बढ़कर है। बच्चे को मूर्ख माता की निगरानी में छोड़ दिया जाय तो परिणाम यह होगा कि बच्चा फिर किसी शिक्षा को मुशकिल से ग्रहण कर सकेगा। माता के बाद सब से अधिक प्रभाव पिता का होता है। पिता का धर्म है कि बालकों की शिक्षा पूर्ण रीति से करे। बहुधा स्त्रियां अनपढ़ होती हैं वे उन नियमों को अच्छी तरह नहीं समझतीं जो बच्चों की पालना में बरतने चाहिये। अच्छे अच्छे पढ़े लिखे पुरुषों को देखा है कि वे अपने घर की स्त्रियों की मूर्खता के कारण बच्चों की पालना पर अधिक ध्यान नहीं देते लेकिन यह भारी भूल है इस तरह अंत में बच्चे बिगड़ जाते हैं पुरुषों को चाहिये कि स्त्रियों को समझाने का पूरा यत्न करें।

२—माता पिता को मिलकर काम करना चाहिये, आज्ञाकारी होना बच्चों का पहला काम है यदि माता पिता मिल कर काम न करेंगे तो बच्चे कभी आज्ञा पालन नहीं करेगें। बच्चों का यह विश्वास होना मुख्य है कि हमारे माता पिता सब बातें हम से अधिक और अच्छी जानते हैं। स्त्रियों के मूर्ख होने से अकसर आपस में खटपट रहा करती है। जब बच्चे देखेंगे कि माता पिता की एक राय नहीं है तो उनका चित्त डावाडोल रहेगा

कि हम किसकी बातें मानें इस वास्ते माता पिता को चाहिये कि जिन बातों में उनका आपुस में मतभेद हो उन विषयों पर अलग बात चीत करें बच्चों के सामने कभी न करें, अगर माता ने ना समझी से कोई काम किया या बच्चे को कोई अयोग्य हुक्म दिया तो पिता को माता पर बच्चों के सामने कभी ऐतराज़ नहीं करना चाहिये और न माता पर इल्ज़ाम लगाना चाहिये। किसी विषय में भी बच्चों को यह नहीं मालूम होना चाहिये कि हमारे माता पिता का इस में मत भेद है इस का असर बच्चों की तबियत पर बहुत बुरा पड़ता है और उन के दिल से माता पिता दोनो की इज़्ज़त जाती रहती है चाहे माता से कैसी भी भूल हो जाय पर बच्चों के सामने कभी उसको बुरा भला न कहा जाय इसी तरह माताओं का काम है कि अगर अपने पति को कोई बात उन्हें अयोग्य मालूम होती हो अथवा समझ में न आई हो तो यह बात बच्चों पर कभी जाहिर न होने दें कि उनको अपने पति की बात पर संदेह है।

३—बच्चों के बिगड़ने का कारण ज़्यादातर मातायें होती हैं वे अपनी मूर्खता से यह समझतीं हैं कि चाहे हमारे पति कैसे ही विद्वान् और गुणी हैं परन्तु बच्चों के लालन पालन और निज गृह कार्यों में हम से अच्छा नहीं समझते। इधर पतियों को उनकी मूर्खता से कुछ नफ़रत सी हो जाती है फिर वैसा ही प्रभाव बच्चों पर पड़ता है बच्चे बिगड़ जाते हैं। बच्चे ने ऐब किया, पिता ने धमकाया माता जी फौरन उसकी हिमायत करने लगीं। बहुतेरी मातायें आम तौर पर बच्चों के ऐब बाप से छिपाती हैं खुद झूठ बोलतीं हैं बच्चों को झूठ बोलना सिखातीं हैं। बाप सजा दे तो बच्चे के बहलाने

और चुप करने के लिये उसे बुरा भला कहती हैं इस तरह बच्चा दिन दिन बिगड़ता जाता है और इस का कारण माता का अयोग्य लाड़प्यार होता है—ऐसी मातायें अपने बच्चों की भारी दुश्मन हैं। माताओं को याद रखना चाहिये कि ऐसा प्रेम बच्चों के लिये विष है।

४—बच्चे नक़ाल होते हैं वे जैसा औरों को करता देखते हैं खुद भी वही करने लगते हैं। इसलिये माता पिता को सब से अधिक इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वे बच्चों के सामने क्या करते हैं माता पिता का दिनचर्या बच्चों का रोज का पाठ होता है जो मनुष्य अपने बच्चे के सामने पाप करता है वह डबल पाप करता है। बच्चों को अच्छी शिक्षा देना और बुरा उदाहरण (मिसाल) दिखाना ऐसा है जैसे बच्चे को राह तो सीधी बताई जाये परन्तु हाथ पकड़कर ग़लत रास्ते पर डाल दिया जाय। बच्चों पर ख़ाली उपदेश का पूरा असर कभी नहीं होता वे सच में उपदेश को समझते ही नहीं उन के लिये तो माता की करनी प्रमाण है। माता झूठ बोलती है या गाली देती है तो बच्चा भी गाली देगा और झूठ बोलेगा उसको हज़ार समझावो कि यह बुरी बात है कभी नहीं समझेगा यही कहेगा कि माता ने ऐसा किया अर्थात् माता की करनी उसके लिये ब्रह्मवाक्य है यदि ख़ुद माता भी बच्चे से कहे कुछ और करे कुछ तो भी उस के कहने का असर कम होगा। बच्चे माता भक्त होते हैं यदि माता सुशील है तो उसके बालक ज़रूर सुशील होंगे। ख़ाली उपदेश बच्चों के लिये सर्वथा निशफल है इसलिये माता पिता को चाहिये कि जैसा बच्चों को बनाना चाहते हैं पहले ख़ुद वैसे बनें और जो कुछ बच्चों से कराना चाहते हैं पहले खुद वैसा करें अगर माता पिता

ऐसा न करेंगे तो बच्चे मक्कारी की आदत सीख जायेंगे।

५—बच्चों की शिक्षा कायदा (नियम) बता देने से नहीं हो सकती वे कभी असूल या क़ायदे को याद नहीं रख सकते उनको शिक्षा एक काम को इतनी दफे बार बार करने से होती है कि वह उनकी आदत बन जाये। किसी छोटी लड़की को सोने का क़ायदा ज़बानी बताओ तो वह सीना नहीं सीख सकती उसे अपने सामने सिलावोगे तब समझेगी। अगर माँ बच्चे से कहे कि हर चीज अपनी जगह पर रक्खा करो तो यह काफ़ी नहीं। माँ का काम है कि जबतक बच्चे की आदत न हो जाय बराबर निगरानी करे कि बच्चा इसका ध्यान रखता है या नहीं इस तरह माँ बराबर उसको याद दिलाती रहे जब तक कि हर चीज़ ठिकाने रखने की उसकी आदत न हो जाये।

६—बच्चे की जैसी प्रकृति हो उसी ढंग पर उसकी तरबियत (शिक्षा) करना चाहिये तो जब वह बड़ा होगा अपनी आदतें कभी न छोड़ेगा। जो कुछ पढ़ाया या सिखाया जाये अच्छी तरह गुनाया जाय प्रकृति के प्रतिकूल शिक्षा देने से बच्चे पर उल्टा असर पड़ता है और एक तरह पर उसकी उन्नति रुक जाती है।

७—गर्भ में आते ही बच्चे की तरबियत (शिक्षा) शुरू हो जानी चाहिये। गर्भाधान संसकार से ही बच्चे के गुण और स्वभाव की बुनयाद पड़ जाती है इसलिये हर माता पिता का फ़र्ज है कि गृहस्त में प्रवेश करने से पहले " संसकार विधी " या दूसरी ऐसी पुस्तकों के नियम अच्छी तरह समझलेवें यदि वे उन पर अमल करेंगे तो उन के सतयुगी आदर्श सन्तान पैदा होगी।

८—बच्चा रोजाना कुछ न कुछ सीखता है, पैदा होने के बाद चन्द हफतों में माता की प्यार की निगाह और खुशी के शब्दों के जवाब में बच्चा मुसकराने लगता है गोया उस का पाठ उसी समय से शुरु हो जाता है। यह शीर ख्वारी का जमाना बच्चे की तालीम के लिये सब से अच्छा है इस वक्त वह बिलकुल बेबस और हर तरह माता का आधीन होता है इसलिये अभी से उस को आज्ञा पालन सिखाना चाहिये। अगर इस वक्त से ना फरमानी की आदत पड़ गई तो वह बड़ा होकर माता का मुकाबला करैगा। इस विषय पर उदाहरण आगे दिये जायंगे, असल में माता पिता बहुत सी बातों को छोटा समझ कर ध्यान नहीं देते यह भारी भूल है छोटी ही बातों से बच्चों की आदते बनती हैं, इस वक्त यह आदतें सहज में छुड़ाई जा सकती है यदि ध्यान न दिया गया तो दिन बदिन वह मज़बूत होती जायेंगी। सूत टूट सकता है लेकिन रस्सा नहीं—

९—बच्चों के स्वभाव अनेक प्रकार के होते हैं। बाज़ बच्चे कोमल हृदय रखते हैं और बाज़े बहुत हटीले व कठोर चित्त होते हैं। इनको एक लकड़ी से हाँकना मुनासिब नहीं, कोमल चित्त बच्चे आसानी से संभाले जा सकते हैं और सख्त तबियत बच्चों के साथ सख्ती करना ज़रूरी है, कुछ बच्चे स्वभाव ही से सुस्त होते हैं ऐसों को चुस्त और मुस्तैद बनाने के लिये यत्न करना पड़ता है, माता को चाहिये कि बच्चों के चाल चलन को चुपचाप देखती रहे और जैसा जिसका स्वभाव हो उसी तरह उसको शिक्षा देने की कोशिश करे।

हिदायत देने की बाबत अकसर माता पिता यह प्रश्न करेंगे कि बच्चों को हिदायत किस तरह दी जावे और कैसा

बरताव किया जावे, इसकी बाबत कलम नं० ४ में लिखा जा चुका है कि जैसा बच्चों को बनाना चाहो पहले ख़ुद वैसे बन जाओ बच्चों को नेक बनाने का सबसे सुगम और यक़ीनी उपाय यही है कि ख़ुद नेक बनो, यह कभी ख़्याल नहीं करना चाहिये कि बच्चों को धोका दिया जा सकता है इनकी बुद्धि बहुत तेज़ होती है इस मामले में उनको बच्चा नहीं बल्कि बूढ़ा गुरु समझना चाहिये जिसकी नज़र रात दिन माता पिता के चाल चलन पर रहती है जिस तरह माता पिता छोटेपन में अपने बड़ों से डरते थे उससे भी ज़्यादा उनको बच्चों से डरना चाहिये, बच्चे हर वक़्त माता पिता पर बड़ा ध्यान रखते हैं और जैसा उनको पाते हैं वैसे ख़ुद बन जाते हैं, बच्चों का ख़ास काम ही यह है कि माता पिता के चाल चलन की निगरानी करें इसलिये जिस तरह मुजरिम पुलिस से डरता है उसी तरह अयोग्य कार्यों में माता पिता को बच्चों से डरना चाहिये।

१०—हर कार्य में मन की पवित्रता मुख्य है ईश्वरोपासना से मन पवित्र होता है यदि माता पिता अपने और अपने बच्चों के लिये ईश्वर से विनय किया करें तो बहुत लाभकारी हो, एक आदर्श माता का कथन है कि जब मेरे बच्चे गोद में थे उस समय मुँह धोते और नहलाते वक़्त मैं अपने मन को ईश्वर की तरफ़ लगाती कि वह जगदीश्वर इसी तरह बच्चों के सारे पाप धोवे, जब मैं सुबह को कपड़े पहनाती तो चाहती कि वह इसी तरह उनको नेकी के कपड़े पहनावें जब रोटी खिलाती तो प्रार्थना करती कि भगवान उनको जीवन की रोटी बख्शे, जब बच्चे मदरसे जाते तो मैं चाहती कि ईश्वर बाहर भीतर हर जगह उनके साथ रहे और जब मैं रात को सुलाती तो मेरी प्रार्थना

होती कि तमाम रात मेरे बच्चे कुशल क्षेम से उस जगदीश्वर की गोद में हिफ़ज़त से सोवें।

यदि हर माता पिता ऐसा किया करें तो इसमें संदेह नहीं कि उनकी सन्तान अवश्य नेक होगी और अपने जीवन में संसार में नेकी फैलायेगी।

शरीर रक्षा

बच्चों के शरीर की चिन्ता मुख्य है रोगी बालक बड़ा होकर संसार में कुछ नहीं कर सकता, सब माता पिता यह चाहते हैं कि हमारी औलाद तनदुरुस्त रहे परन्तु तनदुरुस्त रहने के जो क़ायदे हैं उन पर ध्यान नहीं दिया जाता यदि पति चाहते भी हैं तो बेचारों की अपनी मूर्खा स्त्रियों के सामने कुछ नहीं चलती और औलाद का मुफ़्त में नुक़सान होता है इस वास्ते माताओं की सेवा में ख़ास तौर पर निवेदन है कि इस विषय को पूरे ध्यान के साथ पढ़ें और अपने पतियों की आज्ञा मानें उनका और उनकी सन्तान का कल्याण होगा।

हमारे यहाँ स्त्रियाँ बिलकुल अनपढ़ होती हैं जिनको कि मर्दुमशुमारी में पढ़ा हुआ गिना गया है उनकी पढ़ाई भी टूटे फूटे शब्दों में बुरी भली चिट्ठी पत्री लिख लेने और अटक अटक कर पढ़ लेने ही तक है और ऐसी स्त्रियाँ तो हिन्दुस्तान में मुशकिल से सौ में दो निकलेंगी जिनको असल में पढ़ा लिखा कहा जा सके यही कारण है कि भूत प्रेत की बीमारी फैली हुई है और यह इतना नुक़सान कर रही है कि जितना प्लेग और लाल बुख़ार की बीमारियों से भी न हुआ होगा। मूर्ख स्त्रियों का विश्वास है कि भूत प्रेत बीमारी पैदा करते हैं, इसका इलाज गण्डा तावीज या झाड़ा फूंकी है, नतीजा यह होता है

कि बीमारी का कारण न जान कर इलाज न कराने से बीमारी बढ़ जाती है और बच्चा जाता रहता है वे यह नहीं समझतीं कि "मनसा डायन शंका भूत' बच्चा रोता है तो मायें "हव्वा" "हव्वा" कह कर उसको डरा देती हैं "हव्वा" कोई चीज़ नहीं इसी तरह उन्हें सोचना चाहिये कि भूत प्रेत भी उनके मन ने मान लिये हैं असल में कोई चीज़ नहीं।

बीमारी और तन्दुरुस्ती हवा (१) पानी (२) और खुराक (३) पर निर्भर है इन्ही के बिगड़ने से बीमारी होती है और इन्हीं के सुधार से तन्दुरुस्ती आती है, यह ख़ास बातें हैं इसलिये इनपर अलग थोड़ा थोड़ा लिखा जाता है ताकि मातायें अच्छी तरह समझ सकें।

हवा (वायु)

किसी कवि ने क्या अच्छा कहा है :—

क़यामे जिस्म खाकी है नफस पर,
हवा पर है बिना इसके मकां की।

हवा जीवन का आधार है, खाने और पीने के वग़ैर मनुष्य २-४ दिन जी भी सकता है लेकिन हवा बिना एक मिनट भी नहीं रह सकता, यदि हवा साफ़ न होगी तो तरह तरह की बीमारियाँ होकर जीवन नष्ट हो जायगा, हवा में ख़ास चीज़ें "आक्सीजन" और नायट्रोजन होती है, मामूली हवा १०० हिस्से हो तो उसमें २० हिस्से आोकसीजन और क़रीब ८० हिस्से "नायट्रोजन' होता है, आोकसीजन बहुत तेज़ गेस है उसमें साँस नहीं ले सकते इसलिये उसमें ईश्वर ने नायट्रोजन मिलाकर हल्का कर दिया जिससे आसानी से साँस ली जा

सके, यह ओकसीजन ही तन्दुरुस्ती क़ायम रखने और बल बढ़ाने वाला है, शरीर के भीतर एक माद्दा "कारबन" है जब साँस भीतर लेते हैं तो ओकसीजन कारबन से मिलकर ज़हर हो जाता है जिसको "कारबोलिक एसिड गेस" कहते हैं जो साँस बाहर निकलती है उसमें यही "कारबोलिक गेस" होता है जो ज़हर है इस वास्ते यह बहुत ज़रूरी बात है कि जो साँस बाहर निकलता हैं फिर साँस लेने में भीतर न जाने पाये और हर साँस के वास्ते ताज़ा हवा मिले, निकला हुआ साँस गरम होने से ऊपर को उठता है उसके निकलने के लिये ऊपर कमरे में रोशन्दान होने चाहियें अगर उसे ऊपर निकलने को रास्ता न मिलेगा तो फिर नीचे आकर साँस के साथ पेट में जायगा इस तरह "कारबोलिक गेस" की मिक़दार बढ़ती जायेगी और कोई बीमारी पैदा कर देगी क्योंकि जहाँ हवा में ७ हिस्से "कारबोलिक" हुआ तो वह हवा ज़हर के बराबर है अब मातायें गौर करें कि तन्दुरुस्ती क़ायम रखने को साफ़ हवा की कितनी ज़रूरत है इस विषय में नीचे लिखी हिदायतें याद रखना चाहिये ।

१—तंग कमरे में मत सोवो कि जिस में हवा के आने जाने के लिये खूब गुनजायश न हो ।

२—जाड़ों में मुँह ढाक कर कभी मत सोवो वरना रजाई में साँस बार बार भीतर जाकर जहर हो जायेगी बच्चों को शुरू से ही यह आदत डालो ।

३—तंग कमरे में बहुत से आदमी मत सोवो ।

४—चिराग़, आग या कोयले के जलाने से भी यह गैस पैदा होती है इसलिये यह काम कमरे के बाहर करो, चिराग

को कमरे में ऐसे रूख पर रक्खो कि उस की हवा तुम्हारे चेहरे तक न आये अलग की अलग बाहर निकल जाये।

५—दिन में नबातात ओकसीजन निकालते है और कारबोलिक गैस खाते हैं लेकिन रात में कारबोलिक निकालते हैं और ओकसीजन खाते हैं इसलिये रात को बागों में फिरना या पेड़ों के नीचे सोना तन्दुरुस्ती को नुकसान करता है।

पानी

हवा के बाद दूसरा नम्बर पानी का है खराब पानी काम में लाने से तरह तरह की बीमारियां हो जाती हैं, पानी में नवां हिस्सा "हाईड्रोजन" होता है और ८ हिस्से "ओकसीजन" पानी अगर ९ सेर हो तो उस में १ सेर "हाई ड्रोजन" होगा और ८ सेर ओकसीजन साफ पानी भी साफ हवा की तरह बहुत ज़रूरी है, दरया, नहर या तालाब के पानी से कुवें बावली का पानी साफ़ होता है लेकिन उन में भी ऊपर से कूड़ा करकट पत्ते वग़ैरा गिर जाते हैं जिस से उन का असर पानी में हो जाता है, हैज़ा बुख़ार वग़ैरा बहुत सी बीमारी पानी के असर से पैदा होती हैं इस बारे में इन बातों का खास तोर पर ख्याल रखना चाहिये।

१—पीने का पानी मिट्टी के बरतनों में रखना चाहिये और बरतनो में हमेशा छानकर पानी भरा जाये और उन को हमेशा ढका हुवा रक्खा जाये।

२—रात में भी हमेशा मिट्टी के घड़े का पानी पिया जाये अक्सर सोते वक्त पीतल या तांबे के लोटों में पानी भर कर

रख लेते हैं यह भी अच्छा नहीं क्योंकि इस तरह पानी गर्म भी हो जाता है और देर तक पानी भरा रहने से पीतल व तांबे का असर भी पानी में आजाता है।

३—बरसात में पानी बारिश से आम तौर पर ख़राब हो जाता है इसलिये बच्चों को गर्म करके ठंडा किया हुआ पानी पिलाया जाये तो कभी नुक़सान नहीं होगा।

४—पानी बदबूदार या मैला हो तो भी पानी गर्म करके पीना चाहिये।

५—नई जगह अगर पानी फिलटर करके पिया जाय तो पानी का असर कभी नहीं होता।

ग़िज़ा

यह विषय बहुत बड़ा है, बिस्तार से वैदिक पुस्तकों में देखना चाहिये, यहां वे ख़ास ख़ास हिदायतें लिखी जाती हैं जिनका जानना माताओं को बच्चों के परवरिश करने में बहुत ज़रूरी है।

१—खाना जितना अच्छा हज़म होगा उतना ही फायदा करेगा, सादा खाना जल्दी हज़म हो जाता है, घी दूध वग़ैरा बच्चों को उतना ही खिलाया जाये जितना वे आसानी से हज़म कर सकें, मूर्ख मातायें खूब दूध घी खिलाने में लाड़ समझती हैं इस से बच्चों की पाचन शक्ति बिगड़ जाती है।

२—बच्चों को खाना खिलाने या दूध पिलाने के समय मुकर्रर कर लेना चाहिये इस से सच्ची भूक लगती है और खाना अच्छी तरह हज़म हो जाता है, बार बार खिलाना बच्चों की तन्दुरुस्ती बिगाड़ना है, याद रक्खो हर चीज़ को आराम की ज़रूरत होती है अगर किसी से बराबर काम

लिया जावेगा और आराम न मिलेगा तो वह जल्दी बिगड़ जायेगी, बार बार खिलाने से मेदे को आराम बिलकुल नहीं मिलता और वह जल्दी ख़राब हो जाता है।

३—बहुत भोजन अमृत हो तो भी ज़हर हो जाता है अच्छी चीज़ को बच्चे ज़्यादा खा जाते हैं जिस से बदहज़मी हो जाती है मातायें इस बात का पूरा ध्यान रक्खें कि बच्चे हर एक चीज़ पतदाल के साथ खायें।

४—कच्चे या सड़े हुये फल या बासी खाना बच्चों को कभी न खाने दिया जाये वह बीमारी पैदा करता है।

५—रात को सोने से कम से कम दो घन्टे पहले बच्चों को खाना खिला देना चाहिये, खाने के बाद बच्चे फ़ौरन सो न जायें, ताक़त के माफिक टहले ताकि खाना अच्छी तरह तहलील हो जाये।

६—खाने के बर्तन साफ हों खाने पर मक्खी न बैठने पाये, मक्खियां खाने पर बैठ कर उसे ख़राब कर देती हैं और कई तरह की बीमारी पैदा करती हैं।

७—बच्चों की शुरू से ही आदत डाली जाये कि खाना खूब चबा चबा कर खाया करें, बग़ैर अच्छी तरह चबाये खाने से दांतो का काम आंतों को करना पड़ता है और हाज़मा जल्दी ख़राब हो जाता है।

८—खाते वक्त बच्चों की तबियत खुश रक्खो वरना खाना नुक़-सान करेगा, अगर बच्चा रो रहा हो तो जब तक उसकी तबयत खुश न हो जाये खाना मत दो।

९—खाना खाने के बीच में या पीछे ज़्यादा पानी पीना बुरा है, खाना पेट में पहुँचते ही पाचन शक्ति से पकने लगता है

नाफरमाना का शिकायत किया करते हैं लेकिन यह उन्हीं का दोष है यदि वे शुरू ही से बच्चे को आज्ञा पालन सिखाते तो वह कभी नाफ़रमानी न करता बच्चे ठीक वैसेही होते हैं जैसा माता पिता उनको बनाते हैं, आमतौर पर सब बच्चे शुरू में ज़िद्दी होते हैं शुरू ही से उनकी ज़िद कम करना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं किया जाता और उनको शीर ख़्वारी के ज़माने से ही मन चाहा काम करने दिया जाता है इस तरह वे दिन बदिन ज़िद्दी होते जाते हैं।

बाज़ माता पिता अयोग्य लाड़ प्यार से ऐसे अंधे हो जाते हैं कि उनको अपने बच्चों में कोई ऐब ही नज़र नहीं आता। जब बच्चा सज़ा के लायक कोई काम करता है तो यह कहकर टाल देते हैं कि " बच्चा " है बड़े होने पर समझ जायेगा या उस का इल्ज़ाम माँ बहन या किसी नौकर चाकर पर लगा देते हैं—ऐसे माता पिता को अंत में, खुद दुख उठाना पड़ता है और अपने किये की सज़ा पाते हैं। बल्कि वे ही बच्चे जब बड़े होकर समझने लायक होते हैं तो माता पिता का अहसान मानने या प्यार करने के वजाय नफ़रत की नज़र से देखने लगते हैं क्योंकि अब उनको समझ आती है कि यदि माता पिता बेजा लाड़ न करके शुरू से ही उनकी ज़िद्द की आदत को रोकते तो वे बहुतेरी बुराईयों से बच जाते यह ख़्याल तो बाज़ बाज़ का बड़े होने पर होता है लेकिन छोटे बच्चे भी माता पिता के बेजा लाड़ अर्थात् मूर्खता का फ़ौरन लाभ उठाने लगते हैं और सच्चे दिल से उनकी इज्ज़त नहीं करते, बाज़ ऐसे माता पिता भी देखे हैं कि जिन को अपने बच्चों को ऊंची से ऊंची शिक्षा दिलाने का ख्याल रहा खुद हज़ार तकलीफ़ें सह-कर उनको पढ़ाया लिखाया डिगरियाँ पास कराई परन्तु वे

लड़के भी अख़लाकी हालत में सख़्त नालायक साबित हुय और बेचारे माँ बापों का बुढ़ापा रोते रोते ही ख़तम हुआ कारण यह कि उन्होंने बच्चों की और किसी आदत की तरफ़ ध्यान नहीं दिया उनका उद्देश यह था कि लड़का एम. ए. बी. ए. हो जायें सो हो गये वे उन को हर इम्तहान में दर्जे चढ़ते देख कर खुश होते रहे और और बातों में उन की ज़िद रखते रहे नतीजा यह हुआ कि आला तालीम भी उन की बचपन की बुराईयों को न छुड़ा सकी ना फरमानी उन सब बुराइयों की जड़ है।

अब हम नीचे मिसालें देकर बतलाते हैं कि माता पिता अपने बच्चों को ना फ़रमानी कैसे सिखाते हैं, मिसालों से यह बात अच्छी तरह ख्याल में आजायेगी।

१—एक औरत ने अपने बच्चे को पुकारा "गोपाल तू बड़ा लुच्चा है जल्दी आ नहीं तो मारूंगी"—गोपाल जानता था कि वह नहीं मारेगी उसने कुछ ध्यान न दिया और बाहर खेलने चला गया, दूसरी समझदार पड़ोसन ने उस औरत से पूछा कि बहन जब तुम्हें उसे मारना न था तो मारने की धमकी क्यों दी; औरत बोली वह मेरी सुन्ता ही नहीं उसे डराने के वास्ते मारने को कह देती हूं, पड़ोसन ने कहा जब तो तुम्ही ने उसे यह सिखाया है कि तुम्हारे कहने का कुछ मतलब नहीं चाहे वह बात सुने या न सुने। औरत ने कहा " क्या करुं वह मेरे बस में नहीं आता, मैं तो यह चाहती हूं कि वह मदरसे जाये जब मदरसे भेजती हूं तो सड़क पर खेलने लगता है मेरा नाको दम है यह आज कल के छोरे ऐसे नट खट हो गये हैं कि किसी का कहना ही नहीं मानते अपने मन की करते हैं " पड़ोसन ने जवाब दिया " जब तुम उन्हें अपने मन की करने देती हो

तो फिर वह क्यों न करें अगर तुम ने उसे मारा होता तो वह डरता वह जानता है कि यह यों ही बकती है।

२—एक दिन जमना अपनी सहेली दुर्गा के घर गई उन में इस तरह बातचीत हुई :—

जमना—क्यों बहन दुर्गा, गोबिन्द तो अच्छा है।

दुर्गा—(हँसकर) हाँ अच्छा है लेकिन बड़ा शरीर हो गया है, तुम ने ऐसा आवारा लड़का भी न देखा होगा मेरी एक नहीं मानता।

जमना—ऐसा क्यों, गोविन्द ज़िद्दी तो नहीं मालूम होता।

दुर्गा—नहीं उसका मिज़ाज तो ख़राब नहीं है लेकिन उधम बहुत मचाता है मेरे रोके नहीं रुकता वह जानता है कि कांच के बरतन नहीं छूना चाहिये, अभी तुम्हारे आने से थोड़ी देर पहले वह भीतर गया और एक रकाबी पर उँगली रखदी और मेरी तरफ़ देखने लगा, मैं चिल्लाई तो उँगली नहीं उठाई और दोनों हाथ बरतन में रख दिये, जब मैं मारने को गई तो हँसकर भाग गया, ऐसा शरीर है और मुझे इस तरह चिड़ाता और दिक़ करता है"

गोविन्द भी बाहर खड़ा खड़ा यह बातें सुन रहा था उसने इन बातों में अपनी तारीफ़ सुनी फ़ौरन घर में आया जमना ने प्यार से गोद में बिठा लिया और यह कहकर प्यार करने लगी "तू बड़ा बदमाश हो गया है अपनी माँ को दिक़ किया करता है" दुर्गा उसको देख देख हँसती रही, इस तरह बच्चे को ना फ़रमानी का ऐसा सबक मिला जिसे वह कभी नहीं भूल सका मूर्ख मातायें इस तरह बच्चों के ऐबों पर हँसकर उन्हें बिगाड़ती हैं—

ऐसे मूर्ख और शरीर माता पिता भी होते हैं जो अपनी हँसी दिल्लगी के लिये बच्चों को गाली देना और मारना सिखाते हैं।

३—एक माँ पकाने के लिये चाँवल धो रही थी बाप ने बच्चे से कहा " बेटा अपनी माँ से कहो तू गधी यहां क्यों आई है जा अपने बाप के घर बच्चे ने तोतली बोली में अपने बाप के हुक्म की तामील की। माँ ने हँसकर कहा " बेटा जा अपने बाप के एक चपत लगादे" । यह सुनते ही बच्चा हँसता हँसता गया और अब्बा जानकी खोपड़ी में एक चपत जड़ दिया, ऐसे माता पिता उन पागलों की तरह हैं जो अपने चारों तरफ़ आग जलाकर कहें "अहा हा! कैसा अच्छा तमाशा है, यह लोग अपनी बेहूदा तफ़रीह की ख़ातिर बच्चों का बड़ा भारी नुकसान करते हैं अंत में इन को रो रो कर जान देना पड़ेगी और जिन्दगी भर अपनी करनी पर पछताते रहेंगे, बच्चों की आदत बीमारी में अकसर बिगड़ जाती है माता पिता बीमारी के ख्याल से उनकी ज़िद पूरी कर देते हैं लेकिन इस का नतीजा अच्छा नहीं होता बच्चा आख़िरकार ना फ़रमांबरदार हो जाता है—

एक बच्चा बीमार है, माँ दवा लेकर बच्चे के पास आई उन में इस तरह बात चीत हुई :—

माँ—बेटा तेरे वास्ते यह दवा डाक्टर जीं ने दी है।

बेटा—मैं नहीं पीता।

माँ—नहीं बेटा, पीले तेरी बीमारी मिट जायेगी।

बेटा—इससे कुछ नहीं होगा, मैं नहीं पियूँगा।

माँ—नहीं बेटा, डाक्टर जी ने कहा है इससे तेरा बुख़ार उतर जायेगा।

बेटा—नहीं यह कड़वी है मैं नहीं पीता।

माता ने जब देखा कि उसके कहने से बच्चा दवा नहीं पीता और उसमें ज़बरदस्ती पिलाने की हिम्मत नहीं तो उस ने दवा फेंक दी, जब डाक्टर ने आकर देखा तो माँ ने इस शर्म से कि बच्चे ने उस का कहना नहीं माना डाक्टर से यह नहीं कहा कि बच्चे ने दवा नहीं पी, डाक्टर ने बच्चे की हालत ज्यादा खराब देखकर और यह ख्याल करके कि पहली दवा ने फ़ायदा नहीं किया दूसरा नुसख़ा बदला लेकिन लड़के ने उसके पीने से भी इनकार कर दिया और झूठी मोहब्बत करने वाले माता पिता ने पहले दिन की तरह उस दवा को भी फेंक दिया, बुख़ार बे रोक टोक बढ़ता गया, जब दुबारा डाक्टर ने आकर देखा कि उसके नुसखों से कुछ फायदा न हुआ उसे बड़ा अचंभा हुआ लेकिन बच्चे की हालत बहुत ख़राब थी आख़िर जब माँ ने जाना कि बच्चा मरने वाला है रोने पीटने लगी और दवा न देना मंजूर किया, बच्चा जाता रहा यदि माता पिता उस वक्त सख़्त दिल करके दवा दे देते तो पछतावा न रहता।

बड़े लोगों या अमीरों और रईसों के बच्चे ज्यादा तर बिगड़ जाते हैं और यही हाल इकलौते बच्चों का होता है, मूर्ख माता पिता लाड़ प्यार के अंधे उन से कुछ नहीं कहते और खुशामदी ख़िदमतगार नौकर बच्चे की ज़िद और भी बढ़ाते हैं मैंने खुद बहुत से जागीरदारों को देखा कि वे कुँवर साहब की ज़िद को रईसाना शान समझते हैं और जब उनके नौकर चाकर कुँवर साहब के हटीली गुण अर्ज़ करते हैं तो सुन सुन कर खुश होते

हैं, कुँवर साहब के सर में दर्द हो गया या खेलते कूदते ज़रा चोट आ गई तो तीन रोज़ पढ़ना तक बन्द कर दिया गया अब कुँवर साहब जो ज़िद करेंगे पूरी की जायेगी क्योंकि पहले तो कुंवर साहब दूसरे बालक या बीमार फिर और क्या बहाना चाहिये, माना कि जिमीदारों या रईसों को बेटों की कमाई नहीं खाना है लेकिन एक दिन शान्ति के साथ मरना तो है क्या नालायक कुंवर साहब उनको चैन से मरने देंगे ? कदापि नहीं माता पिता को सोचना चाहिये कि नालायक औलाद से बे औलाद के रहना अच्छा है, जिस ईश्वर ने उन्हें इकलौता लड़का दिया है तो लायक सन्तान बनाने को दिया है नालायक बनाने को नहीं यदि वह नालायक निकलेगा तो माता पिता ईश्वर और संसार दोनों के गुनहगार होंगे—

फरमाँबरदारी शुरूही से सिखानी चाहिये अगर इस समय गफ़लत की तो फिर बच्चा कभी न सुधरेगा इस की मिसाल नीचे दी जाती है, " किसी भले घराने में एक औरत नौकर थी, औरत का बच्चा बचपन ही से माँ ने बिगाड़ दिया वह उसे लाड़ प्यार में रखती, बच्चा उसे गालियां देता औरत कुछ न कहती अब ज्यूँ ज्यूँ लड़का बड़ा होता गया उसने माँ को मारना भी शुरु किया, एक रोज़ मालिक ने लड़के की हरकतें देख कर औरत से कहा "तू इसको मारा कर यह बिगड़ा जाता है, औरत यह कह कर चुप हो गई "मैं उसे कैसे मारूँ बालक है," जब लड़का ९-१० बरस का हुआ तो वह बदमाशों के साथ रहने लगा मालिक ने फिर औरत से कहा कि तू उसे यहां ला मैं उसे नौकर भी रख लूँगा और उसके पढ़ाने लिखाने और दुरुस्त करने का भी इन्तजाम कर दूँगा, औरत उसे कई रोज तक न लाई जब मालिक पूछता तो कुछ न कुछ बहाना कर देती

आख़िर एक रोज़ मालिक ने नाराज़ होकर पूछा कि सच बता तू लड़के को क्यों नहीं लाती तो बोली कि वह नहीं आता असल में अब वह मेरे काबू से बाहर हो गया है, यही हाल ज्यादा तर घरों में देखा जाता है, मातायें पहले बच्चा समझकर बच्चों की ज़िद बढ़ने देती हैं और बच्चा बड़ा होकर बेक़ाबू हो जाता है, इसलिये माता पिता का फ़र्ज़ है कि बच्चों को आज्ञाकारी बनाने का पूरा यत्न करें, इसके बाबत नीचे लिखे नियम लाभकारी होंगे।

१—सबसे पहली बात यह है कि बच्चे से जो कुछ कहा जाय उसको वह फ़ौरन करें यह नहीं कि २-३ बार बच्चे से कहा जाय तब वह काम को उठे नहीं वह एक दफ़े के कहने से ही फ़ौरन करे, जिस तरह सख़्त मिज़ाज मालिक के हुक्म की तामील नौकर फ़ौरन करता है इसी तरह माता पिता के हुक्म की तामील बच्चा करे, अगर नौकर हुक्म न माने तो जो बरताव उसके साथ करोगे वही बच्चे के साथ करो।

२—बच्चे से जिस काम के करने के लिये पहले मना कर दिया है उस काम के करने की कभी इज़ाज़त मत दो।

३—माता पिता दोनों के हुक्म की इकसां तामील हो, अकसर मूर्ख मातायें बच्चे से ऐसा काम करने के लिये कह देती हैं जिस को वह नहीं कर सकता है इस तरह माँ का डर बच्चे की तबियत से जाता रहता है और फिर वह माँ की परवाह नहीं करता और धीरे धीरे माँ की इज़्ज़त बच्चे के दिल से बिलकुल जाती रहती है फिर वह न खुशामद को मानता है और न धमकी से डरता है इसलिये हुक्म देने

से पहले माता पिता को अच्छी तरह सोच लेना चाहिये कि बच्चा उस काम को कर सकेगा या नहीं।

४—जब बच्चा ज़िद करने लगे तो उस की ज़िद फ़ौरन छुड़ा देनी चाहिये यह एक तरह की हार जीत होती है, अगर बच्चा जीत गया तो माता पिता के लिये बच्चे की ज़िद छुड़ाना कठिन ही नहीं बल्कि धीरे धीरे असंभव हो जाता है और बच्चा बिगड़ जाता है और जो पहली दफ़े उस की ज़िद तोड़दी गई तो फिर ज़िद नहीं करता क्योंकि वह जान लेता है कि ज़िद करने में मेरी हार हो चुकी है, एक बाप ने शाम के समय अपने बच्चे को पढ़ने के लिये बुलाया बच्चा अक्षरों को अच्छी तरह पहचानता था परन्तु उस समय उसकी तबयत नहीं थी, जब बाप ने पहला अक्षर पूछा कि यह क्या है तो बच्चा चुप चाप अपनी किताब की तरफ़ देखता रहा और कुछ न बोला, बाप ने खुश होकर कहा " बेटा तुम यह अक्षर "अ" पहचानते हो, बच्चे ने कहा मैं " अ " नहीं कहूंगा, बाप ने कहा तुम्हें कहना पड़ेगा, बच्चे ने जवाब देने से इनकार कर दिया वह हटीला था और उस समय उसे ज़िद थी कि मैं न पढ़ूं, बाप जानता था कि अगर इस वक्त बच्चे की ज़िद रह गई तो यह उसके लिये हानिकारक है उसने उस को सज़ा दी, फिर लौटा और बच्चे से वह अक्षर पूछा, उसने फिर नाम लेने से इनकार कर दिया, बाप ने उस को दूबारा ज़्यादा सज़ा दी लेकिन फिर भी कुछ नतीजा न निकला और बच्चा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा, जब बाप ने कहा कि यह " अ " है तो बोला कि मैं " अ " नहीं कहता बाप ने फिर सख़्त सज़ा दी लेकिन बच्चा हट का पक्का था फिर

भी ये बोला, बाप का दिल पसीज गया लेकिन वह जानता था कि यह वक्त इस सवाल के तै होने का है कि जीत किस की रहनी चाहिये, माँ पास बैठी बैठी कुढ़ रही थी लेकिन इस ख्याल से कुछ न बोली कि इस मार में बच्चे की भलाई है, बाप ने बड़े दुख के साथ फिर बच्चे का हाथ पकड़ा और सज़ा देने का इरादा किया इस दफ़े बच्चा घबरा कर बोल उठा मैं अक्षर बता दूँगा ", बाप को बड़ी खुशी हुई और उसने किताब हाथ में लेकर अक्षर की तरफ़ इशारा किया, बच्चा साफ़ तौर पर बोला " अ " बाप ने कहा अच्छा अब किताब अपनी माँ के पास लेजावो और उसे बताओ यह क्या अक्षर है, माँ ने पूछा बेटा यह क्या है, बच्चा बोला " अ " बच्चा इस वक्त पूरे तौर पर दब गया और दूसरे छोटे बच्चों ने भी जो वहाँ बैठे थे देख लिया कि किस की बात रही, बच्चा तो यह सबक़ अच्छी तरह सीख गया कि कहना मानने में ही भलाई है, शायद मूर्ख माता पिता यह कहें कि छोटे बच्चे को इतना सख़्त मारना बेरहमी है तो यह उन की भूल है उस वक्त उसके साथ सच्चा प्रेम और सच्ची दया यही थी कि उसको मारा जाता यदि माता पिता उस समय उसे न मारते तो बड़ी बेरहमी करते क्योंकि उस वक्त बच्चे की ज़िद रह जाती तो माता पिता सदा दुख पाते और बच्चे की जिन्दगी ख़राब हो जाती, अलबत्ता यह कोशिश ज़रूर करना चाहिये कि बच्चे की ज़िद करने का मौका ही टाल दिया जाय अगर ऐसा न हो सके तो बच्चे की ज़िद फ़ौरन छुड़ाई जाये।

५—बीमार बच्चे की ज़िद भी कभी न रखना चाहिये बीमारी को भी कभी ज़िद करने का बहाना मत मानो।

६—अकसर बच्चों में हुज्जत करने की आदत पड़जाती है और माता पिता इस को अच्छा समझते हैं कि लड़का तेज़ तबियत है लेकिन ज्यादा तर ऐसे बच्चे बड़े होकर नाफ़रमाँबरदार हो जाते हैं क्योंकि दलील बाजी बचपन से ही माता पिता का रोब उनके दिल से हटा देती है, इसलिये याद रखना चाहिये कि बच्चों से तामील कराने में दलील करने या बहलाने की ज़रूरत न पड़े जब किसी काम को कहा जाय तो उसका सबब दर्याफ़त करने को न ठहरें, बड़े बच्चे को अगर उसका सबब समझा दिया जाय तो कुछ हर्ज नहीं लेकिन छोटे बच्चों का सिर्फ़ यह काम है कि जो कहा जाये वह करें, ज्यादा तेज़ तबियत छोटा बच्चा अगर सबब जानने की इच्छा रक्खे तो तामील करने के बाद बताया जाये पहले नहीं वरना माता पिता के रोब में फ़र्क़ पड़ेगा।

७—लालच या धमकी से हरगिज़ काम न लिया जाये, बाज़ दफ़े माता पिता मिठाई या खिलोने का लालच देकर काम कराते हैं, उनके बच्चे उन से पूछते हैं कि हम यह काम करेंगे तो हमें क्या दोगे या अकसर बच्चे उस वक़्त तक काम नहीं करते जब तक कि माता पिता उन्हें मारने को न उठने लगें यह दोनों ही सूरतें नहीं होना चाहिये।

८—अकसर बच्चे खुशी से काम नहीं करते इसका असल सबब यह होता है कि उनको माता पिता पर पूर्ण विश्वास नहीं होता यह माता पिता का दोष है कि वे अपने बच्चों के दिल में अपनी इज्जत क़ायम न कर सकें, बच्चों के दिल में माता पिता की तरफ़ ऐसा भाव होना चाहिये कि वे उनके काम को खुशी और मुस्तैदी से करें कभी मूँह बनाकर या बे दिली से न करें।

६—पहले लिखा जा चुका है कि माता पिता दोनों के हुक्म की तामील एकसा होनी चाहिये, बच्चे अकसर बाप से तो डरते हैं कि पिटेंगे लेकिन माँ के कहने की परवाह नहीं करते, बे अदब लड़के अक़सर माँ से कह देते हैं " तुम औरत हो, क्या जानो चुप रहो ", इस में माँ का ही क़सूर होता है कि उसने बच्चे का बेजा लाड़ करके उस की कहना न मानने की आदत डालदी ऐसी सूरत में पिता को कोशिश करना चाहिये कि अगर माँ का कहना न माने तो उसे सज़ादे मां को यह कहने की या धमकी देने की ज़रूरत न रहे कि मैं तेरे बाप से कहूंगी, बच्चों के दिल में माता की इज्ज़त न होने का असली कारण पति पत्नी में प्रेम भाव का अभाव है स्त्री पुरुष में रात दिन नाइत्तफ़ाक़ी रहती है जिस से बच्चों में माता पिता दोनों की इज्ज़त जाती रहती है पिता से तो फिर भी डरते है लेकिन माता की कुछ परवाह नहीं करते। किसी संस्कृत कवि ने कहा है उसका अनुवाद वर्ण घनाक्षरी कवित्त में इस तरह है :—

१६ १—जाकी चातुरी को पेख चानक हू चक्र खात, ३१
१५ काम पड़े पंडित सों मन्त्र को सुनात है,
१
१६ २—हुकुम उठावन में सेवा दिखलावन में, ३१
१५ देख जाहे हनुमान मन सकुचात है,
२
१६ ३—भोजन बनात नीको द्रोपदी को मात करे, ३१
३
१५ धीरज के धारन में धरा को लजात है,
४

१६ { ४—पति को दिखात कला रम्भा को लखात नीची } ३१
५
१५ { धर्म वारी ऐसी नारी कहूँ कोऊ पात है,
६

एक समय था कि हमारे यहाँ सब ही स्त्रियों में यह गुण होते थे लेकिन अविद्या ने नाश कर दिया कि कवि लोग यह लालसा करने लगे, माताओं से विनय पूर्वक प्रार्थना है कि वे अपने धर्म को समझ कर पतियों के साथ प्रेम भाव से रहें तो सन्तान भी न बिगड़े और घर स्वर्ग धाम हो जाये।

१०—बच्चा जब ज़ोर से रो रहा हो तो इकदम चुप होने के लिये कभी न कहो क्योंकि इकदम चुप हो नहीं सकता धीरे धीरे ज्यूँ ज्यूँ उसका गुस्सा शांत होगा चुप होता जायेगा, उसका रोना व्यर्थ हो तो लापरवाह हो जाना चाहिये ताकि बच्चा समझ ले कि मेरे रोने से कुछ लाभ नहीं हुआ।

११—यह आदत जैसी माता पिता के सामने हो वैसी ही उन की गैर हाज़री में होनी चाहिये, अगर बच्चों से किसी चीज़ से न खेलने या कोई चीज़ न छूने को कह दिया जाये तो वे माता पिता के सामने तो कहना मानते हैं लेकिन उन के पीछे उस हुक्म की परवाह नहीं करते, बच्चों को अच्छी तरह समझा देना चाहिये कि जिस काम के करने को मने कर दिया जाये उस को उनके पीछे भी कभी न करें।

माता पिता का फ़र्ज है कि खुद धर्म के नियमों की पूरे तौर पर पाबन्दी करें बच्चे अपने आप उनकी देखा देखी पाबन्द हो जायेंगे।

अंगरेज़ लोग कभी अपने बच्चों का ऐसा लाड़ प्यार नहीं

करते; एक दफ़े कप्तान टाई साहब के साथ मेरे पूज्य पिताजी को कुछ अरसे तक रहने का इत्तफ़ाक़ हुआ, एक दिन पिता जी कप्तान साहब के पास गये उन की ३-४ साला छोटी लड़की उनके पास खेल रही थी उसने पिता जी को सलाम नहीं किया कप्तान साहब के कहने पर भी उसने ख्याल न किया और खेलती रही इस पर नाराज़ होकर उन्होंने ज़रा सी बच्ची को इतना मारा कि उसके नन्हे नन्हे गाल लाल हो गये, बड़ी मुशकिल से पिता जी ने छुड़ाया और कहा कि बच्चा है खेल में ध्यान था आप माफ़ कीजिये, तो कप्तान साहब ने फ़रमाया कि अगर अभी से इसकी नाफ़रमानी की आदत पड़ जायेगी तो बड़ी होकर यह बड़ी गुस्ताख़ और बेअदब निकलेगी उस वक्त हम या मेम साहब कुछ नहीं कर सकेंगे, वगेरा, मतलब यह कि साहब बहादुर का गुस्सा उस वक्त तक ठंडा न हुआ जब तक उन्होंने दाया को बुलाकर उस की लापरवाही के लिये बुरा भला न कह लिया, यह अताअत और अदब सिखाने की अच्छी मिसाल है सच है "बेअदब वे नसीब-बाअदब बा नसीब" कहाँ इन लोगों का यह अमली ख्याल और कहाँ हमारे लाड़ प्यार का ऐसा बुरा हाल।

माता पिता ध्यान दें।

सफ़ाई

हर विचार की जड़ मन में रहती है, मन सर चशमा है जिसमें से बुरे भले हर तरह के ख़याल निकलते हैं ईसी वास्ते शास्त्रों में लिखा है कि मन वचन और कर्म से शुद्ध रहो— नीचे तीनों तरह की शुद्धता पर थोड़ा बहुत लिखा जाता है जिस पर बच्चों की परवरिश में ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।

१-मनसा—कर्म पहली कोशिश यह होना चाहिये कि बच्चों की तबियत में कोई बुरा ख़्याल पैदा न होने पावे अगर ऐसा हो जाये तो फिर किसी न किसी समय वह ज़ुरूर उसे कर गुज़रेगा मनसा पाप सबसे बड़ा पाप है। जिसका मन पवित्र है वह ही असल में पवित्र है, किसी के साथ बुराई करना या किसी को बुरा कहना इतना बुरा नहीं जितना किसी के लिये बुरा सोचना है बुराई सोचने वाला अपने मनसे बुरा हो चुका यह दूसरी बात है कि वह मजबूरी से बुरा न कर सके, ईश्वर की नज़र में तो वह पाप का भागी हो गया, आत्मा एक सूक्ष्म वस्तु है और जो चीज़ जैसी होती है उस पर वैसी ही चीज़ का प्रभाव जलदी और गहरा पड़ता है, मतलब यह कि मनसा पाप सूक्ष्म कर्म है इसको मामूली समझलेना और इसकी परवाह न करना सारी बुराइयों की जड़ है, आजकल यह आम कहावत सुनने में आती है कि कलयुग में मनसा पाप नहीं लगता इस ग़लत ख्याल ने और भी पाप कर्म बढ़ा दिया। चाहे कोई सा युग या समय हो कर्म का नियम अटल है। ऐसे लोगों को अच्छी तरह याद रखना चाहिये कि "कलयुग नहीं करयुग है यह जो दिन को दे वह रात ले। क्या खूब सौदा नक़्द है इस हात दे उस हात ले" ॥ माता पिता का फ़र्ज़ है कि वह अपने बच्चों को मनका पवित्र बनायें।

२—बचन कर्म दूसरे दर्जे पर बचन कर्म है और इससे बच्चों के सुधार में ऐसी ख़राबी पैदा हो रही है कि जिसका हद हिसाब नहीं।

१—अच्छे अच्छे पढ़े लिखे आदमियों की ज़बान पर बाज़ ऐसे बुरे शब्द चढ़ जाते है कि जिनको सुन कर अफ़सोस होता

है कि हम लोग अपनी अख़लाक़ी हालत में किस कद्र गिर गये हैं। वे लोग भी अगर उन शब्दों के अर्थ विचारें तो ख़ुद अपनी आदत पर रंज करें परन्तु उनको इनके बोलते हुये ख़याल ही नहीं होता कि वे क्या बोल रहे हैं। ऐसी आदत माता पिता को पूरी कोशिश करके छोड़ना चाहिये क्योंकि माता पिता या संगी साथियों की देखा देखी बच्चे भी ऐसे शब्द बोलने लगते हैं जब तक माता पिता ख़ुद इस आदत को नहीं छोड़ेंगे बच्चों को नहीं छुड़ा सकते।

२—विवाह या ख़ुशी के मौक़ों पर अब तक भी बाज़ कौमों में गाली गाने का रिवाज है इसका असर सुनने वालों पर अच्छा नहीं पड़ता, छोटी लड़कियों या लड़कों की तबीयत पर तो इसका बहुत ही बुरा असर पड़ता है। अफ़सोस उन माताओं पर है जो अपनी ख़ुशी के लिये जान बूझ कर अपने बच्चों को बद चलन बनाते हैं यह ऐसा बुरा रिवाज है कि इस पर जितना दुख किया जाये कम है। और सूबों में तो यह करीब करीब बन्द हो गया है लेकिन राजपूताने बुँदेलखंड और बघेलखंड में यह बला इस ज़ोर के साथ फैली हुई है जिस तरह इनफ्लूऐनज़ा १९१८ कार्तिक के पहले हफ़्ते में पूरे ज़ोर शोर पर था, राजपूताने में सिवाय पर्दा रखने वाली कौमों के ऊंची ऊंची कौमों तक में गाली गाने का आम रिवाज हो रहा है यहां तक कि बाज़ार में भी गाली गाती हुई निकलती हैं इस तरह जो पर्दा रखने वाले हैं वे भी इस रिवाज के बुरे असर से नहीं बच सकते इसलिये राजपूताने की माताओं से खास तौर पर प्रार्थना है कि इसके नतीजे पर ध्यान दें और इस रिवाज को इकदम बन्द करें ज़्यादा क्या लिखा जाये राजपूताने

की जातों के समझदार आदमियों को इस पर ग़ौर करके अपनी अपनी जाति में इस रिवाज को बन्द करने का पूरा यत्न करना चाहिये।

३—इसी तरह होली के मौक़े पर ख़ुराफ़ात बकना औरतों को गाली देना चलती हुई औरतों को छेड़ना, सब बड़ों छोटों का गन्दे शब्द बोलना वग़ैरा का आम रिवाज हो रहा है। और जगह कम है राजपूताने में ज़्यादा, इन बुराइयों को ज़्यादा खोल कर लिखना भी अयोग्य है सर्व साधारण खुद जानते हैं लोग कहते हैं कि साल भर का त्योहार है अगर एक दिन नाशायस्तगी हो भी जाये तो कुछ हर्ज नहीं उनको याद रखना चाहिये कि बच्चे जो कुछ एक दिन देखेंगे या सुनेंगे उसे साल भर तक नहीं भूल सकते क्योंकि बुराई का असर भलाई से ज़्यादा होता है। साल भर बाद दूसरी होली पर वह असर ताजा हो जाता है इस तरह होली का पवित्र त्योहार बच्चों के बिगाड़ का कारण हो रहा है।

४—तवायेफों (रंडियों) का भी बच्चों के बिगाड़ने में बहुत बड़ा हिस्सा होता है। खुशी के मौक़ों पर जल्से किये जाते हैं। विवाह जैसा पवित्र कार्य्य इनके बग़ैर शोभा नहीं देता, मन्दिरों में श्रीमती मंगला मुखी देवी का आना ज़रूरी है। जल्सों में बच्चों के हाथ से रुपये दिलाये जाते हैं एक बड़े आदमी के लड़के की शादी हुई १५-२० रोज तक रोजाना जल्से होते रहे नतीजा यह हुआ कि एक मंडली जिस में ९-१० लड़के थे बिगड़ गई, इन सब लड़कों ने तालीम छोड़ दी और बदचलनी में पड़ गये, यही हाल देश में चारों तरफ है। माता पिता सोचें और जहां तक हो सके इनकी सूरत भी बच्चों को न देखने दें यह न समझें कि

छोटे बच्चे कुछ नहीं समझते, माता पिता भी किसी समय बच्चे थे अपनी हालत से अंदाज़ा लगाकर बच्चों पर रहम करें।

५—जो बच्चे ऐसे शब्द बोलने के आदी हो गये हैं उनको सख़्त सज़ा देकर यह आदत छुड़ा देनी चाहिये। न यह कि बच्चों के गाली देने पर हँस दें और प्यार करें, एक बुद्धिमान माता ने जब अपने बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो बोली "राम राम—तेरा मुँह कैसा गन्दा हो गया है। ऐसी बात कहने से मुँह गन्दा हो जाता है। आ तेरा मुँह धो दूँ, यह कह कर बच्चे का मुँह धोया और पोछ डाला और प्यार से कहा अब ऐसी बात कभी मत कहना।

कर्म जब बच्चे मन और बचन से शुद्ध होंगे तो अशुद्ध कर्म कभी नहीं करेंगे फिर भी बाज़ बातें ऐसा रिवाज पकड़े हुये हैं कि जिन पर ख़ास तौर पर ध्यान देना ज़रूरी है।

अकसर बच्चों को नंगा रक्खा जाता है। छोटे बच्चों को शुरू से ही आदत डालना चाहिये कि वे हमेशा कपड़े पहने रहें, उनको समझाया जावे कि नंगा रहना वा किसी को नंगा देखना बड़ा पाप है।

लड़के लड़कियों के सोने के और कपड़े बदलने के लिये अलग अलग कमरे होने चाहियें अगर मकान छोटा हो और अलग अलग कमरे न हों तो बीच में परदा डालकर दो हिस्से कर देना चाहिये ताकि बच्चों को शुरू से ही शायस्तगी की आदत पड़ जाये।

नदी और तालाबों पर अकसर एकही घाट पर मर्द औरतें नहाती हैं इनके लिये अलग अलग घाट होने चाहिये अगर न

हों तो अपने बच्चों को कभी ऐसी जगह नहाने को मत भेजो।

तरतीब और पाबन्दी

"हर चीज़ को अपने ठिकाने रक्खो" और "हर काम नियत समय पर करो"

यह दोनो नियम ऐसे ज़रूरी हैं कि जिन के बग़ैर कोई मनुष्य अपने जीवन में सफल मनोर्थ नहीं हो सकता, इन दोनो नियमों पर थोड़ा बहुत नीचे लिखा जाता है आशा है कि माता पिता ध्यान देंगे।

(१) तरतीब

बच्चों की यह आम आदत होती है कि वे अपनी चीज़ों को चाहे जहाँ डाल देते हैं और इस आदत का असली कारण यह है कि वे अपने माता पिता में यह बात नहीं पाते, खास कर मातायें तो आम तौर पर यह भी विचार नहीं करतीं कि इससे क्या लाभ है। जो मातायें तरतीब का ख्याल नहीं रखतीं उनके मकान या कमरे मदारी के टिपारे नजर आते हैं जहां तरतीब नहीं वहाँ सफ़ाई हरगिज नहीं रह सकती और सफ़ाई बग़ैर वह घर नहीं वीराना समझो, चीज़ें इधर उधर पड़े रहने से माता पिता क़रीब क़रीब रोजाना परेशानी और तकलीफ उठाते हैं, इसलिये इनको ख़ुद अपनी दिक़्क़तों का ख्याल करके इस आदत को छोड़ना और नीचे लिखी बातों पर अमल करना चाहिये :—

१—घर की हर चीज़ के लिये जगह मुकर्रर करो और उसको हमेशा उसी जगह रक्खो, जब ज़रूरत के लिये उठावो तो इधर उधर मत डाल दो।

२—बच्चों के खिलौने, कपड़े और किताबें वग़ैरा के लिये अलग अलग जगह मुकर्रर कर दो, और हिदायत करदो कि हमेशा अपनी चीज़ को अपने ठिकाने रक्खें।

३—बच्चों को सिर्फ़ हिदायत करना ही काफ़ी नहीं है इसलिये जब तक तरतीब से हर चीज़ रखने की उनकी आदत न हो जाय बराबर उनकी निगरानी रक्खो लेकिन पहले ख़ुद इस पर पूरे तौर पर अमल करो।

(२) समय की पाबन्दी

हर काम का समय मुकर्रर कर लेना और उस काम को उसी समय पर करनाबहुत ज़रूरी है। इसके बग़ैर जीवन व्यर्थ चले जाते हैं। यदि किसी से यह कहा जाये कि तुम्हारी आयु के १० साल घटा दिये गये हैं तो उसको मर्नान्त कष्ट होगा परन्तु बिना काम उमरें गुज़र जातीं हैं और ख़्याल तक नहीं होता कि हमने अपने जीवन में क्या काम किया यही कारण है कि हम उन्नति नहीं कर कसते, संसार में वही जीवन सुफल है जिसने आर्थिक या परमार्थिक काम किया, बग़ैर काम जो जिया उसने झक मारा, हमारी सूसायेटी ही इतनी बिगड़ गई है कि अगर कोई समय की पाबन्दी का ज़िक्र करे तो उस पर हँसते हैं लेकिन कितने अफ़सोस की बात है कि जो चीज़ जाकर फिर नहीं आ सकती उसको इस तरह बरबाद किया जाता है। "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं" सुबह होती है शाम होती है, उम्र योंही तमाम होती है—नसीम-एक अंगरेज़ी मसला है कि समय उस मनुष्य की तरह है जिसके सिर में आगे की तरफ़ बाल हैं और पीछे गंज है अगर आगे से पकड़ लोगे तो तुम्हारा है वरना फिर हाथ नहीं आ सकता इसलिये

वही समय अपना समझो जिसमें कुछ काम कर लिया, संसार में वह मनुष्य बड़े हुये हैं जिन ने समय को आगे से पकड़ा, अंगरेज़ महाशय समय के बड़े पाबन्द होते हैं। सच है जब हमारी तरह वे अपने समय को नष्ट नहीं करते तो क्यों न हम पर राज्य करें, हमारा तो यह हाल है कि "हिन्दुस्तानी समय' कहावत हो गई है यानी जिस तरह अंगरेज़ समय के पाबन्द' हैं वैसे ही हम ग़ैर पाबन्द यह इतना बड़ा विषय है कि इसपर जितना लिखा जाय कम है इसलिये माता पिता अपने बच्चों को समय की कदर सिखाने की ख़ातिर नीचे लिखी बातों पर अमल करें तो उनका और उनके बच्चों का कल्याण होगा।

१—समय अनमोल है। दौलत खो जाये तो कमाई जासकती है परन्तु गया वक्त फिर हाथ आता नहीं चाहे लाख रुपये ख़र्च करो।

२—जिस तरह पैसा पैसा करके रुपे का नुकसान हो जाता है इसी तरह पल पल करके बरसें गुजर जाती हैं।

३—नाम बाक़ी तो रहे उम्र गो हो बर्क़ ख़िराम।

ज़िन्दगी चाहिये दन्दामें शरर की सूरत "इक़बाल"

नेपोलियन सिकन्दर वग़ैरा को देखो कि ३० बरस की उमर में दुनिया में क्या क्या कर गये।

४—यह ख़्याल ग़लत है कि ज़्यादा काम होने से पाबन्दी नहीं हो सकती, सबसे ज़्यादा काम करने वाला सबसे ज़्यादा पाबन्द होगा और वह किसी काम में जल्दी नहीं करेगा क्योंकि उसका हर काम क़ायदे और पाबन्दी के साथ है।

५—ऐसे रिश्तेदारों या मिलने वालों से किनारा करो जो तुम्हारे

फ़स आकर तुम्हारा समय नष्ट करते हैं अगर तुम समय न खोवोगे तो उन पर भी अच्छा असर पड़ेगा।

६—खाना ख़ास तौर पर ठीक समय पर खावो क्योंकि यह तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरी है।

७—अपने सब कामों का समय बांधलो और इसी तरह बच्चों के समय बाँध कर उनको शुरू से ही समय की क़द्र सिखावो ताकि वे संसार में जीवन का फल प्राप्त कर सकें।

(व्यायाम) वरज़िश व खेल तमाशे

एक अंगरेज़ी मसला है All work and no play makes John a dull boy यानी अगर बच्चे से बराबर काम ही लिया जाये और खेलने न दिया जाये तो वह कुन्द ज़हन हो जायेगा, खेल कूद का तनदुरुस्ती पर बड़ा भारी असर पड़ता है। हिन्दुस्तान में यह ग़लती आम तौर पर की जा रही है—माता पिता ख़्याल भी नहीं करते कि बच्चों को तन्दुरुस्ती के लिये खेल कूद और कसरत कितनी ज़रूरी है वल्कि बाज़ माता पिता को तो पढ़ाने का ऐसा ख़ब्त होता है कि हर वक्त बच्चे को पढ़ने में मशगूल रखते हैं। ऐसे बच्चे ४-६ बरस में ही बीमारी के शिकार हो जाते हैं और पढ़ाई छोड़ना पड़ती है अगर पढ़ लिख भी गये तो तन्दुरुस्ती खोकर, ऐसे लड़के संसार में क्या कर सकते हैं उनके ख़ुद जान के लाले पड़ जाते हैं। "बीमार और कमजोर मनुष्य सुसायेटी के लिये बोझ हैं" यह बात हर माता पिता को हर वक्त ध्यान में रखना चाहिये, बच्चों की तन्दुरुस्ती का ख़्याल शिक्षा का भाग मानना चाहिये अंगरेज़ महाशय इसकी ज़रूरत को खूब समझते हैं जब कोई अंगरेज़

अपने बच्चे को मदरसे में भरती कराता है तो यह बात भी पहले निश्चय कर लेता है कि उस पाठशाला में कौन कौन से खेल लड़कों को खिलाये जाते हैं क्योंकि वे यह अच्छी तरह समझते हैं कि अगर बच्चे की तन्दुरुस्ती बिगड़ गई तो पढ़ना लिखना व्यर्थ है। हमारे यहां मदरसों में जैसा होना चाहिये बच्चों की तन्दुरुस्ती का ख़्याल नहीं रक्खा जाता इसलिये माता पिता का फ़र्ज़ है कि जिस तरह वे बच्चों के पढ़ने लिखने की निगरानी करते हैं इसी तरह उनके खेल कूद और वरज़िश का ख़्याल रक्खें, इस बात का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि न बच्चे को इतना खिलायें कि वह खिलाड़ी होकर काम न करे और न इतना पढ़ायें कि उसकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाये।

सब बच्चों को खेल कूद, दौड़ धूप और हँसने बोलने का कुदरती शौक होता है क्योंकि इन बातों से उनकी तन्दुरुस्ती बनती है बल्कि यह तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी हैं। इन स्वभाविक आदतों से बच्चों को रोकना उनकी तन्दुरुस्ती छीनना है। माता पिता का केवल यह काम है कि निगरानी रक्खें ताकि इससे नुकसान न हो और बच्चों को सच्चा आनन्द मिले क्योंकि आरोग्य शरीर बिना सच्ची खुशी हासिल नहीं हो सकती।

वरज़िश और तफ़रीह का ख़्याल बच्चे के पैदा होते ही शुरू हो जाना चाहिये, छोटा बच्चा जो बैठ भी नही सकता है उसको हर वक्त गोद में लिये रहना या छाती से लगाये रखना बच्चे की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत मुज़िर है। माता को चाहिये कि दूध पिलाकर बच्चे को चित लिटा दिया करे और उसे खूब हाथ पैर मारने दे यही उसकी कसरत है। माता पास बैठी हुई कभी कभी मीठे स्वर से गीत सुनाया करे तो इससे बढ़कर

बच्चे के लिये कोई तफ़रीह नहीं।

जब बच्चा बैठने लगे और चीज़ पकड़ने के लायक हो जाये तो उसको ऐसे खिलौने दिये जायें जिन को वह बार बार शौक से उठाये और फेंके, बच्चों की आदत होती है कि हर चीज़ को मूँह में रख लेते हैं इसलिये खिलौने ऐसे होने चाहिये जिन के लग जाने का डर न हो और बच्चा निगल भी न सके, इस काम के लिये रबड़ के खिलौने अच्छे होते हैं उनके मूँह में दबाने से दाँत निकलने में भी मदद मिलती है और टूटने का भी डर नहीं होता है न बच्चे के लगजाने का, ऐसे बच्चों को भी ज्यादा गोद में रखना मुनासिब नहीं इनको साफ़ ज़मीन पर छोड़ दिया जाये और कुछ खिलौने डाल दिये जायें ताकि वह खेल में सरक सरक कर अपनी कसरत पूरी करले और ऐसा दिन में कई बार किया जाये।

जब बच्चा चलने फिरने लगे तो बच्चे की ताक़त के माफ़िक़ सुबह शाम सैर को पैदल लेजाना और ऐसे खेल खिलाना जिन में बच्चे को दौड़ना पड़े ज़रूरी है। तफ़रीह के लिये मेलों तमाशों में लेजाना और दिल चस्प तसवीरें और खेल दिखाना जिनसे तमाशे के साथ ही साथ उनकी समझ पर भी कुछ ज़ोर पड़े बहुत लाभ दायक होता है।

बड़े बच्चों को मैदान के खेल बहुत मुफ़ीद होते हैं चूंकि सब माता पिता बच्चों को मैदान के खेल नहीं खिला सकते और जहां मैदान के खेलों का मदरसों में इन्तज़ाम है वह काफ़ी नहीं, इसलिये बच्चों को घर पर वरज़िश रोज़ाना कराना चाहिये आम तौर पर १०-१२ बरस की उम्र से वरज़िश शुरू करादी जाये, डंड, मुगदर गतका फरी प्रोफ़ेसर राम मूर्ति की वरज़िशें वग़ैरा बहुत उमदा हैं।

अंगरेज़ी खेल फुटबाल किरिकिट वग़ैरा भी अच्छे हैं लेकिन देसी खेल मसलन गतका फरी बांक मुगदर वग़ैरा में यह फ़ायदा ज़्यादा हैं कि हर माता पिता अपने घर पर इनका इन्तज़ाम कर सकते हैं और महनत होने के साथ हीं फन सिपाहगरी भी आता है और थोड़े से ख़र्च से यह चीज़ें तैय्यार होकर बरसों तक काम देती हैं अंगरेज़ी खेलों की तरह रोज़ का ख़र्च नहीं लड़कों की तरह लड़कियों को भी वरज़िश कराना ज़रूरी है क्योंकि लड़कियाँ भी तन्दुरुस्ती की वैसी ही हक़दार हैं जैसे कि लड़के, हम यहां कुछ वरज़िशें लिखते परन्तु इस पुस्तक में गुनजायश नहीं, इस मज़मून को पाठकगण और पुस्तकों में देख सकते हैं ख़ास कर पंडित ठाकुर दत्तजी शर्मा वैद लाहौर ने अपने रिसाले में जो लड़के लड़कियों की वरज़िश के तरीके लिखे हैं वे बहुत मुफ़ीद हैं।

गाने का भी तन्दुरुस्ती पर बहुत अच्छा असर पड़ता है इसलिये बच्चों को मुनासिब तौर पर यह इल्म सिखाना भी अच्छा है।

बच्चों के साथ खेल में कभी कभी माता पिता को भी शामिल होना चाहिये इससे आपस में प्रेम बढ़ता है और दोनों को सच्ची खुशी हासिल होती है।

बड़े बच्चों को तफ़रीह के लिये थियेटर या नाच के जलसों में कभी न लेजाया जाये इससे उनके चाल चलन पर खराब असर पड़ता है। इनके लिये पहाड़ों व जंगलों के कुदरती सीन दिखाना, तारीखी मुक़ामात की सैर कराना, नक़शा या तसवीर कशी वग़ैरा का शौक दिलाना या ऐसे खेल तमाशे दिखाना जिनका चालचलन पर बुरा असर न पड़े मुनासिब है। ताश चौसर वग़ैरा खेलने की बच्चों को कभी इजाज़त न दी जाये।

झूठ बोलना

झूठ बोलना महान पाप है परन्तु यह सब से सहल भी है क्योंकि इसके बोलने में कुछ तकलीफ़ नहीं होती और बच्चे फ़ौरन झूठ बोलने लगते हैं। किसी समय में भारत बासी सच बोलने के लिये देश देशान्तरों में मशहूर थे लेकिन आज हम लोग झूठ बोलने में उस्ताद माने जाते हैं और अब झूट बोलना मामूली तौर पर कोई ऐब ही नहीं गिना जाता, हँसी मजाक में झूठ बोलना तो अच्छे अच्छे आदमी बुरा नहीं समझते क्यों न हो जो शिक्षा हम को बचपन से दी गई वह हमने ग्रहण की, बच्चे ने कोई चीज़ माँ से माँगी माँ बच्चे को चीज़ देना नहीं चाहती वह फ़ौरन बोली "नहीं बेटा इसमें हाथ नहीं लगाते हैं यह काट खायगी एक दो रोज़ में बच्चे को मालूम हुआ कि यह चीज़ नहीं काटती, बच्चा अभी यह नहीं जानता कि झूठ बोलना क्या चीज़ है लेकिन उसने इस उपदेश को गाँठ बाँध लिया, कुछ दिन बाद छोटे भाई ने कोई चीज़ माँगी बच्चा देना नहीं चाहता कहता है "नहीं भइया, यह काट खाती है"। माता ने जो बच्चे को सिखाया बच्चे ने उस पर अमल करके दिखा दिया, पिताजी कपड़े पहन रहे हैं और बाज़ार जाने वाले हैं। बच्चा बोला बाबूजी मैं भी चलूंगा क्योंकि वह जानता है, बाबूजी बाज़ार जा रहे हैं। बाबूजी बोले बेटा हम कचहरी जाते हैं तुम मत चलो, बच्चा रोज़ देखता है कि बाबूजी ४ बजे कचहरी से लौट आते हैं फिर शाम को ५ बजे कचहरी जाना कैसा, झूठ बात बच्चे के दिल में भी खटक जाती है उस वक्त वह चुप हो गया और छत पर जाकर खड़ा हो गया, देखा कि बाबूजी रोज़ तो कचहरी उधर जाते थे आज इधर गये, वह दौड़ा, हुआ मां

के पास आया और बोला "बाबूजी तो बाज़ार गये हैं कचहरी नहीं गये और रोने लगा, माँ ने मिठाई देकर बहला दिया, जब बाबूजी वापिस आये तो माताजी बोली "तुम्हारा बेटा बड़ा होशयार है छत पर जाकर तुम्हें बाजार जाते देख लिया", बाबूजी सुन कर हँसने लगे, इतने में बच्चे ने आघेरा" तुम तो बाजार गये थे मुझे क्यों नहीं ले गये" बाबूजी फिर फ़रमाते हैं नहीं बेटा, हम बाज़ार नहीं गये साहब के बंगले पर गये थे किसी काम को"। बच्चा बोला "तो फिर तरकारी कहाँ से लाये" यह सुन कर बाबूजी ने फ़ौरन बच्चे को गोद में उठा लिया और प्यार करके कहने लगे "तू तो अभी से मन्तिक छांटने लगा" बच्चा अपनी तारीफ़ सुन कर खुश है क्योंकि उसे भी इतना अनुभव ज़रूर है कि मैंने आज कोई नई बात सीखी ऐसी एक नहीं बीसियों बातें सुबह से शाम तक हर घर में होती हैं। फ़रमाइये अब हम झूठ न बोलें तो क्या सच बोलें।

यह आदत हम में ऐसी आम हो गई है कि यह ख़्याल भी नहीं होता झूठ बोलना कोई बुरा काम है। एक अंगरेज़ को अंगरेज़ की बात पर पूर्ण विश्वास होता है लेकिन यहां भाई को भाई की बात का एतबार नहीं क्योंकि झूठ बोलना हमें घूटी में दिया गया है। यह महान् पाप सब पापों की जड़ है इसके कारण न पिता को पुत्र पर विश्वास है न पति को पत्नी का एतबार। सब मज़हबों की धर्म पुस्तकें इसकी बुराइयों से भरी पड़ी हैं। यह मुख्य कारण है जिससे मनुष्य धर्म से पतित हो रहे हैं। अब नीचे केवल वे बातें दर्ज की जाती हैं जिन पर माता पिता को अधिक ध्यान देना चाहिये क्योंकि जब तक माता पिता सच्चाई का आदर्श नहीं बनेंगे, सन्तान कदापि सच्ची नहीं हो सकती।

१—बच्चों को कभी धोखा नहीं देना चाहिये। धोखा एक दफ़े चल जाता है लेकिन फिर कुछ नहीं काठ की हडिया एक ही बार चूल्हे पर चढ़ती है। जहां बच्चे पर धोखे का हाल खुला फिर वह भरोसा नहीं करता और माता पिता की सच्ची इज़्ज़त उसके दिल से जाती रहती है और सच बोलने पर भी उन पर पूरा भरोसा नहीं करता, बच्चों का मन साफ़ होता है चाहे वे न कह सकें लेकिन माता पिता के धोके का हाल फ़ौरन समझ जाते हैं।

२—बच्चों को भूत प्रेत या अंधेरे के डर से बचाना चाहिये इस में एक तो झूठ बोलने का पाप शामिल है दूसरे बच्चे जिन्दगी भर को डरपोक हो जाते हैं अकसर इस डर से बच्चों की जानें जाती रही हैं।

३—जब बच्चा कोई बात पूंछे तो उसको ग़लत जवाब मत दो न जवाब देने में कोई बहाना करो अगर बच्चे को उसका जवाब देना मुनासिब नहीं है तो यह कहदो कि जब तुम बड़े होगे तब बतायेंगे अभी नहीं।

४—बच्चे अकसर नौकरों से झूठ बोलना और धोखा देना सीख जाते हैं। बच्चे ने कोई शीशी या गिलास तोड़ डाला बच्चा मार खाने के डर से घबराया तो नौकर ने कह दिया कि माँ से कह देना बिल्ली तोड़ गई, अमीरों के बच्चे तो नौकरों के सबब से ही ज़्यादा बिगड़ते हैं। नौकरों की हिदायत के बाबत अगे लिखा जावेगा।

५—जार्ज वाशिंगटन अमेरीका का सब से बड़ा आदमी हुआ है। बचपन में एक दिन किसी ने उसे एक कुल्हाड़ा दे दिया वह अपने बाप के बाग़ में पहुँचा और एक फलदार

दरख़ को काट डाला, दूसरे दिन उसका बाप बाग़ में गया और कटे हुये पेड़ को देख कर पूछा यह किसने काटा है। किसी ने जवाब न दिया, वहीं घुमता फिरता जार्ज भी हाथ में कुल्हाड़ा लिये आया, बाप ने पूछा " जार्ज तुम्हें मालूम है यह पेड़ किसने काटा ", बच्चे ने थोड़ी देर सोच कर कहा " पिता जी मैं झूठ नहीं बोल सकता मैंने इस कुल्हाड़े से यह पेड़ काटा है "। बाप यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला " सच बोलना ऐसे हज़ार पेड़ों से भी बढ़कर है चाहे उन में चाँदी की कलि और सोने के फल लगे हों, ऐसी मिसालें बच्चों को सुनाना चाहिये जिस से उनके दिल में सच बोलने का उत्साह हो राजा हरिश्चन्द्र का वृत्तान्त और रामायण महाभारत ऐसे जीवन चरित्रों से भरे पड़े हैं। कितने शोक की बात है कि उन्हीं महान पुरुषों की सन्तान की आज यह दशा हो।

६—अकसर डरपोक बच्चा पिटने के डर से झूठ बोल देता है बच्चे ने कोई कुसूर किया हो तो उससे इतमीनान से पूछना चाहिये बल्कि यह अच्छा हो कि बच्चे से ख़ुद न पूछो और माता के भाई बहन के ज़रिये से दर्याफ़्त करो ताकि वह डर से कोई बात न कहे, ऐसा लालच भी बच्चे को न दिया जाये कि वह बात बनाकर कहे, अगर बच्चे से रूबरू ही पूछने की ज़रूरत पड़े तो कभी नाराज़ होकर मत पूछो बल्कि इस तरह से बातचीत करो कि उसका सच बोलने पर दिल बढ़े और सच कह देने पर इस तरह बरताव करो कि आयन्दा हमेशा उसे सच बोलने का साहस हो, कुसूर मंजूर करने के बाद उससे कहो अफ़सोस करे, जब वह दिल से अफ़सोस करे तो उसे माफ़ी दो यह माफ़ी बच्चे

के दिल पर बड़ा भारी असर करेगी और माता पिता और बच्चे में प्रेम के ख़यालात क़ायम हो जायेंगे।

७—जहां तक हो सके बच्चों पर एतबार करो वरना बेएतबारी का नतीजा बेएतबारी होगा, बच्चों के कहने पर शक ज़ाहिर मत करो जब तक कि उसने पहले धोखा न दिया हो या झूठ न बोला हो, उस पर शक करने से उसे धोखेबाज़ बनने में मदद मिलेगी, अगर बच्चे के किसी काम पर शक होता है तो भी फ़ौरन उस पर झूठ बोलने का इलज़ाम मत लगावो पहले होशयारी से निश्चय करो और जब उसके झूठ बोलने का यक़ीन हो जाये तब उससे कहो कि तू झूठ बोला और साथ ही मुनासिब सज़ा दो, कभी माफ़ न करो।

८—अकसर लोग ऐसे शब्द बोलते हैं जिस के दो अर्थ होते हैं। यह भी झूठ है। ऐसे शब्द कहने वाले चालाक झूठे होते हैं उनका मतलब यह होता है कि हम पर इलज़ाम न लग सके, हमारी झूठ का हाल खुल जाये तो हम कह दें कि हमारा मतलब यह नहीं दूसरा था, इसकी भी बच्चों को सख़्त हिदायत कर देना चाहिये, कि वे जो बात कहें साफ़ साफ़ कहें किसी तरह का लगाव लपेट उस में न हो।

९—शरीर बच्चों से अगर मने कर दिया जाये तो हाथ या सर के ऐसे इशारे करते हैं जिन से उनका मतलब झूठ बोलना होता है। बच्चों से कह दिया जाये कि " मत हँसो " तो वे हँसते नहीं हैं लेकिन मूँह बनाते हैं या नकल उतारते हैं यह सब बातें बुरी हैं बच्चों को हर तरह के धोखा देने की आदत से बचाना चाहिये।

१०—एक कहावत है कि झूठ के टांगें नहीं होतीं यह सच है,

झूठ ज़रा सी भी अंत में .खुल जाती है। झूठे को हमेशा पकड़े जाने का डर लगा रहता है और जब वह सच कहता है तब भी उसका कोई भरोसा नहीं करता इस तरह धोखा देने या झूठ बोलने का नतीजा बच्चों को अच्छी तरह समझा देना चाहिये, उनको यह भी समझाया जाये कि अगर कोई उनके ऐब को न भी जाने या न देखे तो भी ईश्वर सब कुछ देखता या जानता है इसके साथ ही कोशिश करना चाहिये कि बच्चे अंतःकरण की आवाज़ पर ध्यान देना सीखें अंतःकरण की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ है। मैंने .खुद बच्चों को इस तरह समझाने की कोशिश की तो पूरी कामयाबी हुई सबब यह है कि बच्चों का दिल पवित्र और साफ़ होता है इसलिये जो बात उनको ठीक ढंग से समझाई जाती है वह फ़ौरन उनके घट में पैठ जाती है।

११—बच्चों की इस तरह तरबियत (शिक्षा) की जाये कि वे यह समझलें कि सच बोलना मुख्य धर्म है। जिस बात के सच होने में उनको संदेह हो उसके लिये सच होना न कहें, हर बात को बिना घटाये बढ़ाये साफ़ साफ कहें कोई बात न छिपायें अगर उनसे कुसूर हो जाय तो मंजूर करलें वरना झूठ बोलने का कुसूर और बढ़ जायेगा। यह सब तालीम होते हुये भी सब से ज़रूरी बात यह है कि जब तक बच्चे .खुद माता पिता को सच्चा न देखेंगे उपदेश का पूरा फल कभी न होगा।

इनाम और सज़ा

घर भी छोटा राज्य है और उसमें माता पिता की हैसियत राजा रानी की है जैसे बड़े राज्य में इनाम और सज़ा की ज़रू-

रत होती है वैसे ही इस छोटे राज्य में भी इनकी ज़रूरत है। यदि एक राजा यह कहे कि मुझे अपनी प्रजा से इतना प्रेम है कि मैं उनको दंड नहीं दे सकता तो वह मूर्ख समझा जायेगा और बुद्धिमान् सरकार गवर्नमेन्ट फ़ौरन उसे गद्दी से उतार कर बनारस या और किसी जगह भेज देगी, इन राज्यों पर तो गवर्नमेन्ट मौजूद है जो फ़ौरन बद इन्तज़ामी या राजा की अयोग्यता का इन्तज़ाम करती है परन्तु कितने रंज की बात है कि इन छोटे घर के राज्यों पर कोई गवर्नमेन्ट नहीं जो इनकी मूर्खता को इनको सज़ा दे सके यह कहते हैं कि हमें अपने बच्चों से इतनी मोहब्बत है कि हम उन्हें कैसे मारें, पाठकगण बतायें इनसे क्या कहा जाय, फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि शेख़सादी साहिब ने कहा है—

पादशाहे पिसर बमकतबदाद ।
लोहे सीमीनशदर किनारे निहाद ॥
बरसरं लोहे ओ नविश्ता बज़र ।
जौरे उसताद बहज़ महरे पिदर ॥

इसका अर्थ है कि एक बादशाह ने चांदी की तख़्ती देकर लड़के को मकतब में पढ़ने भेजा। उस तख़्ती के ऊपर सोने के अक्षरों में लिखा हुआ था कि बाप के प्यार से बढ़ कर उस्ताद की मार है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो माता पिता इस पर अमल नहीं करते वे अंत में पछताते हैं। बिगड़े हुये बच्चे बडे होने पर खुद माता पिता को प्यार करने की जगह बुरा भला कहते हैं और उमर भर अहसान फ़रामोश रहते हैं।

किस्सा है कि एक राजा कहीं लड़ने गया उसने अपनी फ़ौज के दो टुकड़े किये एक की कमान अपने हाथ में रक्खी और दूसरे की अपने मन्त्री (वज़ीर) को दी। राजा की फ़ौज के

सिपाही ने चोरी की राजा ने उसे फांसी देने का हुक्म दिया वज़ीर ने सिपाही के माफ़ करने के लिये अर्ज़ किया तो राजा ने कहा कि मैंने अभी तक ऐसे क़ुसूर पर किसी को माफ़ नहीं किया है। वज़ीर ने अर्ज किया" हुज़ूर अगर चोरी के क़ुसूर में फांसी की सज़ा दी जाय तो मेरी तो क़रीब आधी फ़ौज फांसी पा जाये, राजा ने जवाब दिया "इसी लिये तुम्हारे आदमी इतना क़ुसूर करते हैं। मैं किसी को माफ़ नहीं करता इसलिये मुझे बहुत कम सज़ा देने की ज़रूरत पड़ती है"। इसी तरह अगर बच्चों को झूठे प्यार में आकर सज़ा न दी जायेगी तो वे बिगड़ जायेंगे, इनाम और सज़ा दोनों बातें बच्चों के लिये बहुत ज़रूरी हैं।

बच्चों की तबियतें एक तरह की नहीं होतीं इसलिये उनको इनाम या सज़ा देने की बाबत कोई नियम मुक़र्रर नहीं कर सकते। राजा विक्रमाजीत अपने न्याय के लिये प्रसिद्ध था। एक बार तीन मनुष्य किसी मामले में पकड़े गये और राजा के सामने पेश हुये, महाराज ने उन तीनों को सरसे पैर तक देखा और एक से कहा "तुम को शरम नहीं आती कि तुम ने ऐसा बुरा काम किया मेरे सामने से चले जावो"। दूसरे से फ़रमाया "तुम कैद की सज़ा के लायक हो लेकिन तुम्हारे बाप दादे का ख्याल करके केवल पाँच सौ रुपया जर्माना करता हूँ। जावो आयन्दा कभी ऐसा मत करना"। "तीसरे के लिये हुक्म दिया कि इसका काला मुँह करके और गधे पर चढ़ाकर शहर बाहर निकाल दो"। दरबारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और राजा से पूछा कि हुज़ूर ने एक ही जुर्म के लिये तीनों को भिन्न भिन्न डंड दिये इसका क्या कारण है। महाराज ने फ़रमाया कल तीनों के हाल की मुझे ख़बर करना इसका कारण

मालूम हो जायेगा, पहले मनुष्य को राजा के बचन से इतनी शर्म आई कि वह रात ही में आत्मघात करके मर गया, दूसरा राता रात शहर छोड़ कर घर बार सहित दूसरी जगह चला गया. तीसरा मनुष्य जिस को काला मुँह करके शहर बाहर कर दिया था रात को फिर शहर में आ गया खूब शराब पी और नशे में मदहोश होकर एक मनुष्य को मार डाला दूसरे दिन राजा के सामने पेश हुआ और फांसी की सज़ा पाई, यही ख्याल बच्चों को इनाम या सज़ा देने में रखना चाहिये बाज़ बच्चे बहुत कोमल चित होते हैं उनको कभी कभी कड़ी नज़र से देखना ही काफ़ी होता है और जो कठोर हृदय हैं उनको मारना पड़ता है। अब हम पहले इनाम की बाबत खास बातें लिखते हैं।

इनाम

इनाम दो तरह से दिये जाते हैं, एक तो ज़बानी शाबाशी देना या तारीफ़ करना जिस से बच्चे का दिल बढ़ जाये और दूसरे कोई चीज़ इनाम में देना, इस बारे में नीचे लिखी बातें ध्यान देने लायक़ हैं।

१—अकसर माता पिता बच्चे की तारीफ़ करते हैं। बच्चा सुबह उठा उसने सलाम किया उसको दुआ दो अगर बार बार उसकी तारीफ़ करो कि लाल बड़ा अच्छा बेटा है रोज़ सलाम करता है तो इस कहने का असर जाता रहेगा और मामूली काम कराने के लिये भी ज़्यादा ज़ोरदार तारीफ़ की ज़रूरत पड़ेगी, जब बच्चे पर मामूली तारीफ़ का असर नहीं होता तो मूर्ख माता पिता लालच देना शुरू करते हैं "बेटा-आ-मुँह धुला ले, तुझे बताशे देंगे, इस तरह जब

दुबारा उसे मुँह धुलाने को बुलाया जायेगा तो फिर वह अपना इनाम मांगेगा।

२—बच्चों को अकसर इनाम में रुपया या पैसे दिये जाते हैं। इससे बच्चों की आदत बिगड़ जाती है और वे ज़्यादा तर चटोरे हो जाते हैं। बजाय रुपये पैसे के खिलौने या और कोई चीज़ देना चाहिये। खिलौने ऐसे हों जो आसानी से न टूट सकें और उन से बच्चे कोई नई बात हासिल करें।

३—बड़े बच्चों को अच्छी दिलचस्प किताबें या तसवीरें इनाम में देना मुनासिब है। मेला तमाशा या और देखने लायक मुकामों में भी लेजाना चाहिये इससे बच्चों में नई नई मालूमात होने का शौक बढ़ेगा।

४—छोटे बच्चों को प्यार से गले लगाना और बड़े बच्चों को दिली हमदर्दी और खुशी से शाबाशी देना ऐसा अच्छा इनाम है जिसका मुकाबला कोई इनाम नहीं कर सकता। प्रेम वह वस्तु है जिसके बराबर संसार की कोई चीज़ नहीं।

५—इनाम की बाबत ख़ास तौर पर यह बात याद रखना चाहिये कि बच्चों की आदत न बिगड़ जाये और वे लालची न हो जायें वरना इसका उल्टा असर पड़ेगा। इसलिये मामूली काम में इनाम की ज़रूरत नहीं अगर बच्चा कोई अच्छा काम ज़्यादा करे तो उसको इनाम दिया जाये।

सज़ा—(दंड)

सज़ा भी दो तरह दी जाती है एक नज़र से नाराजगी जाहिर करके या ज़बानी लानत मलामत करके और दूसरे हाथ

से सज़ा देकर। जहाँ तक हो सके सज़ा कम से कम देना चाहिये।

१—बच्चों को बार बार बुरा कहना या उनके हर काम में हमेशा ऐब निकालते रहना अच्छा नहीं इसी तरह ज़रा ज़रा सी बात पर बच्चों को मत धमकावो, अगर छोटी छोटी बातों पर बच्चों को झिड़का जायेगा तो उनका डर जाता रहेगा अकसर माता पिता बार बार कहते है "इससे मत बोलो" " यह बदमाश है' वगैरा, यह आदत बुरी है और इससे कोई फ़ायदा भी नहीं होता बल्कि बच्चे पर इसका असर बुरा पड़ता है। यथा नामः तथा गुणः अगर बच्चे को बार बार बदमाश चोर या झूठा कहा जायेगा तो उस में ज़रूर ऐसे संस्कार पैदा होंगे। बच्चों का ऐसे शब्द न सुनना ही अच्छा है।

२—जहां तक हो सके छोटी से छोटी सज़ा दो जब कड़ी नज़र काफी है तो जबान से कुछ न कहो अगर जबानी समझाने से काम चल जाय तो झिड़की मत दो, अगर झिड़कने से काम चल जाये तो बेत न मारो, मतलब यह कि जब छोटी सज़ा से काम न चले तो बड़ी सज़ा दो, इसका सबसे उमदा इलाज यह है कि पहला कूसूर करने पर मुनासिब सज़ा दे दो वरना फिर दुबारा देने की ज़रूरत पड़ेगी।

३—सज़ा कुसूर के मुताबिक दी जाये, अगर एक बच्चे ने अपने भाई या बहन को गेंद से मारा तो उसको गेंद छीन लेना अच्छी सज़ा है। अगर उसने भूल से कोई चीज़ गुमादी तो उसे दूसरी चीज़ मँगाकर मत दो, अगर उसने अपने भाई का खिलोना तोड़ डाला तो उसका खिलोना उसके

भाई को देदो। अगर बच्चे आपुस में लड़ते हैं तो उनको अलग कर दो साथ मत खेलने दो।

४—अकसर ज़िद्दी बच्चों को सज़ा के तौर पर अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया जाता है यह ख़राब आदत है। एक दफे मेरे एक पड़ोसी ने अपने शरीर बच्चे को कोठरी में बन्द कर दिया इत्तफ़ाक़ की बात वहां उसको एक बिच्छू ने काट खाया लड़का और ज़ोर से चिल्लाने लगा माता पिता ने समझा कि यह जिद से चिल्ला रहा है कोठरी को नहीं खोला नतीजा यह हुआ कि ज़हर के असर से उसकी ख़राब हालत हो गई और लड़का कई दिन के इलाज के बाद दुरुस्त हुआ।

५—बच्चों को भूत के डर की कभी धमकी मत दो, नौकरों को भी हिदायत कर देना चाहिये, कि बच्चों को अंधेरे में लेजाकर या भूतों की कहानियाँ सुना कर या यह कह कर कि भूत पकड़ लेगा कभी न डरायें अलावा झूठ होने के इस तरह सब से बड़ी ख़राबी यह फैलती है कि बच्चे जन्म से मरन तक ख़ियाली भूत से डरते रहते हैं बल्कि यों कहिये कि उनके नाजुक दिलों में हमेशा के लिये भूत का डेरा हो जाता है फिर बड़े होने पर हज़ार कोशिश की जाय यह डर दिल से नहीं निकलता इसलिये भूतों की कहानियाँ भी बच्चों को न सुनानी चाहिये। मातायें अपनी जरासी तकलीफ़ बचाने के लिये ऐसा करतीं हैं लेकिन यह नहीं सोचतीं कि इस ज़रासी ग़लती का नतीजा बच्चे को जन्म भर उठाना पड़ेगा मेरी छोटी भतीजी कान्ता कुछ शुरू से ही बेख़ौफ़ थी उसकी परवरश में ख़ास तौर पर ख्याल रक्खा गया कि इसे किसी तरह का डर न

दिलाया जाये अब वह ५-६ साल की है बेख़ौफ़ अंधेरे में आती जाती है उसे ख्याल भी नहीं कि भूत क्या चीज़ है। बच्चों को रात में प्यास लगती है तो अंधेरे के सबब माँ को जगाते हैं लेकिन उसका यह हाल है कि अपने आप उठी घड़े में से पानी पिया और चुप चाप सो गई। जो बच्चे बेख़ौफ़ परवरिश होंगे वे बहादर और सच्चे होंगे।

६—अकसर देखा जाता है कि बच्चे को नादानिस्ता ग़ल्ती (अनजान भूल) पर मारा जाता है यह ठीक नहीं अगर बच्चा जान बूझ कर ऐब या नुकसान करे तो सजा के लायक़ है। खेलते हुये अगर बच्चे का कुरता किसी चीज में उलझ कर फट जाय तो कुरता फटने का कुसूर बच्चे का नहीं अलबत्ता लापरवाही के लिये उसको हिदायत कर देना चाहिये।

७—एक अलमारी में चीनी और पीतल के कटोरे और दूसरी चीज़ें रक्खी हैं बच्चे से कोई चीज अलमारी की मँगाई गई। वह चीज़ निकालते हुये अगर कोई पीतल की कटोरी बच्चे के हाथ से गिर जाय तो माता कुछ न कहेगी लेकिन अगर चीनी की कटोरी गिर कर फूट जायगी तो उसे मारेगी, यह नाइन्साफ़ी है। नतीजे से ग़ल्ती का अंदाजा नहीं लगाना चाहिये। कुसूर कटोरी गिरने का है जो सज़ा पीतल की कटोरी गिरने की हो वही चीनी की कटोरी के लिये होना चाहिये। अगर चीनी की कटोरी पर सज़ा ज़्यादा दी जायेगी तो यह हिदायत नहीं बल्कि अपने नुकसान का बदला हुआ। छोटे बच्चे भी अकसर इन बातों को समझते हैं और उनके ख्याल माता पिता की तरफ़

ख़राब होते हैं या कम से कम वे यह तो ज़रूर दिल में महसूस करते हैं कि हमारे साथ बेइन्साफ़ी हुई, बच्चों का माता पिता की बाबत बेइन्साफ़ी का ख्याल बहुत बुरा है इस तरह बड़े होकर उनकी तबीयत में नफ़रत पैदा हो जाती है। माता पिता के न्याय पर बच्चों का अटल विश्वास होना चाहिये।

८—अकसर माता पिता बात बात में बच्चों से कहते हैं तुम्हें शर्म नहीं आती या जो मिलने जुलने वाला आता है उसी के सामने बच्चों की बुराई करने लगते हैं वे ऐसा इस ख्याल से करते हैं कि बच्चा शरमिन्दा होकर बुरी आदतें छोड़ देगा लेकिन इसका नतीज उलटा होता है बच्चा बजाये शरमिन्दा होने के और ज्यादा बेशर्म हो जाता है। यह याद रखना चाहिये कि बुरे से बुरे लड़के में भी कुछ न कुछ ख़ुददारी का ख्याल होता है उसको बिगाड़ना नहीं चाहिये बल्कि कायम रखने और बढ़ाने की पूरी कोशिश करना चाहिये। जब वह देखेगा कि मुझे बार बार 'बेवकूफ' गधा कहते हैं या सब आने जाने वालों को मेरी आदतों का हाल मालूम हो गया है तो फिर उसे कुछ शर्म नहीं रहेगी। इसलिये लानत मलामत करने की नौबत बहुत कमी के साथ आना चाहिये और वह भी अकेले में, किसी बाहर वाले के सामने नहीं।

९—बच्चों को गुस्से में कभी नहीं मारना चाहिये। जब माता या पिता गुस्से में होंगे तो वे अकसर बेइन्साफी कर गुज़रेंगे क्योंकि जब आदमी गुस्से में होता है तो वह बुरे भले की अच्छी तरह तमीज़ नहीं कर सकता। जब बच्चा किसी दूसरे की शिकायत करे तो गुस्से में आकर फ़ौरन दूसरे

को सज़ा न दी जावे बल्कि शान्ति के साथ दोनों की बात सुन कर फ़ैसला किया जाय। फ़र्ज करो बहन ने भाई के नोच लिया माता ने बहन को नोचते नहीं देखा भाई ने गुस्से में आकर बहन को मारा वह रोई मां गुस्से में उठी और भाई को सज़ा दी, तो माता कुसूर वार हुई। बच्चे को तो नोचने पर गुस्सा आया था लेकिन माँ ने वग़ैर सबब जाने कुसूर किया। ऐसा भी होता है कि बच्चे के हाथ से कोई नुकसान हो गया, अगर नुकसान को देखते ही गुस्से में उसे मारोगे तो ठीक नहीं मुमकिन है बच्चे से नुकसान अनजाने हुआ हो और वह इतनी सज़ा के लायक न हो जितनी तुम ने दी। बच्चों को सज़ा देना माता पिता को मामूली बात नहीं समझना चाहिये बल्कि यह ख्याल चाहिये कि हमको जज की हैसियत में काम करना है कहीं हम से बेइन्साफी न हो जाये।

१०—मारने की सज़ा बहुत ही कम देना चाहिये बाज़ माता पिता हर वक्त बेत संभाले रहते हैं। बार बार का मारना बच्चों को ढीठ बना देता है और उनकी तबीयत से खौफ़ जाता रहता है फिर जिस तरह शर्म का अहसास उनके दिल से जाता रहता है इसी तरह मारपीट की परवाह नहीं करते, बेंत की सज़ा तो सिर्फ़ उसी वक्त देना चाहिये जब हल्की हल्की सज़ाओं से काम न चला हो और एक ही कुसूर को बार बार करे, पहले छोटी सज़ाओं से काम लेना चाहिये। मारने की सज़ा आख़िरी है यह सख़्त मजबूरी में और बहुत कम दी जाय और जब इसकी ज़रूरत आपड़े तो इतनी दी जाये कि बच्चे को अच्छी तरह इबरत हो जाये।

११—अगर बच्चों को हमदर्दी और रंज़ के साथ कोई सज़ा दी जाये या लानत मलामत की जाये तो जादू का काम करती है। बच्चे समझते हैं कि यह सज़ा हमारी भलाई के लिये दी जा रही है, इसका असर उनकी तबीयत पर बहुत गहरा पड़ता है। हमदर्दी में अजीब ताक़त है।

१२—सज़ा देने से पहले कोशिश यह करना चाहिये कि बच्चा कुसूर मंजूर करले और उस पर अफ़सोस करे अगर यह बात हासिल हो जाये तो फिर सज़ा देने की ज़रूरत नहीं। बच्चा जब दिल से कुसूर मंजूर कर लेगा तो आयन्दा ऐसा नहीं करेगा। इसके लिये सब से ज़रूरी बात यह है कि बच्चे को समझा दिया जाय कि ऐसा करना पाप है और ईश्वर इससे नाराज होता है। ईश्वर नेकियों का भंडार है अगर बच्चे के दिल में ईश्वर की नाराजी का ख़्याल जम जायेगा तो वह दिन बदिन नेक होता जायेगा।

१३—बड़े बच्चे जो बिगड़ जाते हैं वे सज़ा से दुरुस्त होते कम देखे गये हैं। ऐसे बच्चे मारने या घर से निकाल देने से और ज्यादा बिगड़ जाते हैं। उनके सुधार की तो यही सूरत है कि माता पिता और संबन्धी हमेशा उनके साथ हमदर्दी से पेश आयें और उनकी हालत पर दिली रंज और अफ़सोस जाहिर करें, दिली हमदर्दी धीरे धीरे ज़रूर अपना असर करेगी, यह कायदा है कि नफ़रत का जबाब नफ़रत और मोहब्बत का जबाब मोहब्बत मिलता है। दो मित्र थे और उन में आपुस में बड़ा प्रेम था। इसलिये दोनों शामिल कारबार करते थे। एक मित्र कलकत्ते की दूकान पर रहता था और दूसरा बनारस की दूकान पर। कलकत्ते वाले मित्र के बाल बच्चे भी बनारस में उसके मित्र के पड़ोस में

रहते थे और वही उनकी खबर गीरी करता था। एक दिन बनारस वाला मित्र बाजार से दो बैंगन मोल लाया जिन में एक बैंगन कुछ काना था, काना बैंगन तो उसने अपने मित्र के घर भेज दिया और अच्छा बैंगन अपने घर लेगया, उसी दिन रात को कलकत्ते में बैठे हुये मित्र के दिल में ख्याल पैदा हुआ और उसने बनारस अपने मित्र को पत्र लिखा कि अब तक हमारा तुम्हारा कारबार शामिल रहा लेकिन अब दिल यह कहता है कि हम अपना काम अलग अलग करलें। बनारस वाले मित्र को यह पत्र देख कर बड़ा अचंभा हुआ और जब उसने ग़ौर किया तो काना बैंगन भेजने की बात याद आई उसको बड़ा रंज हुआ। असल में उसका अंतःकरण शुद्ध था उसने कलकत्ते वाले मित्र को सब हाल लिख कर माफ़ी चाही और दोनों मित्र फिर एक दिल हो गये मतलब यह है कि दिली हमदर्दी की ताक़त बड़ी जबरदस्त है। यदि सच्ची हमदर्दी की जायेगी तो ज़रूर बच्चों पर अच्छा असर पड़ेगा।

फ़ैशन का भूत और सादगी

फैशन अंगरेज़ी शब्द है और इसका अर्थ "वजे" या "रिवाज़" है शरीफ लोग जो तरीक़ा इख़्तयार कर लेते हैं औरों में भी उसका रिवाज हो जाता है और वह फ़ैशन कहलाता है। मौजूदा फ़ैशन से अंगरेज़ों के वह तरीक़े मुराद हैं जो हमारे नौजवानों ने बिला सोचे समझे इख़्तयार कर लिये हैं और सादगी की आला ज़िन्दगी से दूर जा पड़े हैं।

रूस देश के प्रसिद्ध फ़िलास्फ़र काऊंट टोलसटाई की राय है कि दुनिया की मौजूदा तालीम का रुख ग़लत रास्ते की

तरफ़ जा रहा है। जो तालीम हमसे हमारी सादगी छीन लेती है वह हानिकारक होती है। अपनी रोटी ख़ुद अपने हाथ से कमाना हमारा तरीक़ा होना चाहिये। हाथ के कामों से नफ़रत करना किसी हालत में मुनासिब नहीं। जो लोग इस तरह रोटी कमाते हैं वही असल में संसार में भलाई फैलाने की सेवा कर रहे हैं। चालीस फ़ी सदी खेत जोतने वालों पर ही सब की रोटी का दार मदार है हमारे देश में तो सौ में नब्बे आदमी खेत जोतने वाले हैं जब यूरोपियन देश वाले ही उस शिक्षा को बुरा समझते हैं जिससे सादगी जाती रहे तो हमारी सन्तान का क्या हाल होगा फ़ैशन सादगी का दुशमन है अगर उनको सादगी की शिक्षा न दी जायेगी तो वे कदापि सच्चे सुख का अनुभव न कर सकेंगे।

मनुष्य जन्म दुर्लभ है क्योंकि ईश्वर प्राप्ति इसी जन्म में हो सकती है और में नहीं इस लिये उन सब बातों से ख़ुद बचना और सन्तान को बचाना बहुत ज़रूरी है जो इस उद्देश के प्राप्त करने में बाधक हों, सादगी का जीवन ईश्वर के समीप लाता है और फ़ैशन का भूत दूर ले जाता है। अंगरेज़ी मसला है.--

Plain living and high thinking.

इसका यह मतलब है कि ज़िन्दगी सादी रक्खो और ख़्यालात ऊँचे। असल में आला ख़्यालता सादा जीवन बसर करने से ही हो सकते हैं। फ़ैशन बाई माया देवी की मित्र है वह अपने मतवालों को हर दम अपनी तरफ़ खींचा करती है उनको इतनी फ़ुरसत ही नहीं देती कि वे ऊँचे विचार कर सकें अब यह माता पिता का फ़र्ज़ है कि अपनी सन्तान को कभी इस रंडी के जाल में न फँसने दें।

हर काशी निवासी की ज़बान पर यह दोहा रहता है :—

चना चबेना गंग जल, जो पुरवें करतार।
काशी कबहुं न छोड़िये, विश्वनाथ दरबार॥

अगर ईश्वर कृपा से खाने को मामूली खाना और पीने को सादा पानी मिल जाये तो काशीपुरी कभी नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि यहाँ विश्वनाथ महादेव का दरबार है यह इसका ज़ाहिरा मतलब है लेकिन शिव जी महाराज इसकी तशरीह यों करते हैं कि काशीपुरी असल में मनुष्य का शरीर है जिसमें ख़ुद मालिक रहता है इसलिये हर मनुष्य का धर्म है कि अपने जीवन को मामूली तौर पर बसर करता हुवा इसी शरीर में मालिक के साक्षातकार करने के यत्न में लगा रहे क्योंकि मालिक जब मिलेगा इसी शरीर में मिलेगा और किसी जगह नहीं मिलता। न देखा वह कहीं जलवा जो देखा खानये दिल में। बहुत मस्जिद में सर मारा बहुत सा ढूंडा बुतख़ाना। मनुष्य की इच्छायें बेहद बेहिसाब है कभी पूरी नहीं हो सकती जितनी इनकी इच्छा की जायेगी उतनी ही बढ़ती जायेंगी अंत में नतीजा यह होगा कि मनुष्य को शान्ति स्वप्न में भी नज़र नहीं आयेगी। इसलिये अपनी इच्छायें बढ़ने मत दो।

इस समय में जब कि खाने पीने का ख़र्च ही मुशकिल से चलता है फ़ेशन की ज़रूरतें बिना सबब बढ़ा लेना बुद्धिमानी नहीं। अंगरेज़ लोग सर्द मुल्क में रहते हैं और मालदार हैं हम गर्म मुल्क में रहते हैं और कंगाल हैं उनकी ज़िन्दगी के तरीक़े हमारे लिये कभी मुनासिब नहीं अगर हम उनकी नक़ल करेंगे तो बरबाद हो जायेंगे। हमारा काम यह होना चाहिये कि उनमें जो गुण हैं वह ग्रहण करें लेकिन अपनी वज़े सादा

रक्खें। अगर हम दूसरों के गुण ग्राहक रहेंगे तो ऊँचे चढ़ेंगे और जो नक्काल बणेंगे तो नीचे गिरेंगे हमारे फ़ेशन के मतवाले भाईयों को यह अच्छी तरह याद रखना चाहिये कि नक्कालों को कोई कदर नहीं करता, दूसरों के दिल में हमारी सच्ची इज़्ज़त उसी समय होगी जब हम इस आदत को छोड़ेंगे। अगर एक बहरूपिया हमारा स्वाँग भर कर हमारे सामने आये तो जो ख़्याल हमें उसकी बाबत होगा उससे भी बुरा ख़्याल दूसरा को हमें देख कर होता है क्योंकि बहरूपिया तो पेट की ख़ातिर हमारा स्वाँग भरता है लेकिन हम ऐसा करने को मजबूर नहीं, वह तो मतलबी बहरूपिया है लेकिन हम मूर्ख बहरूपिया हुये। माता पिता ध्यान दें फ़ेशन का भूत बहुत बुरी तरह बच्चों के पीछे पड़ा हुआ है ज़रा ज़रा से बच्चे फ़ेशन के मतवाले नज़र आते हैं अपना समय ख़राब करते हैं, रुपया बिगाड़ते हैं और दूसरों की नज़रों में हक़ीर बनते हैं। शेख़ सादी ने कहा है—"यके नुक़सां मायह दोम शमातत हमसायह" एक तो नुक़सान माल और दूसरे पड़ोसी की हँसी। इसलिये बच्चों को कभी फ़ेशन में मत पड़ने दो। हमेशा सादा रविश पर चलाओ और ख़ुद भी चलो। यह कभी ख़्याल मत करो कि सादगी ग़रीबी का निशान है बल्कि सादगी से अमीरी अधिक शोभायमान हो जाती है।

परहेज़गारी (ऐतदाल)

एक अंग्रेज़ी मसला है Prevention is better than cure यानी बीमारी का इलाज करने से बहतर यह है कि बीमारी न होने का इन्तजाम किया जाये मतलब यह है कि परहेज़ से रहा जाये। सन् १९१६ में मेरे पूज्य पिता जी श्री

हुज़ूर पुरनूर दरबार साहब बहादुर के हम रकाब नैनीताल गये। जेठ का महीना, गरमी सख़्त, देहली से लशकर इकदम नैनीताल पहुँचा वहाँ की सर्द आबहवा के सबब से करीब करीब तमाम लशकर बीमार हुआ। पिता जी तन्दुरुस्त रहे लोगों ने उनसे पूछा कि आपके बीमार न होने का क्या सबब है तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं हमेशा गिनी बोटी और नपा शोरबा खाता हूँ यही मेरे तन्दुरुस्त रहने का सबब है यह असूल अनमोल है और जो लोग इस पर अमल करते हैं वे ही जान सकते हैं कि यह कितनी सच्ची बात है। करीब करीब तमाम बीमारियाँ मेदे के ख़राब होने से होती हैं। हमारे यहाँ की बिधवा स्त्रियाँ भी इसका सूबूत हैं। वे बेचारी दुखिया पति वियोग के दुख से चाहती हैं कि हमारा जीवन जल्दी समाप्त हो जाये इसलिये खाना मामूली और कम खाती हैं ब्रत ज़्यादा करती हैं और हर तरह खाने पीने में नियम से रहती हैं परन्तु नतीजा उलटा होता है उनकी आयु ख़त्म होने के बजाये बढ़ जाती है क्योंकि वे परहेज़गारी का नमूना होने से बहुत कम बीमार होती हैं इससे यह मतलब नहीं कि बिधवा स्त्रियाँ इस नियम से न रहें ऐसा करना आत्म हत्या का पाप करना है जीवन का उद्देश ईश्वर प्राप्ति है इसमें उनको पूरी कोशिश करनी चाहिये ताकि उनका आगामी जन्म सुधर जाये। इस उदाहरण से तो हमारा केवल यह मतलब है कि मूर्ख मातायें यह समझें कि अगर वे भी बच्चों को परहेज से रक्खें तो उनके प्यारे बच्चे तन्दुरुस्त रह कर पूरी आयु पायेंगे। इस विषय में नीचे लिखी बातों पर अमल करना चाहिये।

१—मातायें समझती हैं कि अगर बच्चे ज़्यादा खायेंगे तो ज़्यादा ताक़त आयेगी यह बड़ी भूल है ताक़त ज़्यादा

खाने से नहीं आती बल्कि जो कुछ खाया जाये उसके अच्छी तरह हज़म होने से आती है।

२—खाना जितना सादा होगा उतना ही जल्दी हज़म हो कर फ़ायदा करेगा। मुरक्कन चीज़ें सब देर में हज़म होती हैं। मातायें यह खिलाना लाड़ समझती हैं। बच्चों को सादा ग़िज़ा खिलाकर मज़बूत रक्खो और फिर उनके हाज़मे की ताक़त के मुवाफ़िक़ ऐसी चीज़ें खिलावो तो हर्ज नहीं।

३—दुनिया में हर एक को काम करने के बाद आराम देने की ज़रूरत होती है इसी तरह मेदे को भी काम के बाद आराम देने की ज़रूरत है क्योंकि जो काम के बाद आराम नहीं करता वह जल्दी कमज़ोर हो जाता है इसलिये बच्चों को बार बार खिलाने की आदत बहुत नुक़सान करती है। बच्चों के खाने के लिये समय नियत कर देना चाहिये उनके अलावा और वक्त़ न दिया जाये अंगरेज़ लोग तो दूध पीने वाले बच्चों को भी मुक़र्ररा वक्त़ पर ही दूध पिलाते हैं फिर नहीं।

४—बाज़ार की मिठइयाँ बच्चों को कभी न खिलाई जायें इनसे कई तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं। कभी कभी घर ही की ताज़ा तय्यार की हुई मिठाई खिलाने में हर्ज नहीं।

५—बच्चों को किसी तरह के नशे का कभी आदी नहीं करना चाहिये। नशा मेदे की असली ताक़त को ख़राब करके बड़ी बड़ी बीमारियों का कारण होता है। नशा करने से ख़ून का दौरान तेज़ हो जाता है पीने वाला समझता है। कि मुझे इससे फ़ायदा हुआ दूसरे रोज़ पीता है और इस तरह आदी हो जाता है फिर तो यह हालत हो जाती है

कि जब तक नशा न किया जाये भूक नहीं लगती सबब यह है कि नशा धीरे धीरे असली ताक़त को खो देता है और आख़िर में मेदा किराये का टट्टू बन जाता है। किसी तरह का भी नशा हो जहर है तम्बाकू का रिवाज़ सब से ज़्यादा है। ज़रा ज़रा से बच्चों के मुँह में बीड़ी नजर आती है और ऐसा क्यों न हो जब पिता जी ख़ुद बच्चे से चिलम भरवायें और फिर कहें कि अच्छा इसको सुलगावो, यह भी देखने में आया है कि दियासलाई मौजूद नहीं है सिगरट बीड़ी की तलब हुई फ़ौरन बच्चे को आवाज़ दी और कहा बेटा—इस बीड़ी को चूल्हे से सुलगा लावो। इस तहह बच्चे को चसका पड़ जाता है और वह धीरे धीरे आदी हो जाता है। माता पिता इस पर ध्यान नहीं देते बल्कि कभी बच्चे को देख भी लेते हैं तो बजाये मने करने के हँस देते हैं। तम्बाकू हलका नशा है लेकिन बच्चों के लिये बहुत मुज़िर है। ज़हर कैसाही हलका हो आख़िर ज़हर है।

६—अकसर मातायें अपने ज़रा से आराम के लिये बच्चों को अफ़ीम दे दिया करती हैं ताकि बच्चा नशे में सो जाय और वे काम करलें राजपूताने में तो अकसर नहीं बल्कि बेशतर मातायें ऐसा करती हैं। इसका असर बच्चों की तनदुरुस्ती पर बहुत बुरा पड़ता है, माताओं को चाहिये कि कभी बच्चों को अफ़ीम न दें वे अफ़ीम नहीं देती हैं बल्कि ज़हर देती हैं।

जो माता पिता जिस तरह का नशा करते हैं उनके बच्चे ज़्यादा तर उसके आदी हो जाते हैं इसलिये अपनी तन्दुरुस्ती की ख़ातिर नहीं तो अपने प्यारे बच्चों की तन्दुरुस्ती की ख़ातिर

ही हर तरह के नशों से परहेज़ करना चाहिये।

शराब भंग अफ़ीम पीते वक्त बच्चे बड़ों को सलाम करते हैं क्योंकि यह अदब में दाख़िल है लेकिन मैं तो यह समझता हूं कि वे बड़ों को सलाम नहीं करते बल्कि अपनी अक्ल को सलाम करते हैं अफ़सोस है कि माता पिता जान बूझ कर बच्चों को अंधे कुंवे में ढकेलें। नशे बाज़ी से जो बरबादियाँ हुई हैं किसी से छिपी हुई नहीं अब भी माता पिता ध्यान न दें तो इसके सिवाय और क्या कहा जाये कि वे अपनी आत्मा के दुश्मन हैं।

अख़लाक़-(तहज़ीब)

बच्चों की खुशहाली के लिये अख़लाक़ का होना भी बहुत ज़रूरी है जिन बच्चों में यह आदत नहीं होती उनकी तरक्की रुक जाती है अगर कोई खुश ख़त हो तो देखने वाले की तबियत ख़त देखते ही खुश हो जायगी चाहे वह जानता कम हो और आदमी कैसा ही पढ़ा लिखा हो अगर उसका ख़त ख़राब है तो उसे अपनी जानकारी जताने में देर लगेगी और तकलीफ़ उठाना पड़ेगी इसी तरह जब कोई किसी से मिलता है तो मिलते ही जो असर दूसरे पर पड़ता है उसी से वह उस के अच्छे बुरे होने का विचार करता है अगर मिलने वाला घमंडी हो या बदतहज़ीबी या सख़्ती से बात करने का आदी हो तो चाहे उसमें और गुण हों दूसरा उसको पसन्द नहीं करेगा। और अगर मिलने वाला ख़लीक़ है तो दूसरा मिलते ही खुश हो जायेगा। बाज़ लोग शायद ऐसा कहें कि गुण तो अंत में प्रगट हो ही जाता है फिर अख़लाक़ की क्या ज़रूरत यह सच है कि गुण प्रगट होगा लेकिन जिस आदत से उसके प्रगट होने

म दूर लग वह क्यों न छोड़ दी जाये। अगर कोई दूकानदार सख़्त बोलने वाला और बदमिज़ाज हो तो ग्राहक उसकी दूकान पर सौदा लेना कम पसन्द करेगा इसके बर अक्स ख़लीक़ दूकानदार के पास सब ख़ुशी ख़ुशी जायेंगे। अख़लाक़ से पेश आना शराफ़त की निशानी है इससे तरक्की में बड़ी मदद मिलती है। ऐसे भी लोग देखे गये हैं कि उनका अख़लाक़ बहुत बढ़ा चढ़ा होता है लेकिन दिल के काले होते हैं मिलने वाले से बड़े तपाक से मिलते हैं और उसके पीठ फेरते ही दाव घात की तदबीरें सोचते हैं गोया अख़लाक़ को अपनी बुराई का ढाकन बनाते हैं ऐसे मक्कार लोग लानत के क़ाबिल हैं। चाकू कलम बनाने के लिये है लेकिन बदमाश इससे आदमी की जान भी ले लेते हैं। थोड़े ही दिन में इन मक्कारों की कलई खुल जाती है और फिर कोई उनका एतबार नहीं करता। नेक विचार रखते हुये अगर मनुष्य ख़लीक़ हो तो सोना और सुगन्ध है। पहले अख़लाक़ और तहज़ीब बच्चों को मकतब ही में सिखाई जाती थी लेकिन मौजूदा ज़माने में इस पर बिलकुल ध्यान नहीं। ख़ुद अंगरेज़ साहिबान निहायत ख़लीक़ होते हैं लेकिन अंगरेज़ी पढ़े हुये हिन्दुस्तानियों में यह गुण बहुत कम नज़र आता है सबब यह है कि माता पिता का इस पर ध्यान नहीं। नीचे ख़ास ख़ास बातें लिखी जाती हैं जो बच्चों को शुरू से सिखानी चाहिये। यह बातें बहुत छोटी मालूम होंगी लेकिन इन छोटी छोटी बातों का ही बच्चों के अतवार और ग्रहस्त के आनन्द पर बड़ा असर पड़ता है इसलिये इन बातों को छोटा नहीं समझना चाहिये :—

१—बच्चे सख़्ती से या ज़ोर से किसी से बात न करें अगर उन में यह आदत हो तो सज़ा देकर छुड़ाओ।

२—सुबह उठ कर माता पिता और सब बड़ों के चरण छूयें और प्रणाम करें।

३—जब कोई बड़ा आवे तो बैठे न रहें बल्कि खड़े हो जांय और जब बड़े बैठ जायें तब बैठें।

४—जब कोई घर पर आवे तो उसे उठ कर सलाम करें।

५—बड़ों के साथ चलते वक्त उनके पीछे चला करें अगर रास्ते में चलते वक्त सामने से कोई बड़ा आजाय तो सलाम करके एक तरफ को हट जायें।

६—जब कोई बात कर रहा हो तो बीच में न बोलें, जब वह चुप हो जाय तब बात करें।

७—सब के सामने थूकने या खांसने की आदत छोड़ दें अगर ज़रूरत पड़े तो अलग जाकर ऐसा करें।

८—बड़ों के सामने ज़्यादा बक बक न करें जब बड़े बात पूछें तब जवाब दें या खुद कहना हो तो अदब के साथ कहें।

९—बड़ों से बात करते वक्त उनके सामने न देखें बल्कि नीची नज़र रखकर बात करें।

१०—बराबर वालों के साथ मोहब्बत से पेश आयें और छोटों और नोकरों से नरमी व प्रेम से बात किया करें।

११—कोई खा रहा हो तो उसके मुंह को न ताकते रहें और न वहां खड़े रहें।

१२—चार आदमी बैठे हों तो उनके बीच में होकर न जायें पीछे होकर जायें ताकि किसी के हाथ पर पैर न पड़ जाये।

१३—अगर दो मनुष्य बातें कर रहे हों तो बीच में आकर खड़े न हो जायें।

१४—बड़े जब कोई चीज़ दें तो अदब से लेकर सलाम करें अगर खाने की चीज़ हो तो उसी वक्त न खाने लग जायें।

१५—किसी से फल मेवा मिठाई या पैसा वग़ैरा कभी न मांगें।

१६—किसी के साथ जाने या किसी के घर पर जाकर वह ठहरने की ज़िद्द न करें

१७—दूसरों के घर भूक की शिकायत न करें न इधर उधर कूदते फिरें एक जगह अदब के साथ बैठे रहें, न वहां कोई चीज़ मांगें।

१८—बड़े पुकारें तो खाली "हां" "आया" न कहें बल्कि "हां साहब" कहें इसी तरह छोटों के पुकारने पर नर्मी के साथ "हां भाई" कहें।

१९—बड़ों या मिलने वालों के लिए पान इलायची या और कोई चीज़ लावें तो हाथ से उठा कर न दें बल्कि तश्तरी सामने करदें और जब वे उठालें तो झुक कर सलाम करें।

२०—खाना इस तरह खायें कि शूरवे में उँगली न सनें। अच्छी चीज़ ही को ज्यादा न खायें बल्कि थाली की सब तरकारियों को बराबर बराबर खायें।

२१—जब खाने बैठें तो बड़ों के लुक़मा उठाने के बाद खाना शुरू करें यह नहीं कि पहले ही से खाने लग जायें।

२२—बड़ों के सामने लेटे न रहें न तकिये के सहारे या पैर फैलाकर बैठें।

इस तरह की बहुत सी बातें हैं जो अख़लाक़ और तहज़ीब सिखाने के लिये ज़रूरी हैं। माता पिता ख़ुद सोच सकते हैं, यहां थोड़ी सी बातें नमूने के तोर पर लिख दी गई।

खुश मिज़ाजी।

"ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं॥"

बाज़ घरानों में बच्चे हँसमुख या खुश मिज़ाज होते हैं और बाज़ों में हर वक्त रोनी सूरत बनाये रहते हैं। खुश मिज़ाजी असली ज़िन्दगी की बुनयाद है जो बच्चे हँसमुख हैं वे ज़रूर अपने जीवन में कामयाब होंगे क्योंकि उनकी तबियत में उत्साह होता है। उत्साह से उन्नति होती है। जिन बच्चों की तबियत में उत्साह नहीं वे व्यर्थ अपनी कामयाबी की उम्मीद करते हैं। किसी ने कहा है जिसके पास खुश मिज़ाजी है उसके पास सब कुछ है। इसमें भी माता पिता का असर ही मुख्य है अगर माता पिता हँसमुख हैं तो बच्चे ज़रूर हँसमुख होंगे और माता पिता मोहर्रमी हैं तो बच्चे रोनी सूरत होंगे। जिन घरों में बच्चे रौने होते हैं वहां सुबह से शाम तक कलह रहती है। गृहस्थ का आनन्द तो उस वक्त है कि घर में खुशी ही खुशी नज़र आये और यह जब ही हो सकता है कि बच्चे खुश मिज़ाज हों। इसलिये माता पिता को बच्चों को खुश मिज़ाज परवरिश करना ज़रूरी है। इसके लिये नीचे लिखी बातों पर अमल करना चाहिये—

१—पहली बात तो यह है कि माता पिता अपनी आदत और मिज़ाज को दुरुस्त करें यानी हमेशा धीमी और मीठी आवाज़ से बात चीत करें, बिला ख़ास ज़रूरत कभी गुस्सा न हो। बाज़ माताएं यह समझती हैं कि बिला चिल्लाये और नाराज़ हुये बच्चे नहीं डरते यह भूल है जो मातायें हमेशा

गुस्सा होती रहती हैं उनके बच्चों की तबियत से डर बिलकुल जाता रहता है क्योंकि वे इस नाराजगी के आदी हो जाते हैं वे जब कोई ख़िलाफ़ हुक्म काम करने लगते हैं तो समझ लेते हैं कि माँ चिल्ला लेगी और बस गोया माँ का यह मिज़ाज बच्चों पर रौब रखने के बजाय उनको बेशरम बना देता है अगर माँ ठंडे मिज़ाज की हो और हमेशा नरमी से बोलें तो उसकी एक कड़ी नज़र ही बच्चे के लिए काफ़ी है ऐसी मां को शायद कभी बच्चों पर चिल्लाने की ज़रूरत पड़े, क्योंकि उसकी नज़र या धीरे से "हुश" कर देना मार से बढ़ कर होता है।

२—दूध पीने के ज़माने से ही बच्चों का मिज़ाज़ बनता है यह बच्चे बोल नहीं सकते लेकिन महसूस ज़रूर करते हैं और जब कोई बात बग़ैर उनकी मन्शा या ज़रूरत जाने हुये की जाती है तो उनके मिज़ाज में गुस्सा पैदा होता है और ज़्यादा रोते हैं। औरतों की यह आम आदत है कि जहां बच्चा रोया और उन्होंने दूध पिलाया यह नहीं सोचतीं कि इनके रोने का क्या सबब है। बच्चे के रोने का हमेशा यह मतलब नहीं कि वह भूका है अगर वह पेट के दर्द से रोता है उसे दूध पिलाया जायेगा तो नुकसान होगा इसी तरह कपड़ों का तंग होना, सर्दी गर्मी का लगना किसी चीज़ का चुभना वगैरा कई कारण बच्चे के रोने के हो सकते हैं। इसलिये माताओं को दूध पिलाने से पहले यह सोच लेना चाहिये कि इसके रोने का क्या सबब है। जब सबब मालूम हो जायगा तो उसके रफ़ा होते ही बच्चा हँसने लगेगा बच्चे के हँसमुख होने की शुरूआत इस वक्त से होती है।

३—माता का गुस्से में आकर बच्चों को बुरा भला कहने का असर हमेशा ख़राब पड़ता है अगर बच्चे के क़सूर करने पर

माँ उदास चित्त और रंजीदा हो जाया करे तो इसका फल हमेशा चाहे माफ़िक होता है। प्रेम बड़ी ताक़त है बच्चा जब देखेगा कि उसके काम से माँ को दुख हुआ तो उसके दिल पर इसका ज़रूर असर पड़ेगा।

४—माता हर वक्त हँसमुख रहे छोटे या बड़े बच्चे की जिस वक्त भी माँ पर नज़र पड़े तो माँ मुसकराती नज़र आवे और प्रेम के शब्दों से उसका दिल बढ़ावे।

५—बच्चा रोता है तो अक्सर मातायें चिल्लाने लगती हैं ताकि उनके शोर की आवाज़ में बच्चे के चिल्लाने की आवाज़ दब जाये इस से कोई फ़ायदा नहीं होता बल्कि बच्चा ज़्यादा रोने लगता है यह आदत छोड़ देना चाहिये और बच्चे के रोने का सबब जान कर उसको रफ़े करना चाहिये।

६—माता पिता के काम का समय हो और बच्चा ज़िद करने या रोने लगे तो माता पिता झुंजला जाते हैं और अकसर बच्चे पर नाराज़ होते या मारते हैं लेकिन इससे बच्चा चुप नहीं होता और मजबूरन उनको अपना काम छोड़ना पड़ता है ऐसे मौके पर माता पिता को याद रखना चाहिये कि बच्चा कभी निचला नहीं बैठ सकता वह हर वक्त कुछ न कुछ करता रहेगा, एक माता खाना पका रही थी पिता लिखने पढ़ने का काम कर रहे थे बच्चा रोने लगा पिता गोद में उठाकर अपने कमरे में ले आये और प्यार से बोले बेटा तुम्हारे खिलौने बहुत अच्छे हैं अपनी माँ को दिखा आओ यह कह कर बाप ने एक खिलौना बच्चे को दे दिया बच्चा अपने खिलौने की तारीफ़ सुनकर खुशी खुशी माँ के पास ले गया माँ ने खुश होकर कहा "बेटा खिलौना यहाँ रख दो और एक खिलौना और लाओ बच्चा

फिर बाप के कमरे में आया और दूसरा खिलौना ले गया बच्चा २-३ बरस का था सब खिलौनों के ले जाने में उसे घंटा भर लग गया जब सब खिलौने माँ के पास आगये तो उसने कहा "बेटा एक खिलौना अपने बाबू जी के पास लेजा"। बच्चा उसी तरह खिलौने पीछे लाया इसमें माता पिता दोनों अपने अपने कामों से निबट गये और बच्चे का खेल हो गया। इस तरह बच्चों का ख़्याल हटाकर उनको किसी काम में मशगूल कर देना चाहिये।

७—बच्चे के रोने से माता को कभी नहीं दबना चाहिये जिस चीज़ के लिये बच्चा रोये उसे कभी मत दो अगर रोने से बच्चे को चीज़ दे दोगे तो वह रोने को मनमानी चीज़ मिलने का ज़रिया समझेगा आमतौर पर होता भी ऐसा ही है जब बच्चा रोने लगता है तो पहले माँ मने करती है मने करने पर बच्चा ज़िद करता है इस तरह माँ मने करती जाती है और बच्चा ज़िद करता जाता है आख़िर मज़बूर होकर माँ उसकी ज़िद पूरी करती है यों बच्चों को रोने की आदत हो जाती है। माता ने वह ढंग ही नहीं डाला कि बच्चा हँसी खुशी से कोई चीज़ माँगे और यह उसी वक़्त मुमकिन है कि बच्चे के रोने की परवाह ही न की जाये। इसके अलावा दूसरा काम मूर्ख मातायें यह करती हैं कि बच्चे को चुप होने के लिये किसी चीज़ का लालच देती हैं "बेटा चुप हो जा तुझे नारंगी दूंगी" इस तरह बच्चे को रिशवत की चाट पड़ जाती है। यह दोनों बातें ख़राब हैं बच्चे की आदतें ऐसे सांचे में ढालना चाहिये कि वे फ़ौरन माँ के हुक्म की तामील करें। अगर मातायें पुरानी आदतों को छोड़दें तो यह कुछ मुश्किल नहीं, बच्चे ख़ुद पसन्द होते हैं अपना भला बुरा नहीं समझते जो काम उनको

ख़िलाफ़ मर्ज़ी होता है रोने लगने हैं यहाँ तक कि अगर बच्चे का मुँह धोया या नहलाया जाये तो भी रोने लगते हैं रोते ही माँ फ़ौरन मुँह धोना बन्द करके उसको दूध पिलाने लगती है यही हाल रोज़ाना होता है और उनको रोज़ मुँह धोते वक्त रोने की आदत हो जाती है अगर माता मुंह धोना बन्द करने के बजाय मीठी मीठी बातों से बहलाते हुये उसका मुंह धोना या नहलाना जारी रक्खे तो बच्चा चन्द रोज़ में रोने की आदत छोड़ देगा वह समझ लेगा यह रोज़ का मामूली काम है और हँसते खेलते नहाने लगेगा।

८—बच्चों को चिड़ाने की आदत भी आमतौर पर फैली हुई है माता पिता हँसी खेल में ख़ुद उनको चिड़ाते हैं इससे उनके मिज़ाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है यह आदत तो ऐसी आम हो रही है कि अकसर रिश्तेदार या मिलने वाले भी मोहब्बत की आड़ में बच्चों को हद से ज़्यादा चिड़ाते हैं यहाँ तक की बच्चा रोने और मारने लगता है तब भी अपना अपना बेजा प्यार बन्द नहीं करते। ऐसा दुखदाई प्यार माता पिता को भी बुरा तो मालूम होता है लेकिन लिहाज़ के सबब से कुछ कह नहीं सकते यह आदत अपने या दूसरों के बच्चों के साथ बिलकुल छोड़ देना चाहिये।

९—ज़िद्दी रोने और लाड़ले बच्चों की अकसर यह आदत हो जाती है कि चाहे जिस बात पर ज़रा ज़िद पूरी न हुई फ़ौरन गाल फुला लेते हैं या रूठ कर बैठ जाते हैं। माता फ़ौरन मनाने लगती है और इस तरह उनकी यह आदत बढ़ती ही जाती है ऐसी सूरत में माता को चाहिये कि उनके रूठने या गाल फुलालेने की बिलकुल परवाह न करे और बड़े इतमीनान से चुप रहें ज़रा भी यह ज़ाहिर न होने दें कि उसके

रूठने का उसे कुछ ख़्याल हुआ। उसके आंसुओं की भी परवाह न करें। ऐसे मौक़े पर बजाय मनाने के माँ नरमी के साथ उससे इतना कह दे कि जब तक तू ख़ुश होकर मुझसे बात नहीं करेगा मैं नहीं बोलूंगी। जब बच्चा जान लेगा कि मेरे रूठने या गाल फुलाने से कोई फ़ायदा न हुआ तो दो चार दफ़े के बाद यह आदत छोड़ देगा।

१०—बच्चे जब खेलते कूदते गिर जाते हैं तो दर्द से रोने लगते हैं और उनको चुप करना मुशकिल हो जाता है हालां कि बच्चा अपनी गफ़लत से गिरा और उसके चोट लगी यह उसकी गफ़लत की सज़ा थी। बच्चे के रोते ही माता उसे बुरी तरह उठाती है और बुरा भला कहती है बच्चा और ज़्यादा रोने लगता है और बड़ी देर तक रोता रहता है इससे बच्चे का मिज़ाज भी ख़राब होता है और माता भी दिक़ होती है। सब से अच्छी तरकीब यह है कि माता पिता बच्चे के चोट आने पर नाराज़ न हों बल्कि सिर्फ़ अफ़सोस ज़ाहिर करें। शुरू ही से बच्चों की ऐसी आदत डालें कि वे सहनशील और बहादुर बनें अगर बच्चे के चोट लगने पर अधिक दया प्रगट की जायेगी तो उनमें कायरता आवेगी, अपने बच्चों को सिपाही बनाओ ज़रा ज़रा सी चोट पर अगर तुम उनके साथ ज़्यादा हमदर्दी करोगे तो बच्चे बुज़दिल हो जायेंगे। मेरा भतीजा रामेश्वर दयाल जिसे प्यार में नेपाली कहते हैं एक रोज़ खेलते खेलते गिर पड़ा और रोने लगा। मैंने ख़ुश होकर ज़ोर से कहा "शाबाश बेटा। गिरते हैं शह सवार ही मैदान जंग में" बस यह सुनते ही बच्चा हँस पड़ा और फिर खेलने लगा उसके साथ और बच्चे भी खेल रहे थे अब जब कोई बच्चा गिरता है तो यह मिसरा सुनते ही चुप हो जाता है। बच्चे गिरें तो

कहो बेटा कुछ परवाह नहीं ऐसी चोट का क्या बग़ैरा, इस तरह दिल बढ़ाने से बच्चे हिम्मतवर बनेंगे और तक़लीफ़ की बरदाश्त के आदी होंगे अकसर बच्चा गिर जाता है तो उसे चुप करने को कह देते हैं। "देख चिउंटी मर गई, चुप हो जा।" बच्चा देखता है कि ज़मीन पर कोई चीज़ नहीं इस तरह उसको झूठ की तालीम मिलती है। यह मुनासिब नहीं?

११—जब छोटा बच्चा रोता हुआ आये तो उसे चुप करने की यह अच्छी तरकीब है कि उससे कहा जाये "क्या बात है आओ हम तुम्हारा मुंह धोदें, तब बातें करेंगे।" इस तरह मुंह धोने और धीरे धीरे मीठी मीठी बातें करने से उसका ख़्याल रोने की तरफ़ से हट जायेगा और उसका मिज़ाज ठंडा हो जायेगा हाथ मुंह धोने के साथ ही थोड़ा सा पानी भी पिला देना चाहिये बच्चा थोड़ी देर में हँसने खेलने लगेगा। अगर बच्चे को ऐसे मोक़े पर झिड़का जाय या मारा जायेगा तो इसका नतीज़ा कुछ नहीं होगा बहतर तरकीब यही है कि उसका ख़्याल उस तरफ़ से हटा दिया जाये।

न्याय या इन्साफ़।

एक फ़ारसी कहावत है जिसका अर्थ यह है कि जो बात अपने लिये उसन्द करते हो वही दूसरे के लिये भी पसन्द करो और जो अपने लिये पसन्द नहीं करते वह दूसरे के लिये भी पसन्द मत करो। इन्साफ़ का माद्दा थोड़ा बहुत सब छोटों बड़ों में होता है लेकिन अगर फ़ायदा हो तो लोग यह चाहते हैं कि हमें हो चाहे उससे दूसरेकी हानि होती हो अपने फ़ायदे के साथ इन्साफ़ का ख्याल जाता रहता है। जब बड़ों का यह हाल हो तो बच्चों के लिये क्या कहा जाय बच्चा तो छुटपन

से ही जो चीज उसके हाथ पड़ती है अपने मुह में रखना चाहता है गोया वह यह समझता है कि ब्रह्म एक है और वह मैं हूँ सारे संसार को उठाकर अपने पेट में रख लूं। जब बच्चे बड़े होते हैं तो यह चाहते हैं कि सब चीजें हमें मिल जायें।

अगर शुरू से उनकी यह आदत न रोकी जायेगी तो बड़े होकर वे पक्के स्वार्थी बनेंगे और धीरे धीरे उनका मन ऐसा कठोर हो जायेगा कि अपने अर्थ के सामने किसी के नुकसान या तक़लीफ़ की उनको परवाह न होगी। अर्थ में मनुष्य अंधा हो जाता है फिर उसको बुरा भला नहीं सूझता। मनुष्यजन्म लेकर यदि किसी की भलाई न हुई तो उसका मनुष्य होना ही व्यर्थ है। यह ज़रूरी है कि सब आदमी परोपकारी नहीं हो सकते परन्तु एक जीव के साथ भलाई करना भी संसार की भलाई है स्वार्थी मनुष्य का तो यह हाल हो जाता है कि अपने भाई बन्धों का भी वह नहीं रहता। अर्थ उसका उपास्यदेव हो जाता है फिर उसको संसार में केवल अर्थ ही अर्थ नज़र आता है और उसके लिये वह बुरा से बुरा काम करने से भी नहीं झिजकता इस वास्ते बच्चों में इस आदत का रोकना बहुत ज़रूरी है।

बच्चों की शुरू से ही इस तरह परवरश की जाये कि उनमें ख़ुदगर्ज़ी न आने पाये। बच्चों में मिठाई या खिलौनों से ही यह तालीम शुरू होती है। जो चीज़ भी हो सब बच्चों को बराबर बराबर दी जानी चाहिये, अकसर ऐसा होता है कि लड़की के मुक़ाबले मे लड़के को या बड़े बच्चे के मुक़ाबले में छोटे बच्चे को ज़्यादा दी जाती है यह ठीक नहीं बच्चे बच्चे सब बराबर हैं अगर उन्हें कम ज़्यादा दी जायेगी तो उनमें आपस में बद गुमानी पैदा होगी और वे समझेंगे कि माता

पिता ने हमारे साथ बेइन्साफ़ी की और दूसरे की तरफ़दारी। जब किसी बच्चे की तरफ़दारी की जाती है तो दूसरे को बड़ा दुख होता है परन्तु वह ग़रीब क्या करे यदि उसका मामला राज सभा में हो तो एक अदालत से दूसरी अदालत में दादरसी के लिये अपील करता जाये। यहाँ तो इब्तदाई और इन्तहाई अदालत माता पिता ही हैं जिनके फैसले की कोई अपील नहीं, यक़ीन जानिये जब मैं किसी बच्चे के साथ नाइनसाफ़ी होती देखता हूं तो मुझे बड़ा दुख होता है मेरा अंतःकरण तो यह कहता है कि यदि किसी मज़लूम पर नाइनसाफ़ी होना पाप है तो बच्चे के साथ नाइनसाफ़ी होना उससे भी बड़ा पाप है। माता पिता का धर्म है कि ऐसा कभी न करें जो ज़िम्मेवरी ईश्वर ने उनके सिर पर डाली है उसको भली भांति विचार कर काम करें।

एक भारी भूल यह की जाती है कि अकसर छोटे बच्चे के ज़िद करने पर बड़े बच्चे को अपनी चीज़ देने के लिये मजबूर किया जाता है। फ़र्ज़ करो बड़ा बच्चा गेंद से खेल रहा है छोटा बच्चा गेंद माँगने लगा माता ने बड़े की गेंद लाकर उसको देदी लेकिन वह फिर भी रोता रहा, बड़ा बोला "मैं क्यों दूं उसकी गेंद उसके पास है"। माता ने बच्चे के रोने से दिक होकर बड़े से गेंद छीन कर छोटे को देदी यह माता ने ठीक नहीं किया इसमें माता का तो यह नुक़सान हुआ कि बड़े बच्चे ने उसको तरफ़दारी का मुलजिम समझा, बड़े बच्चे का हक़ छीना गया जिससे उसका माँ और भाई दोनों की तरफ़ से ख़्याल बिगड़ा और छोटे बच्चे की ज़िद पूरी हो गई वह आयन्दा ज़्यादा ज़िद करेगा। ऐसी हालत में दो सूरतें थीं या तो बड़े भाई को बहलाकर और छोटे भाई की

ख़ातिर का ख़्याल दिलाकर माता इस तरह गेंद लेती कि छोटा भी इसको बड़े का प्यार और कृपा समझता अगर बड़ा इस तरह न देता तो छोटे की ज़िद पूरी न करनी थी चाहे वह रोता रहता इस तरह छोटे को आयन्दा बेजा ज़िद करने की हिम्मत न होती और थोड़ी देर बाद अपनी गेंद से खेलने लगता।

यह ज़रूर चाहिये कि जहाँ तक हो सके बच्चों में ऐसे ख़्यालात फैलाये जायें कि वे आपस में चीज़ें लेने देने में कंजूस न बन जायें उदार रहें लेकिन दूसरे की चीज़ बग़ैर पूछे हुये न लें बग़ैर पूछे किसी की चीज़ लेना एक तरह की चोरी है। जब किसी की चीज़ माँग कर ले तो काम करने के बाद उसे वहीं रख दें जहाँ से उठाई हो या देने वाले को दे दें। क़िसी की ली हुई चीज़ ख़राब न करें। इसके लिये बहतर तदबीर यह है कि माता पिता ख़ुद इसपर अमल करें। जब बच्चे देखेंगे कि माता पिता माँगी हुई चीज़ को हिफ़ाज़त से रखते हैं और जब काम हो जाता है तो बिना माँगे वापिस दे देते हैं तो बच्चे अपने आप ऐसा करने लगेगें।

किसी बच्चे की कोई चीज़ दूसरे बच्चे को मिल जाती है तो वह यह समझता है कि यह चीज़ मुझे मिली इसलिये मेरी है और अगर उसका दावेदार कोई न हो तो ऐसा ही होता भी है लेकिन घर में अक़सर यह देखने में आता है कि बच्चे अपनी अपनी चीज़ों को ठिकाने रखने का ख़्याल नहीं रखते अगर कोई चीज़ दूसरे को कहीं पड़ी हुई मिल गई तो फिर वह दावा करने लगता है, ऐसी सूरत में उनको उस फ़ारसी कहावत के मुवाफ़िक़ समझाना चाहिये कि अगर तुम्हारी कोई चीज़ गुम हो जाये तो तुम चाहोगे कि दूसरा तुम्हारी चीज़ तुम्हें दे दे इसी तरह तुमको दूसरे की चीज़

वापिस करना चाहिये बल्कि अगर किसी की चीज़ तुम्हें मिल जाये तो ख़ुद उसको जाकर दो तो दूसरा तुम्हारी चीज़ भी तुम्हें देगा—वग़ैरा।

अगर बच्चों के साथ हमेशा इनसाफ़ किया जायेगा तो बच्चे एक दूसरे के साथ कभी ज़्यादती नहीं करेंगे न ज़्यादा लड़ें भिड़ेंगे क्योंकि वे जान जायेंगे कि कुसूर करने वाला सज़ा पायेगा। जब बच्चे लड़ें और उनमें कोई मुलाज़िम का लड़का हो तो उसके साथ भी न्याय हो, अकसर अमीरों के बच्चे इसीलिये ज़्यादा ख़ुद सर हो जाते हैं वे जानते हैं कि हमारी हिमायत की जायेगी और हम सज़ा नहीं पायेंगे। ऐसे बच्चे बड़े होकर माता पिता का नाक में दम कर देते हैं और अंत में उनकी बदनामी और दुख का कारण होते हैं। ख़ास-तौर पर मातायें अपने बच्चों की बेजा हिमायत करके रात दिन पड़ोसी औरतों से लड़ती रहती हैं वे बच्चों को भी बिगाड़ती हैं और ख़ुद क्लेश मोल लेती हैं उनको इनसाफ़ के मामले में अपने वा दूसरों के बच्चे इकसां समझना चाहिये। याद रक्खो जहाँ इनसाफ़ है वहीं आनन्द है।

अपनी मदद आप करना।

माता पिता का यह काम है कि बच्चों को इस तरह परवरिश किया जाये कि वे संसार में बिला किसी की मदद के अपनी रोज़ी आप कमाने के लायक़ हो जायें किसी के मोहताज न रहें अगर बच्चे इस तरह परवरिश हुये हैं तो सदा सुखी रहेंगे क्योंकि सुख स्वाधीन रहने में है "पराधीन स्वपनेउ सुख नाहीं" जो बच्चा सुस्त है वह दूसरे का मोहताज रहेगा और मोहताजी में सुख कहाँ, इसलिये बच्चों को शुरू से मुस्तैद बनाना चाहिये लेकिन मुशकिल यह है कि मूर्ख मातायें तो

लाड़ ही इसमें समझती हैं कि बच्चों का सब काम अपने हाथ से करें और उनको हर वक़् गोद में लिये लिये फिरें और इनसे भी अधिक मूर्ख वे अमीर लोग हैं जो बच्चों के ख़ुद काम करने में अपनी हतक समझते हैं और सब काम नोकरों से कराकर बच्चों को अपाहज बनाते हैं—इस विषय में नीचे लिखी हिदायेतों पर अमल करना चाहिये।

१—पहली बात यह है कि बच्चों को कभी बेकार न रहने दिया जाय बेकारी से बहुत से अवगुण पैदा हो जाते हैं। हर वक़् काम करते रहना ईश्वरीय नियम है, सूर्य, चन्द्र, सितारे, वायु वग़ैरा हर वक्त गरदिश (चक्कर) में रहते हैं यह सिखाते हैं कि मनुष्य कभी बेकाम न रहे, छोटे बच्चे इस नियम का सब से बड़ा सुबूत हैं वे हमेशा कुछ न कुछ करते ही रहते हैं कभी निचले नहीं बैठते अगर छोटे बच्चे से कह दिया जाय कि चुपचाप बैठा रह तो वह इस हुक्म को सब से बड़ी मुसीबत समझेगा और अगर उसको चुपचाप बैठने के लिये मजबूर करोगे तो रोने लगेगा क्योंकि उसका अन्तःकरण कहता है कि कुछ न कुछ कर, बेकार मत रह। क़िस्सा है कि एक मनुष्य ने हमज़ाद बस में करना चाहा उसके गुरू ने मने किया कि ऐसा मत कर, वह बस में हो जायेगा तो तुझसे हरवक्त पूछेगा कि क्या काम करूँ जो तू चाहेगा वुही वह करेगा लेकिन वह बेकार नहीं रह सकता जब तू उसे काम नहीं बतायेगा तो फ़ौरन तुझे मार डालेगा उस मनुष्य ने नहीं माना और साधन करके हमज़ाद को बस में कर लिया। थोड़े दिन तो वह हर वक्त उसे काम बताता रहा जब उसकी सारी इच्छायें पूरी हो गईं और वह कोई काम नहीं

बता सका तो हमज़ाद ने उसे मार डाला, यह क़िस्सा है लेकिन इसकी सच्चाई को समझना चाहिये, संसार में वुही मनुष्य सफल मनोर्थ होता है जो सुस्त नहीं रहता। अगर किसी से कहा जाये कि तुम्हारी आयु १० वर्ष घटा दी गई है तो वह पसन्द नहीं करेगा लेकिन बेकारी में लोग सारी आयु बिता देते हैं और पछताते नहीं पुरुषार्थी मनुष्य को हमेशा काम में लगा रहना चाहिये, बच्चों को समझाया जाये कि हर वक्त मुस्तेद रहें सोने का आनन्द वुही लेता है जो जागता है और असली आराम वुही पाता है जो काम करता है।

२—जब बच्चा चलने लगे तो बिला ज़रूरत हर वक़् उसे गोद में लिये २ मत फिरो, वह खाना खाने के लायक़ हो गया है तो अपने हाथ से खाना खाने दो, अगर वह धोती बाँध लेता है तो तुम मत बाँधो, उसे किसी खिलोने या और चीज़ की ज़रूरत हो तो ख़ुद लाये, नोकर से न मँगाये, अमीरों के बच्चे नोकरों से सब काम कराने में शान समझते हैं यह ख़्याल बच्चों के दिल से बिलकुल हटा देना चाहिये, उनकी अरदली या हिफ़ाज़त में एक नहीं ५ नोकर रक्खे जायें लेकिन बच्चे अपने शरीर का काम ख़ुद करें, मदरसे जायें तो अपना छाता और बस्ता अपने हाथ में ले जायें नोकर को न दें, इसी तरह अपने शरीर का काम ख़ुद करें, यह आदत उनको अपने जीवन में बहुत लाभदायक होगी और वे सदा आराम पायेंगे, मतलब यह कि बच्चों को इस तरह परवरिश किया जाय कि वे सिपाही बनें और जफ़ाकशी की ज़िन्दगी बसर करें प्राचीन समय में माता पिता यही आदर्श सामने रखकर

बच्चों को पालते थे और बड़े २ सूरवीर, पराक्रमी और प्रतापी पुरुष बनते थे।

३—बच्चों को मुस्तेद और तन्दुरुस्त रखने के लिये वरज़िश भी बहुत ज़रूरी है वरज़िश करने से शरीर में फुरती रहती है खाना ख़ूब हज़म होता है और रगपट्ठे मज़बूत होते हैं, खेल कूद भी वरज़िश है, अंगरेज़ी खेलों में बच्चों के लिये क्रिकिट और फुटबोल के खेल बहुत मुफ़ीद हैं लेकिन पटा लकड़ी, गदका, फ़री, डंड मुगदर वग़ैरह ऐसी उम्दा वरजिशें हैं जिनके फ़ायदों को अंगरेज़ी खेल भी नहीं पा सकते, बच्चों के शुरू से ही पढ़ने और खेलने के वक्त मुक़र्रर कर देना चाहिये, इसी तरह लड़कियों को वरजिशें भी हैं, वैदभूशन पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा की तसनीफ़ें बहुत उम्दा हैं, लड़कियों को भी वरज़िश कराना चाहिये लेकिन सब से ज़रूरी बात यह है कि लड़कियों से घर का सब काम काज कराया जाय, अमीर घ़राने की लड़कियाँ आम तौर पर सुस्त हो जाती हैं क्योंकि घर का काम धंदा नोकरनियाँ करती हैं इस तरह लड़कियाँ सुस्त होकर आयन्दा तकलीफ़ पाती हैं, आनन्द काम करने में है सुस्त रहने में नहीं, एक समय था कि राजकन्यायें रिषी पुत्रों को ब्याही जाती थीं और वे इस सम्बन्ध में रनवास में रहने से अधिक सुख मानती थीं, पति सेवा लड़कियाँ उसी वक्त कर सकती हैं जब वह बचपन से काम करने की आदी होंगी पति सेवा पर ही उनका सुख निर्भर है इसलिये माता पिता को इस विषय पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

४—बच्चों को जो काम बताया जाये वह उनके साहस को

देखकर बताया जाय ताकि वे यह न कह सकें कि हम इस काम को नहीं कर सकते, नेपोलियन बोनापार्ट एक वकील का लड़का था परन्तु वह अपने पुरुषार्थ से फ्रांस का ज़बरदस्त बादशाह हुआ उसका यह कथन था कि संसार में कोई काम असंभव नहीं इसलिये "असंभव" शब्द कोश से निकाल देना चाहिये और यह सच है पुरुषार्थ से सब कुछ हो सकता है—संसार में कोई काम ऐसा नहीं जिसको मनुष्य मज़बूत इरादे से करना चाहे और न हो, जो लोग सफल मनोार्थ नहीं होते तो इसका कारण उनके इरादे में कमी होता है इसलिये बच्चों को शुरू से ही इस तरह शिक्षा देना चाहिये कि वे किसी काम से हताश कभी न हों और यह समझ लें कि कोशिश से सब कुछ हो सकता है, अगर माता पिता यह असूल (नियम) नज़र के सामने रखकर बच्चों को तालीम देंगे तो आख़िर में बच्चों को संसार में चमकते हुए देखकर ख़ुश होंगे।

ग़रूर (घमंड)

माता पिता अपनी मूर्खता से बच्चों में यह आदत पैदा करने के कारण होते हैं, बचपन में यह आदत छोटी २ बातों से शुरू होती है अगर इसको रोक थाम न की जाये तो घमन्डी बच्चा घमन्डी आदमी बनता है माताओं को ख़ास तौर पर याद रखना चाहिये कि घमन्डी को कोई प्यार नहीं करता इसलिये अपने बच्चों में यह आदत पैदा ही न होने दें, इस बारे में नीचे लिखी हिदायतें याद रखना चाहिये :—

१—सब से पहली बात यह है कि बच्चों को ऐसी तालीम दी जाय कि उनमें अहम भाव पैदा न होने पाये इसकी कई सूरतें हैं।

(१) अमीर या बड़े घराने के बच्चे अपने को दूसरों से बड़ा समझने लगते हैं बड़ी ज़ात के बच्चे छोटी ज़ात वाले को शुरू से ही नफ़रत की नज़र से देखने लगते हैं वग़ैरा—बच्चों को पहला सबक़ यह सिखाओ कि अमीर ग़रीब छोटे बड़े ईश्वर की नज़र में सब एक हैं, जाति का झूठा घमन्ड अच्छा नहीं।

हर को भजे सो हर का होई।
जात पांत पूछे ना कोई॥

२—बाज़ माता पिता अपने बच्चों की चालाकियों का ज़िक्र उनके सामने हँस २ कर करते हैं जिससे बच्चे घमन्डी हो जाते हैं, आम तौर पर माता पिता ख़्याल करते हैं, कि छोटे बच्चे समझते नहीं यह बड़ी भूल है माता पिता जितना ख़्याल करते हैं बच्चे उससे ज़्यादा समझते हैं, जब बच्चे का ज़िक्र किया जाता है तो वुह बड़े ग़ौर से सुनने लगता है। चाहे सब बात उसके समझ में न आती हो लेकिन इतना ज़रूर जान लेता है कि मेरी तारीफ़ हो रही है, इसी तरह ग़ैर आदमी के सामने बच्चे को किसी क़सूर पर बुरा भला भी नहीं कहना चाहिये इससे उनके दिल से शर्म का ख़्याल जाता रहता है और वे आख़िर में पक्के बेशरम हो जाते हैं।

३—बच्चों के यह ज़हन नशीन रक्खो कि जो काम अच्छा है उसका करना उनका फ़र्ज़ है अगर बच्चों के अच्छा काम करने पर तारीफ़ करने लगोगे तो उनमें दिखावे की आदत पड़ जायेगी और वे हर काम शाबाशी और तारीफ़ की नियत से करेंगे यह ख़्याल बच्चे के दिल में कभी पैदा न होने दो, अच्छा काम करने पर ख़ुशी ज़ाहिर करो जिससे

उनका दिल बढ़े लेकिन ख़ुशी इस अक़्लमन्दी के साथ ज़ाहिर करना चाहिये कि उनमें "अहम भाव" पैदा न होने पावे, इसी तरह दूसरों को भी अपने बच्चों की तारीफ़ उनके सामने मत करने दो। बाज़ लोगों की यह आदत होती है कि जहाँ कहीं वे जाते हैं उनके बच्चों की तारीफ़ करके ख़ुशामद करने लगते हैं वे केवल माता पिता को ख़ुश करना चाहते हैं इस बात का ख़्याल नहीं कि बच्चों पर इसका क्या असर पड़ेगा बल्कि मूर्ख माता पिता अपने बच्चों की तारीफ़ सुनकर और ख़ुश होते हैं, मातायें तो ज़्यादातर इस बात को नहीं समझती आम तौर पर देखने में आता है कि ग़रज़मन्द औरतें माताओं से बच्चों की तारीफ़ और ख़ुशामद करके अपना मतलब बना ले जाती हैं माताओं को ध्यान रखना चाहिये कि किसी को अपने बच्चों की तारीफ़ उनके सामने न करने दें।

४—ज़ेवरों का शौक़ भी बच्चों को घमन्डी बनाने में मदद देता है, लड़कों को ज़ेवर बिलकुल नहीं पहनाना चाहिये और लड़कियों को बहुत मुख़्तसिर पहनाया जाये लेकिन ज़ेवर पहनाने के बाद बच्चों की तारीफ़ कभी नहीं करना चाहिये इस तरह उनमें ख़ुदनुमाई की आदत पैदा हो जाती है माताओं में यह आदत आम होती है कि बच्चों को ज़ेवर कपड़ा पहना कर उनकी तारीफ़ करती हैं इसका माताओं को ख़्याल रखना ज़रूरी है क्योंकि इस तरह बच्चों में कई तरह के ऐब पैदा होने का अंदेशा रहता है।

५—दिखावे की आदत बच्चों में पैदा न होने देना चाहिये ज़ेवर पहनाना तो ज़रूरी नहीं लेकिन कपड़े ज़रूरी हैं और वे भी साफ़ होने चाहियें इसका सब से अच्छा उपाय यह है कि

बच्चों को शुरू से साफ़ रक्खा जाये तो उनको मैले रहने से अपने आप नफ़रत हो जायेगी। हाथ पैर धोना नहलाना दाँत साफ़ करना बालों में कंघा करना साफ़ कपड़े पहनाना सफ़ाई के लिये कराया जाये जब मैलेपन से उनको नफ़रत हो ज़ायेगी तो ख़ुदनुमाई का ऐब अपने आप पैदा न होगा। बच्चों को शुरू से ही अच्छी तरह समझा देना चाहिये कि साफ़ हवा (१) साफ़ पानी (२) साफ़ खाना (३) साफ़ कपड़े (४) और साफ़ मकान जिस में सूर्य की रोशनी गहरी आती हो तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी हैं और तन्दुरुस्त रहना मनुष्य का धर्म है यथा-

छन्द रूप सवैया ३२ मात्रा।

जो तनदुरुस्त रहता है बस,
वह मज़ा जन्म का पाता है।
सब अर्थ, धर्म, फल काम, मोक्ष,
हमको इससे मिल जाता है॥ १॥
तनदुरुस्त जो नहीं जक्त में,
वह मुरदा ही तुल्य हुआ है।
काम न कोई कर सकता है,
दीपक घर का गुल्य हुआ है॥ २॥
हाँ तनदुरुस्त नर नारी को,
लाखों न्यांमत ख़ुद आती हैं।
नित लछमी घर में बास करै,
फिर रोग बिथा भग जाती हैं॥ ३॥
तनदुरुस्त बालक को पढ़ना,
लिखना चट पट आता ही है।

रोगी निर्बल सबक़ हमेशा,
भूलभूल खुद जाता ही है ॥ ४ ॥
जो तनदुरुस्त बैपारी हो,
वह रोज़गार भी उच्च करै।
या छोटा बड़ा काम कोई हो,
उसे पूर्ण सच मुच्य करै ॥ ५ ॥
थिर जप तप नियम योग भोग,
सब तनदुरुस्त ही करता है।
पर निर्बल शक्ति हीन नर जो,
हो जीते जी ही मरता है ॥ ६ ॥
पस तनदुरुस्त खुद रहो और,
बच्चों को तनदुरुस्त करना।
यों जो चाहोगे सो पावोगे,
रिद्धि सिद्धि घर में भरना ॥ ७ ॥
यह सब के हित की बात सुना,
कर "प्रभु" इच्छा से "रक़म" किया।
हाँ जिसका ध्यान नहीं इस पर,
है उसने बेहद सितम किया ॥ ८ ॥

किफ़ायत शआरी

जो लोग फुज़ूल ख़र्च होते हैं वे हमेशा तक़लीफ़ में रहते हैं यों तो हर ज़माने में ही फुज़ूल ख़र्ची का नतीजा अच्छा नहीं होता लेकिन इस ज़माने में तो ख़ास तौर पर ज़रूरत है कि मनुष्य किफ़ायत शआर हो हर चीज़ महंगी हो गई है जो ग़ल्ला १ मन मिलता था अब पाँच सेर मिलने लगा हर चीज़ में मुलम्मासाज़ी और भड़क है मज़बूती और पायेदारी जाती

रहो जिस को देखो नुमाइश का शौक़ीन है ज़रूरयात ज़िन्दगी बेतरह बढ़ गई पहले ३) माहवार में आदमी गुज़र कर लेता था अब १०) माहवार में भी पेट नहीं भरता। ऐसी हालत में अगर बच्चों को किफ़ायत से रहने की शिक्षा नहीं दी जायेगी तो वे अपनी ज़िन्दगी में हमेशा दुख पायेंगे।

फ़ुज़ूल ख़र्च बच्चे में और बहुतेरे ऐब पैदा हो जाते हैं पहला नुक़सान तो यह होता है कि बच्चे चटोरे हो जाते हैं जहाँ उनको पैसा मिला और वह बाज़ार में पहुँचे बाज़ार की मिठाइयाँ वग़ैरा खाने से रुपये के नुक़सान के साथ बड़ा नुक़सान यह होता है कि उनकी तनदुरुस्ती बिगड़ जाती है। चटोरी ज़बान दौलत का ज़ियान (नुक़सान)—हाज़मे की असली ताक़त कम होने से भूक नहीं लगती फिर तो यह हाल हो जाता है कि अच्छी चीज़ मिल गई तो कुछ खा लिया वरना जी में कुढ़ते रहे। जब ख़र्च को पैसे नहीं मिलते तो चोरी करने धोका देने और झूठ बोलने की आदत मामूली बात हो जाती हैं। इस बारे में नेचे लिखी हुई हिदायतों पर ख़ास तौर पर माता पिता ध्यान दें।

१—किफ़ायत शआरी गुण है और कंजूसी बड़ा भारी ऐब है जो मनुष्य कंजूस होता है उससे बढ़कर कोई ज़लील नहीं क्योंकि वह किसी का नहीं उसका दीन ईमान रिश्ता नाता जो कुछ है पैसा है न उसको किसी से प्रेम होता है और न वह भरोसे के लायक़ है वह अपने लिये ही कुछ ख़र्च नहीं कर सकता तो दूसरे का भला करना कहाँ इसलिये इस बात का ख़ास तौर पर ध्यान रखना चाहिये कि बच्चे कंजूस न हो जायें बेशक इस समय में खाने और पहनने की सब चीज़ें महंगी हैं लेकिन खाने पहनने में कमी करना

किफ़ायत शआरी नहीं कंजूसी है जिन चीज़ों के बग़ैर हम तनदुरुस्त नहीं रह सकते उन पर ख़र्च करना लाज़मी ख़र्च हैं जो ज़रूरी है लेकिन वह चीज़ें जिनके बग़ैर काम चल सकता है और जिनकी ज़रूरत हमने अपने आप ख़्वाहमख़्वाह बढ़ा ली हैं बन्द कर देना चाहिये यह किफ़ायत शआरी है। बच्चों को किफ़ायत शआर बनाओ ऐसा न हो कि "चाम जाये पर दाम न जाय" के मसले पर अमल करने लगें।

२—क़र्ज़ लेने या चीज़ उधार लेने की आदत बहुत बुरी है। क़र्ज़ लेने वाला क़र्ज़ देने वाले का गुलाम होता है। एक अंगरेज़ी मसला है (He who goes a borrowing goes a sorrowing यानी जो कुछ मांगता है रंज उठाता है। बच्चों में यह आदत पैदा हो जाना बड़ा ख़तरनाक है माता पिता को मुनासिब है कि न खुद क़र्ज़ लें और न बच्चों में यह आदत पैदा होने दें और उनको समझाते रहें कि तकलीफ़ उठाते हुये भी क़र्ज़ या उधार कोई चीज़ कभी न ली जावे।

३—बच्चों को किफ़ायत शआरी सिखाने के बहुत से तरीक़े हैं जिनपर माता पिता खुद ग़ौर कर सकते हैं लेकिन ख़ास बात यह है कि बच्चों को शुरू से ही हिसाब रखने का आदी बनाया जाये। रुपये पैसे का बाक़ायदा हिसाब रखाया जाय और पाई तक का भी हिसाब पूंछा जाये। छोटे बच्चों को पैसे देने का तरीक़ा अच्छा नहीं इससे उनकी आदत बिगड़ जाती है छोटे बच्चों को मोके मोके से रूपये या पैसे दिये भी जायें तो उनके हिसाब की निगरानी माता पिता खुद करें और खुद ही उनके ख़ज़ानची रहें।

खाने पीने की चीज़ों पर उन्हें ख़र्च न करने दें जब कुछ जमा हो जाय तो या तो उस रुपये को किसी ऐसे काम में लगा दें जिससे वह बढ़े या कोई मुफ़ीद चीज़ ले दें इसी तरह बड़े बच्चों को जो कुछ दस्त ख़र्च के लिये हर महीने दिया जाय उसका उनसे हिसाब पूछा जाय ताकि यह मालूम हो सके कि बच्चे फ़ुज़ूल ख़र्च तो नहीं करते हैं। हिसाब रखने की यह आदत उनको आयन्दा ज़िन्दगी में बहुत मुफ़ीद साबित होगी।

४—बच्चे शुरू से ही माँगने के आदी हो जाते हैं। पहले घर वालों से रुपया पैसा या चीज़ माँगते हैं और फिर बाहर वालों से माँगने लगते हैं धीरे धीरे यह आदत इतनी मज़बूत हो जाती है कि माँगने में उन्हें कोई शर्म नहीं मालूम होती बच्चों को समझाया जाये कि माँगने वाला हमेशा ज़लील रहता है इस आदत को जितनी बुराई की जाय कम है कबीर साहब ने तो यहाँ तक कहा है—

माँगन भलो न बाप से, जो बिध राखे टेक।
माँगन हारो पातुकी, सदा लजावे भेक॥

पुत्र पिता की आत्मा होता है पिता से माँगना माँगना नहीं कहलाता लेकिन माँगना बाप से भीबुरा है। बच्चों में न माँगने की आदत उनको किफ़ायत शआर बनाने में पूरी मदद देगी। जो बच्चे माता पिता से नहीं माँगते माता पिता को ख़ुद उनकी ज़रूरयात की फ़िक्र रहती है इसी तरह जो मनुष्य किसी से नहीं माँगता उसकी फ़िक्र ईश्वर को होती है।

नोकर चाकर

नोकरों के रखने में बड़ी अहतियात रखनी चाहिये क्योंकि जिन घरों में नोकर होते हैं बच्चे ज़्यादातर उनके ही पास रहते हैं और उनका बच्चों पर बड़ा भारी असर पड़ता है। यह मानी हुई बात है कि भलाई के बनिस्बत बुराई करने पर बच्चे फ़ौरन तय्यार हो जाते हैं और नोकर आम तौर पर अनपढ़ होते हैं जब माता पिता ही बच्चों के परवरिश करने के तरीक़ों से नावाक़िफ़ हुये तो यह अनपढ़ नोकर क्या जानें यह लोग तो झूठ बोलने, गाली देने और बच्चों के ख़ुश करने के लिये हर तरह का धोका देने को खेल समझते हैं इस तरह नोकरों के सबब से बच्चों का बड़ा भारी नुक़सान हो जाता है। बड़े घरानों में तो यह हालत देखी गई है कि बच्चा दूध पोने या खाने के अलावा हर वक्त नोकरों के पास रहता है जब अनपढ़ और मूर्ख नोकरों की सुबह से शाम तक सोहबत रही तो बच्चा क्या भलाई सीख सकता है इस लिये इसका ख़ास तौर पर ख़्याल करके नीचे लिखो हिदायतों पर अमल करना चाहिये वरना अच्छी से अच्छी शिक्षा बुरे नोकरों के सबब से व्यर्थ जायेगी।

सब से पहली बात यह है कि नोकर कितना ही अच्छा हो आख़िर अनपढ़ होगा उसका संग कदापि लाभदायक नहीं हो सकता इसलिये माता पिता को चाहिये कि बच्चों से इतना प्रेम बढ़ा लें कि वे हर वक्त माता पिता के सामने किसी न किसी काम में लगे रहें क्योंकि बच्चे नोकरों से जितने अलग रहेंगे उतना ही उनके लिये अच्छा है। अगर ऐसा न हो सके तो जहां तक बने नोकरों के साथ बच्चों को कम रहने दिया

जाये। माताओं को ख़ास तौर पर ध्यान देना चाहिये कि ईश्वर ने जो अमानत उनको सुपुर्द की है उस को अपने ही चार्ज में रक्खें अपने ज़रा से आराम के ख़ातिर नोकरों को देकर न बिगड़ने दें अगर वह ऐसा न करेंगी तो ईश्वर को जवाब देना होगा और इस ज़िन्दगी में ही उस ज़रा से आराम के बदले में औलाद के बिगड़ने से उन पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ेगा और फिर ज़िन्दगी भर पछताती रहेंगी।

अगर नोकर रक्खे बग़ैर काम न चलै तो देखो कि उसका चाल चलन अच्छा हो। चाल चलन बिगड़ते भी देर नहीं लगतो है इस लिये नोकरों के चाल चलन की बराबर निगरानी करने की ज़रूरत है। लड़के जो नोकर रक्खे जाते हैं वे और भी ज़्यादा ख़तरनाक हैं अगर इनके चाल चलन की निगरानी से ग़ाफ़िल रहे तो अंत में बहुत दुख उठाना पड़ेगा।

२—नोकर को रखते वक्त देख लो कि गाली बकने की तो उसमें आदत नहीं है या बात चीत करते वक्त वह बुरे शब्द तो नहीं बोलता है। अकसर लोगों की ऐसे भद्दे और गाली के शब्द बोलने की आदत पड़ जाती है जिसका असर सुनने वालों पर पड़ता है और बोलने वाले को आदत होने से ख़्याल भी नहीं होता कि बुरे शब्द मुंह से निकले हैं। ऐसे नोकर को न रक्खा जाये या कम से कम उस वक्त तक न रक्खा जाये जब तक कि वह इस आदत को छोड़ न दे।

३—अकसर होता है कि बच्चे के हाथ से कुछ नुक़सान हो जाये या कोई चीज़ टूट जाय तो बच्चा उस नुक़सान होने से डर जाता है या नोकर पहले उसे डरा देते हैं और फिर उससे कहते हैं कि अच्छा डरो मत कह देना कि इसे बिल्ली तोड़ गई

है। बच्चा मार के डर से इस तरकीब को ग़नीमत समझता है और फिर कभी ऐसा हो जाये तो इसी तरकीब को काम में लाता है इस लिये नोकर को अच्छी तरह हिदायत कर देना चाहिये कि बच्चे को कभी किसी तरह का धोखा देना न सिखायें और अगर उससे कोई कोई नुक़सान हो जाये तो कभी उसके छिपाने की तरग़ीब बच्चे को न दें बल्कि उससे कहें माता से साफ़ कह देना कि भूल हो गई माता माफ़ कर देगी, डरो मत।

४—नोकर का फ़र्ज़ है कि बच्चे को ऐसा काम कभी न करने दें जिस को उसके माता पिता नापसन्द करते हों। मूर्ख नोकर तो ऐसे काम से रोकने के बजाय उल्टा बच्चे को तरग़ीब देते हैं और कहते हैं "डरो मत—यहां कोई नहीं है—हम मां से नहीं कहेंगे"। इस तरह बच्चा माता पिता के मने किये हुये कामों को करना सीख जाता है। नोकर ऐसा करने में बच्चे का लाड़ समझता है और क्यों न समझे जब कि उससे भी अधिक मूर्ख माता पिता को मालूम होता है कि बच्चे ने ऐसा किया तो वे हंस कर टाल देते हैं नोकर को अच्छी तरह समझा दिया जाये जिन बातों को माता पिता मने कर चुके हों वे काम उनके पीछे भी बच्चे को न करने दें और अगर ऐसा हो जाय तो बच्चा और नोकर दोनों को सज़ा दी जाये।

५—नोकर अकसर बच्चों को बहलाने के लिये भूत प्रेत की या दूसरी ख़राब कहानियां सुनाते हैं। भूत प्रेत की कहानी से बच्चों के दिलों में डर बैठ जाता है और दूसरी कहानियों का असर बच्चों पर अच्छा नहीं पड़ता। ऐसा न करने की नोकरों को सख़्त हिदायत कर देना चाहिये क्योंकि यह अनपढ़ लोग ऐसी कहानी बच्चों को नहीं सुना सकते जो अच्छी भी

हों और उनसे बच्चे कुछ सीख भी सकें।

६—अक़सर नोकर बच्चों को बाज़ार में ले जाते हैं और मिठाई फूल वग़ैरा ला देते हैं इस तरह बच्चे चटोरे व ज़िद्दी हो जाते हैं और मनमानी चीज़ खाने से उनके हाज़मे पर ख़राब असरपड़ता है। नोकरो को समझा दिया जाये कि ऐसा कभी न करें।

७—ग़रज़ यह है कि अगर बच्चों को नोकरों के पास रखना है तो नोकरों को पहले अच्छी तरह उन सब बातों की तालीम दो जो बच्चों को सिखाना चाहते हो अगर ऐसा न करोगे तो बच्चों की अच्छी से अच्छी तालीम ख़राब नोकरों के सबब से बिगड़ जायेगी और अंत में पछताना पड़ेगा।

संगी साथी

हम नशीने तो अज़ तो बेह बायद।
ता तुरा अक़्लो दीं बिअफ़ज़ायद॥

यह फ़ारसी शेअर बादशाह औरंगज़ेब का कहा हुआ है, इसका अर्थ यह है कि तेरा साथी तुझसे अच्छा होना चाहिये ताकि तेरा धर्म और बुद्धि बढ़ती रहे, वह फ़िर कहता है :—

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद।
सोहबते तालेह तुरा तालेह कुनद॥

अर्थ—तू नेक सोहबत से नेक होगा और बद सोहबत से बद होगा, यह दोनों वाक्य सुनहरी अक्षरों में लिखने के योग्य हैं। संगति का प्रभाव इतना ज़बरदस्त होता है कि साधारण तौर पर ख़्याल में भी नहीं आ सकता इसके वर्णन करने में गुसाईं तुलसीदास जी ने कमाल किया है, वह फ़रमाते हैं;—

चौपाई (रामायण)

सुनि आश्चर्य करौ जनि कोई।
सत्तसंगति महिमा नहिं गोई॥ १॥

जलचर थलचर नभचर नाना।
जे जड़ चेतन जीव जहाना॥ २॥

मति कीरति गति भूति भलाई।
जब जेहि यतन जहाँ जेहि पाई॥ ३॥

सो जानव सत्संग प्रभाऊ।
लोकहु वेद न आन उपाऊ॥ ४॥

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥ ५॥

सत्संगति मुद मंगल मूला।
सोई फल सिधि सब साधन फूला॥ ६॥

शठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई॥ ७॥

बिधि वश सुजन कुसंगति परहीं।
फणि मणि सम निज गुण अनुसरहीं॥ ८॥

बिधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥ ९॥

सो मोसन कहि जात न कैसे।
शाक बणिक मणि गुण गण जैसे॥ १०॥

दोहा-बंदों संत समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलि गत शुभ सुमन जिमि, सम सुगंध कर दोय॥१॥

इससे 'अच्छा वर्णन देखने में नहीं आया। गुसाईंजी कहते हैं कि जो कुछ, जिस तरह, और जहाँ कहीं जिस किसी को मिलता है संगति से मिलता है। चेतन्य का तो कहना ही क्या जड़ वस्तु भी इसके प्रभाव से ख़ाली नहीं, कितना सच्चा बयान है। असल में संसार में जो कुछ भलाई बुराई नज़र आती हैं वह संगति ही का फल है। जब सब कुछ संगति ही पर निर्भर हैं तो अगर माता पिता बच्चों की संगति पर ध्यान न दें तो कैसी भारी भूल होगी अब इस विषय में जो कुछ नीचे लिखा जाता है यदि माता पिता इस पर अमल करेंगे तो उनका और उनकी सन्तान का भला होगा :—

१—माता पिता प्रेमवश अपने बच्चों और उनके साथियों के चलन पर शक करने के आदी नहीं होते और उनको उस समय तक इस बात पता भी नहीं लगता जब तक कि बच्चे बिगड़ न चुकें, बच्चों को कभी ऐसा दृश्य मत देखने दो जिसका असर उनके चाल चलन पर बुरा पड़े। बच्चों को कभी ऐसी कोई बात न सुनने दो जिसका असर उनके चाल चलन पर बुरा पड़े। जब बच्चे ऐसी कोई बात देखने और सुनने न पायंगे तो बचे रहेंगे। इसके लिये यह सब से ज़रूरी है कि जहाँ तक हो सके बच्चों को हर वक़्त अपनी नज़र के सामने रक्खो।

२—इस बात की ख़ास तौर पर निगरानी रक्खो कि तुम्हारे बच्चों के साथी कौन कौन हैं क्योंकि उन साथियों में अगर एक भी ख़राब होगा तो बहुत जल्दी सब को ख़राब कर देगा। माता पिता को चाहिये कि बदचलन लड़के से ऐसा डरें जैसे प्लेग के कीड़े से डरते हैं। प्लेग का कीड़ा तो १० दिन में अपना असर करके बीमारी पैदा

करता है लेकिन बद सोहबत लड़का वह कीड़ा है जिसके असर की रफ़तार बिजुली की तरह है अगर वह दस मिनट भी अच्छे बच्चों के शामिल रह गया तो उन सब को बिगाड़ देगा इसलिये जब तक पूरा इतमीनान न कर लो किसी लड़के को अपने बच्चों का साथी न होने दो, एक लड़का तुम्हारे बच्चों के साथ खेलता है तुम उसका इतमीनान कर चुके हो वह और लड़कों में भी खेलने जाता है क्या ख़बर कि कल उसमें कोई ऐब हो जाय इसलिये इस बारे में नीचे लिखी बातों का ख़ास तौर पर ख़्याल रखना ज़रूरी है।

१—(१) तुम्हारे बच्चों के पास जो साथी आयें वे तुम्हारे सामने पढ़ते या खेलते रहें।

(२) उनसे कभी ग़ाफ़िल मत होओ बराबर उनकी हरकतों पर निगरानी रक्खो।

(३) अपने बच्चों के साथ सिर्फ़ उन बच्चों को रहने दो जिनके माता पिता भी तुम्हारी तरह बच्चों की निगरानी रखते हों।

(४) जहाँ तक हो सके बच्चों के साथी कम से कम हों।

३—जब बच्चे बाहर जाने लायक़ हो जाते हैं तो माता पिता हर वक़्त उनके साथ नहीं रह सकते ऐसी सूरत में उनकी निगरानी की सख़्त ज़रूरत है। जहाँ तक हो सके घर के आदमी निगरानी रक्खें तो बहुत अच्छा है मसलन बड़े लड़के जब पढ़ने या खेलने जायें तो छोटों को अपने साथ ले जायें। जहाँ ऐसा न हो वहाँ होशयार और नेक चलन नौकर की बड़ी ज़रूरत है जो हर वक़्त बच्चों के साथ रहे

अगर बच्चों को बिला निगरानी छोड़ देगे तो ज़रूर बिगड़ जायेंगे, यह ज़रूर है कि हर शख़्स नौकर नहीं रख सकता लेकिन ग़रीब से ग़रीब आदमी भी जिसको बच्चों के पढ़ाने का फ़िक्र होता है दो चार रुपये माहवार ट्यूशन में मदरसे की फ़ीस वग़ैरः में ख़र्च करता है। उनको यह ख़्याल कर लेना चाहिये कि बच्चों के चाल चलन की निगरानी का इन्तज़ाम किये बग़ैर जो रुपया वे पढ़ाई पर ख़र्च करते हैं वह अकार्थ जायेगा इसलिये अगर तनहा इन्तज़ाम न कर सकें तो पड़ोसियों या रिश्तेदारों को मिलकर नौकर का इन्तज़ाम ज़रूर करना चाहिये। अकसर बड़े ख़ानदानों में जहाँ आमदनी कम और ख़र्च ज़्यादा होता है बच्चों की तालीम और उनके चाल चलन की निगरानी से आमतौर पर ग़फ़लत की जाती है। पूंछा जाय की भाई इन बच्चों की तरफ़ से क्यों ऐसे सोये पड़े हो तो ज़वाब मिलता है गुंजायश नहीं इतने बच्चों का इन्तज़ाम कैसे करें। यह सुनकर बड़ा दुख होता है इन्हीं घरानों में शादी ग़मी के और आये दिन के दूसरे संसारिक कार्यें घराने के नाम के मुताबिक़ किये जाते हैं चाहे क़र्ज़ लें या फ़ाके करें बल्कि इन्हीं बच्चों की शादियों में इकदम हज़ारों रुपये ख़र्च करते हैं लेकिन उनकी तालीम पर धीरे धीरे सैकड़ों रुपये ख़र्च करने की भी गुंजायश नहीं होती। इसका असली कारण यह है कि वे शादी विवाह या और कामों में ख़र्च करना ज़रूरी फ़र्ज़ और तालीम पर ख़र्च करना मामूली बात समझते हैं यह बड़े शोक का विषय है। ऐसे माता पिताओं से निवेदन है कि वे कृपा करके औलाद पैदा करना बन्द कर दें और यदि औलाद पैदा करते हैं तो

बच्चों की तालीम और उनकी निगरानी पर ख़र्च करना उतना ही ज़रूरी समझें जितना कि रोज़ाना दाल रोटी का ख़र्च ज़रूरी है उनको याद रखना चाहिये कि आज कल इस्कूल या बोरडिंग हाउस वग़ैरः में ९० फ़ी सदी लड़कों में बुरी आदतें पड़ जाती हैं इसलिए ऐसे इन्तज़ाम के बग़ैर उनकी औलाद बरबाद हो जायगी क्योंकि जहाँ चाल चलन बिगड़ा सब कुछ बिगड़ा।

४—सब से बड़े बच्चे के सुधार पर सब से ज़्यादा ध्यान दो क्योंकि अगर बड़ा बच्चा बिगड़ गया तो छोटे बच्चों की भलाई के लिये जितनी भी कोशिश की जायगी उसमें पूरी कामयाबी कभी नहीं होगी इसलिये माता पिता को चाहिये कि सबसे बड़े का सबसे ज़्यादा ख़्याल रक्खें अगर उन्होंने बड़े बच्चे की ख़ातिर ख़ासतौर पर तकलीफ़ की और उसको सुधार लिया तो छोटे बच्चों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा और माता पिता का बोझ बहुत हल्का हो जायगा।

५—बच्चों की उस उम्र तक बराबर निगरानी करो जब तक कि भलाई बुराई को अच्छी तरह समझने न लग जायें लेकिन फिर भी ज़रूरत है कि दर परदा उनकी निगरानी का ख़्याल रक्खो और उनकी तन्दुरुस्ती और ख़्यालात को जाँचते रहो क्योंकि नई उम्र में बुराई का असर फ़ौरन हो जाता है।

६—जिन लड़कों को बाहर भेजो तो उस उम्र में भेजो कि जब तुमको इतमीनान हो जाय कि तुम्हारी हिदायतों को वे अच्छी तरह अनुभव कर चुके हैं और बुरी संगति के असर से बचे रहने के लायक़ हो गये हैं लेकिन फिर भी बिल-

कुल ग़ाफ़िल मत हो जाओ क्योंकि बिला निगरानी आज़ादी की हवा ख़राबी का सबब हो जाती है दर परदा उनके और उनके सथियों के हालात की टोह रक्खो।

७—आँखों की चमक क़ायम रहना और आवाज़ का भारी न होना लड़कों की तन्दुरुस्ती की ख़ास पहचान है अगर इनमें फ़र्क़ देखो तो समझ लो कि कुसंगति की हवा लग गई और फ़ौरन उसका इन्तज़ाम करो। ऐसी और बहुत सी बातें हैं जो इस विषय में लिखी जा सकती हैं लेकिन यहाँ जो कुछ लिखा गया है वह इशारे के तौर पर है। हर एक माता पिता अपने बच्चों की बाबत ख़ुद बेहतर सोच समझ सकते हैं। यथा—

वर्ण सवैया मत्तगयन्द २३ वर्ण

पारस से छुइ जाय जो लोहा, तो सोना बनै चित आनियेजू।
सूर्य विलोकत पाथर को, तब लाल बनै अनुमानियेजू॥
चन्दन वृक्ष समीप लगे तरु, चन्दन होत बखानियेजू॥
नोन की खान गिरे बनै नोन ही, संगति को फल जानियेजू॥१॥

प्रेम और परोपकार

न यारों में रही यारी न भईयों में वफ़ादारी ।
मोहब्बत उठ गई सारी अजब यह दौर आया है ॥



मतौर पर लोग इसे पढ़ पढ़ कर समय को दोष देते हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि जब मुहब्बत का बीज ही नहीं बोया जायगा तो फल फूल कहाँ से आयेंगे । बच्चों को परोपकार की शिक्षा बचपन ही से मिलनी चाहिये परोपकार की जड़ प्रेम में है जो प्रेम रहित है वह स्वार्थी होगा और स्वार्थी से दूसरे का भला कब हो सकता है, प्रेम ही वह वस्तु है जो मनुष्य को प्रमार्थी बनाती है यदि बच्चों को प्रेम रूप परवरिश करोगे तो वे परोपकारी होकर अपने और जगत के कल्याण का कारण होंगे वरना ख़ुदगरज़ होकर संसार में ख़ुदग़र्ज़ी फैलायेंगे ।

१—"अहिंसा प्रमोधर्म" हिंसा न करना मनुष्य मात्र का सब से बड़ा धर्म है । ईश्वर ने मनुष्य को जीव मात्र की रक्षा के लिये पैदा किया है भक्षा के लिये नहीं, अहिंसा में सब धर्म आ जाते हैं यही प्रेम भाव का मूल मंत्र है इस लिये सब से पहली बात यह है कि बच्चों को पक्का अहिंसक बनाओ । बच्चे नादान होते हैं हर काम को खेल समझते हैं इसलिये कीड़े मकोड़े को मसल डालना भी खेल जानते हैं

किसी को कोड़ा या लकड़ी मार कर ख़ुश होते हैं क्योंकि उनको यह ज्ञान नहीं होता कि किसी को मारने से तकलीफ़ होती है बच्चों का हृदय शुद्ध होता है अगर उनको समझाया जाय कि "दूसरे को मारना पाप है" "जैसे तुम्हें पीटने से तकलीफ़ होती है वैसे ही दूसरे को होती है" "जो जीव हम में है वही सब जानवरों में है" वग़ैरः तो सब बच्चे फ़ौरन समझ जायेंगे। अगर बच्चा तुम्हें नोचता है तो तुम भी धीरे से उसे नोच कर बतला दो कि नोचने से तकलीफ़ होती है अगर बच्चे ने किसी के लकड़ी मार दी तो उसे भी लकड़ी से सज़ा दो और कहो कि ऐसे ही उसके भी लगी होगी बच्चा फिर नहीं मारेगा। बच्चों को जान बूझ कर बेरहम बनाया जाता है जब बच्चा किसी को मारता है तो माता पिता यह उसके बाल चरित्र समझ कर हँस देते हैं यह नहीं सोचते कि इस हँसी और लापरवाही का नतीजा यह होगा कि बच्चे के दिल से दया का भाव जाता रहेगा और बड़े होने पर दूसरे को सताना उसकी आदत बन जायेगी। पुराने ज़माने की बात है कि किसी बादशाह ने अपने लड़के को उस्ताद के सुपुर्द किया जब शहज़ादा पढ़ लिख चुका तो एक रोज़ उस्ताद ने घोड़े पर सवार होकर शहज़ादे को हुक्म दिया कि वह उसके घोड़े के पीछे पीछे भागे। शहज़ादा जब पीछे रहा तो उस्ताद ने कोड़े भी जमाये, मतलब यह कि शहज़ादा यह जान ले कि घोड़े के साथ भागने और कोड़े खाने में क्या तकलीफ़ होती है। यह तरीक़ा है जिससे बच्चों को जीव मात्र के साथ हमदर्दी की शिक्षा दी जा सकती है।

१—एक अंगरेज़ी मसला है charity begin at home

यानी ख़ैरात घर से शुरू होती है इसी तरह प्रेमभाव भी घर से शुरू होना चाहिये। बच्चे को अपने भाई बहन और घर वालों से प्रेम करना सिखाओ इसके बाद वे अपने साथियों से मुहब्बत करेंगे और सिलसिला इसी तरह बढ़ता जायगा। छोटी छोटी बातों में बच्चे एक दूसरे से नाराज़ हो जाते हैं छोटे बच्चे तो ज़रा सी देर में भूल जाते हैं और फिर खेलने लगते हैं लेकिन बड़े बच्चे फ़ौरन आपस में "खुट" कर लेते हैं और अकसर दिनों तक एक दूसरे से नहीं बोलते इस तरह आपस में प्रेम भाव की कमी होती जाती है। जब कभी बच्चों में ऐसी लड़ाई हो तो फ़ौरन आपस में सलाह करा कर प्रेम भाव क़ायम कर कर देना चाहिये अगर शुरू से ऐसा नहीं किया जायगा। तो उनकी यह आदत बढ़ती जायगी।

३—हर घर में आम तौर पर ऐसा होता है कि अगर पत्थर दीवार या और किसी चीज़ से बच्चे के चोट लग जाय तो उसे चुप करने के लिये झूटमूट उस चीज़ को मारते हैं ऐसा नहीं होना चाहिये यह सब जानते हैं कि दीवार को तकलीफ़ नहीं होती लेकिन बच्चा यह नहीं जानता वह तो यही समझता है कि इसने मुझे मारा इसलिये इसे सज़ा दी गई, ऐसे मौक़े पर बच्चे को मामूली फ़हमायश कर देना काफ़ी है अगर उस चीज़ को भी सज़ा दी जायगी तो बच्चे के दिल में बदला लेने का ख़्याल पैदा होगा चाहे क़सूर उसी का हो अमीरों के लड़कों में तो यह खुदसरी की आदत बहुत ही बढ़ जाती है क्योंकि वह बेजान ही नहीं जानदार चीज़ को भी उनके हुक्म के साथ ही सज़ा

दी जाती है और यह तो आम बात है कि घर में कोई पालतू जानवर हो बच्चा उसे छेड़ता रहे तो माँ देख देख कर हँसती रहेगी लेकिन अगर जानवर दिक़ होकर बच्चे को खसोट ले तो माँ फ़ौरन जानवर को मारेगी और बच्चे को प्यार करेगी हालांकि क़सूर बच्चे का था बच्चा जब किसी को छेड़े फ़ौरन मना कर दिया जाय, बच्चों को तो शुरू से यह सबक़ सिखाया जाय कि क्षमा करें अगर किसी ने उनको मारा हो या नुक़सान भी किया हो तो उसको माफ़ करें यह न समझो कि क्षमा की आदत बड़े साधन से प्राप्त होती है बेशक बड़े होने पर ऐसा ही होता है लेकिन मेरा अपना तजरुबा है कि जो काम हमारे लिये कठिन है बच्चे सहज में सीख जाते हैं क्योंकि उनके दिल के आइने पर जंग नहीं होती हमको जो यम नियम साधन करने पड़ते हैं वे उस जंग के दूर करने के लिये करने पड़ते हैं, बच्चों पर तजरुबा करो और इस सच्चाई को देख लो।

४—हसद से कीने से बुग्ज़ो नफ़रत से,
दीन दुनियां में है बुराई।
हसद को कीने को बुग्ज़ो नफ़रत को,
छोड़ो गर तुम तो हो भलाई॥
नहीं है दुशमन कोई तुम्हारा,
जो दिल को तुम पाक साफ़ कर लो।
जहाँ के इन्सां नज़र में आने,
लगें तुम्हारे हक़ीक़ी भाई॥

बच्चों में जब झगड़ा होता है तो माता पिता फ़ैसला करते हैं यह काफ़ी नहीं बच्चों को इस तरह आपस में मिलजुल कर

रहना सिखाओ कि वे अपने झगड़ों का फ़ैसला आपस में ही कर लिया करें, जब उनको प्यार मुहब्बत से रहना सिखाया जायगा और लड़ाई होने पर ऐसी सज़ा दी जायगी कि वे साथ साथ न खेलने पावें तो धीरे धीरे बच्चे आपस में ही फ़ैसला करना मुनासिब समझेंगे, एक रोज़ दो बच्चे लड़ने लगे मेरी भतीजी हरवती दौड़ी हुई आई और दोनों बच्चों के बीच में खड़ी होकर भोलेपनसे बोली।

लड़ाई लड़ाई माफ़ करो।
बिल्ली का गू साफ़ करो॥

मुझे बेतहाशा हँसी आ गई मैंने उसे उठा कर प्यार किया और दोनों बच्चे फिर खेलने लगे, इसपर कुछ हाशिया चढ़ाने की ज़रूरत नहीं जब माता पिता अपने बच्चों में यह प्रेम भाव देखेंगे वे ख़ुद इस आनन्द को अनुभव कर लेंगे।

५—इस बात का पूरा ख़याल रक्खा जाय कि बच्चों में ईर्षा (हसद) पैदा न हो इसका मुख्य उपाय यह है कि माता पिता सब बच्चों पर सम दृष्टि रक्खें, हर एक चीज़ बराबर बराबर बाँटी जाय किसी को यह ख़याल करने का मौक़ा न मिले कि मुझे चीज़ कम मिली, बात बात में फ़र्क़ पड़ जाता है अगर किसी बच्चे को सज़ा की तौर पर कोई चीज़ कम दी जाती है तो माता पिता कह देते हैं कि तेरे भाई को हमने चीज़ दी तुझे नहीं देते ऐसा कहने से बच्चे के दिल में भाई की तरफ़ बुरा ख़याल होता है, केवल यह कहा जाय कि तूने क़सूर किया इस वास्ते तुझे चीज़ नहीं दी जायगी, जब दूसरा बच्चा पैदा होता है तो बड़े बच्चे को यह ख़याल होता है कि अब मेरी पहली सी ख़ातिर नहीं

होती बल्कि अकसर माता पिता हँसी में यह भी कह देते हैं कि "अब तेरा लाड़ इतना नहीं होगा" ऐसा कभी नहीं कहना चाहिये बच्चे के नाज़ुक दिल पर चोट लगती है और वह छोटे भाई या बहन के लाड़ को ईर्षा की नज़र से देखने लगता है, बड़े बच्चे को उसकी ताक़त के माफ़िक़ छोटे बच्चे की सेवा के काम पर मुक़र्रर करो उससे कहो यह तेरा छोटा सा भाई है यह कुछ नहीं समझता यह चल फिर नहीं सकता हम भी इसका सब काम करते हैं तू भी किया कर फिर यह तेरी तरह बड़ा हो जायगा तब तेरे साथ खेला करेगा, इस तरह जब बड़ा बच्चा देखेगा कि मुझे छोटे बच्चे का ज़िम्मेवार किया जाता है तो उसको खुशी होगी और अपने आप बजाय ईर्षा के उसकी फ़िक्र रक्खेगा और दोनों में ज़्यादा प्रेम होगा, अगर बच्चा और कुछ काम न कर सकता हो तो छोटे के पास ही बिठा दो और कह दो कि यह जागे तो हमसे कह देना या इसकी मक्खी उड़ाता रहना, नहीं तो तेरे छोटे भय्या की नींद उचट जायगी और रोवेगा, बच्चा हमदर्दी के साथ खुशी खुशी काम करेगा और जब माता पिता उनकी हमदर्दी को देखकर ख़ुश होंगे तो उनमें और भी प्रेम बढ़ेगा।

६—बच्चे यही चाहते हैं कि सब कुछ हम ही ले लें यह ख़ुदग़र्ज़ी है अगर बच्चे के दिल में यह आदत मज़बूत हो जायगी तो बड़ा होकर वह इसका बुरा नतीजा उठायेगा इसलिये शुरू ही से बच्चों में इस ख़्याल के मिटाने की कोशिश करना चाहिये, लाड़ले बच्चों में यह आदत ज़्यादा होती है, माता, पिता, भाई, बहन, नोकर चाकर सब को तकलीफ़ देते हैं वे चाहते हैं कि हमारी ख़ुशी का हर एक ख़्याल रक्खे

और हम किसी की परवाह न करें ऐसे बच्चे बड़े होकर ज़लील रहते हैं क्योंकि ख़ुदग़रज़ हमेशा ज़लील रहता है उसको केवल अपना मतलब नज़र आता है और उसका कोई एतबार नहीं करता इसलिये बच्चों को शुरू ही से इस तरह तरबियत करो कि यह आदत उनमें न होने पाये।

१—अगर बच्चा कोई चीज़ मँगाना चाहे वह उसी के पैसे की हो अपने सब बहन भाइयों को बराबर बराबर बाँटे अकेला कभी न खाये।

२—अगर कोई कुछ चीज़ खा रहा हो तो बच्चा उसकी तरफ़ न ताके या किसी के घर जाकर पैसा या खाने की चीज़ न माँगे। वग़ैरा—

७—बच्चों की पहली तालीम बहुत कुछ नज़र और इशारों से होती है, दूध पीने वाला बच्चा बात चीत समझने से पहले अपनी माँ की नज़र से ही सबक़ पढ़ता है वह अपनी माता के दिल का भाव उसकी सूरत से जान लेता है क्योंकि दिल का ख़्याल सूरत पर ज़ाहिर हो जाता है चेहरा दिल का आइना है और बच्चों में ख़ास तौर पर यह अनुभव शक्ति ज़्यादा होती है और क्यों न हो पुत्र माता पिता की आत्मा है, माता बच्चों को मुसकराती नज़र आवेगी तो बच्चे ज़रूर हँसमुख होंगे, हँसमुख होना दिली ख़ुशी पर निर्भर है और ख़ुशी दिल में उसी वक़्त होगी कि जब प्रेम होगा, बच्चों को हर वक़्त हँसते हुये ख़ुश नज़र आओ ताकि वे प्रेम स्वरूप परवरिश हों।

८—बदज़बानी की बाबत पहले लिखा जा चुका है लेकिन अकसर देखा जाता है कि माता पिता लाड़ प्यार में ख़ुद

बच्चों को ऐसी बातें सिखाते हैं जैसे। "तू चमार है," "बनिये झूठे होते हैं" "बामन बच्चा कभी न सच्चा जब सच्चा तब दग़म दग़ा" "मुसलमान बेईमान" वग़ैरा वग़ैरा ऐसी बातों से बच्चों के दिल में हिक़ारत पैदा होती है और किसी ज़ात के लिये हिक़ारत रखना बहुत बुरा है। नीच से नीच ज़ात में अच्छे से अच्छे आदमी होते हैं और ऊंची से ऊंची ज़ात में बुरे से बुरे आदमी होते हैं इस के अलावा काम सब बराबर है कोई ज़ात छोटी बड़ी नहीं सोसायटी को सब कामों की बराबर ज़रूरत है फिर बच्चों को किसी ज़ात से नफ़रत दिलाना कितना बुरा है अगर भंगी अपना काम छोड़ दे तो ब्राह्मण देवता को ख़ुद अपने लिये भंगी बनना पड़े। इसी तरह अंगहीन पुरुषों से अकसर बच्चे "काना" "लूला" "अंधा" या "लंगड़ दीन टके के तीन" वग़ैरा शब्द कहने के आदी हो जाते हैं इसकी बच्चों को सख़्त हिदायत कर देना चाहिये। किसी का दिल दुखाना बहुत बुरा है एक फ़ारसी मिसरा है। "दिल म्याजार हरचे ख़्वाही कुन" यानी चाहे जो कर लेकिन किसी का दिल मत दुखा। हथियार का घाव समय पाकर भर जाता है लेकिन शब्द का घाव हमेशा हरा रहता है। गुसाईं तुलसीदासजी ने फ़रमाया है।

"बशीकरण एक मंत्र न तजिये बचन कठोर"।

बच्चों को यह शिक्षा दो कि हमेशा हर एक के साथ मीठी और धीमी आवाज़ से बोला करें और इसका सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि माता पिता सबसे प्रेम के साथ बातचीत करें।

६—जब बच्चे दिल से किसी का बुरा नहीं चाहेंगे। हर एक के साथ प्रेम से बोलेंगे तो यथाशक्ति वे दूसरों की मदद

करके सच्चे परोपकारी और धर्मात्मा बनेंगे। परोपकार की तालीम छोटी छोटी बातों से शुरू होती है जब बच्चे घर के कामों में माता पिता और घर वालों को मदद दिया करेंगे तो बड़े होकर वे दूसरों की तन मन और धन से सहायता करेंगे। माता बीमार है तो बच्चा उसका काम करे पानी पिलाये, दवा दे, छोटे बच्चे को खिलाये। माता के हाथ से कोई चीज़ गिर जाये उसे उठाकर देदे। बूढ़ी अम्मां का हाथ पकड़ कर वह जहाँ घर में जाये ले जाये। बड़ा बच्चा छोटे छोटे बच्चे की चीज़ों का ख़्याल रक्खे ऐसी छोटी छोटी बहुत सी बातें हैं जिनसे बच्चों को दूसरों के सहायता करने की तालीम दी जा सकती है। जहाँ घर में नोकर चाकर होते हैं तो बच्चे आमतौर पर सब काम नौकरों से कराते हैं और माता पिता भी इसी को लाड़ और अमीरी की शान समझते हैं कि उनके बच्चे कुछ न करें इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे सुस्त होकर हमेशा तकलीफ़ पाते हैं। मुस्तैद आदमी सदा सुखी रहता है जो नौकरों के मोहताज हैं वे अपाहज हैं मैं जब तक तालिबइल्म रहा अपने कमरे की आप झाड़ु दिया करता था और अब भी मुझे नोकर की की हुई सफ़ाई पसन्द नहीं आती अकसर ख़ुद करता हूं या सामने खड़े रह कर कराता हूं। घर में नोकर हों तो वे अपना अपना काम करें लेकिन बच्चों की ऐसी आदत डालो कि वे अपना अपना काम ख़ुद करें बड़ों की टहल सेवा नौकरों को न करने दें बल्कि ख़ुद करें। अमीर लोग यह न समझें कि उनके बच्चों की काम करने से शान घट जायगी। अमीर का लड़का भी ब्रह्मचारी है और ग़रीब का भी। इसलिये जो ब्रह्मचारी

के धर्म हैं बच्चों को सिखाना चाहिये चाहे वे अमीर हों या ग़रीब।

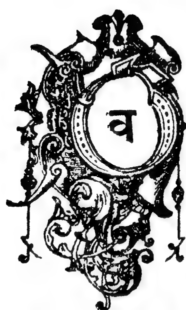
१०—अगर बच्चे अपने साथियों के साथ मुहब्बत से पेश आयें, नौकरों पर हमेशा मेहरबान रहें, घर के बड़े बड़े बूढ़ों की हर काम में मदद करें और घर के बीमारों की सेवा करने के आदी हो जायें तो समझ लो कि वे संसार मात्र का उपकार कर सकेंगे। ऐसे काम करने में इस बात का ख़्याल रक्खा जाय कि बच्चे तारीफ़ सुनने या शाबाशी पाने के लिये तो ऐसा नहीं करते हैं उनको समझाया जाय कि अच्छे काम को अच्छा समझ कर करें यह न सोचें कि कोई हमारी तारीफ़ करेगा। बच्चों को जो कुछ समझाओ तो उस वक़्त तक बराबर निगरानी रक्खो जब तक कि वे पूरे तौर पर न समझ जायें, फ़र्ज़ करो एक ग़रीब आदमी आया तुमने बच्चे को समझाया कि ग़रीब को पैसा देना चाहिये अगर वह उसको देने के लिये पैसा तुम से मांगे तो समझ लो कि ग़रीब के लिये असली हमदर्दी अभी बच्चे की तबियत में पैदा नहीं हुई जब बच्चा अच्छी तरह समझ लेगा और यह बात उसके दिल में बैठ जायेगी कि ग़रीब को पैसा देना चाहिये तो वह तुमसे नहीं मांगेगा बल्कि अपने जमा किये हुये पैसों में से फ़ौरन दे देगा।

ऐसे बहुत से तरीक़े हैं जिनको माता पिता ख़ुद सोच सकते हैं। अगर इन तरीक़ों से बच्चों की परवरिश किया जायेगा तो बच्चे सच्चे परोपकारी और प्रेम स्वरूप होकर अपने जीवन में परम आनन्द के भागी होंगे। किसी ने सच कहा है।

मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका संसार के लिये॥

शिक्षा

तालीम



व ही माता पिता धन्य हैं जिनकी संतान सुशिक्षित, बलवान, और धार्मिक है क्योंकि जीवन का आनन्द ऐसी सन्तान पर ही निर्भर है यह तीनों बातें इकसां ज़रूरी हैं, यदि सन्तान में इनमें से एक भी गुण कम है तो हम उसके माता पिता को धन्यवाद देने को तैय्यार नहीं, क्योंकि पूर्ण सुख तीनों गुणों के होने पर ही मिल सकता है, शरीर रक्षा और धार्मिक विषय अलग लिखे जा चुके हैं यहाँ हम शिक्षा पर अपने विचार प्रगट करेंगे।

शिक्षा तो असल में बच्चे का जन्म होते ही प्रारम्भ हो जाती है इस विषय में पहिले लिखा जा चुका है कि माता का चेहरा और पिता की मुस्कराहट बच्चे के पहले पाठ हैं जो भाव माता पिता के चेहरे से प्रगट होगा वही बच्चा अनुभव करेगा और उसकी शिक्षा होती जायगी परन्तु यहाँ शिक्षा से वह शिक्षा मुराद है जो पठन-पाठन की सूरत में दी जाती है, जब बच्चे बड़े हो तो उनको उत्तम से उत्तम शिक्षा देना माता पिता का ख़ास फ़र्ज़ है, यही सब से बड़ी दौलत है जो माता पिता को अपने बच्चों को देना चाहिये, शिक्षा बिना सन्तान

बिलकुल अंधी है शिक्षा देना उसको सूझता करना है जिससे वह संसार में देख सके कि मैं क्या हूँ और मेरा क्या फ़र्ज़ है, यदि माता पिता ने लाखों की दौलत छोड़ी और शिक्षा न दी तो निष्फल है, एक देशी कहावत है—

"पूत सपूत तो क्यों धन संचै।
और पूत कपूत तो क्यों धन संचै"।

यह कितनी सच्ची बात है यदि सन्तान योग्य है तो आप धन कमा लेगी हमें धन छोड़ने की ज़रूरत नहीं और सन्तान कपूत है तो लाखों का धन उड़ा देगी बल्कि वह धन उसके बिगाड़ का कारण होगा इसलिये जो माता पिता बच्चों की तालीम पर ध्यान न देकर इस विचार में धन जमा करने की धुन में लगे रहते हैं कि इस धन से सन्तान आनन्द में जीवन बिता देगी वे भूल कर भी ऐसा न सोचें और आँख खोल कर देखें कि विद्या हीन सन्तान धन पाकर और भी ज़्यादा बिगड़-ती है धन छोड़ो तो सुशिक्षित सन्तान के वास्ते छोड़ो वरना मरते वक़्त सब धर्म अर्थ लगा दो—"विद्या बिन नर पशु समाना" पशुवत सन्तान धन का क्या करेगी यदि दोगे तो मिट्टी में मिला देगी और तुमने जो उसके कमाने में परिश्रम किया था वह व्यर्थ जायगा बल्कि जो पाप कर्म तुम्हारे धन को पाकर तुम्हारी औलाद करेगी उस पाप का तुमको भी भागी होना पड़ेगा क्योंकि परिश्रम का ब्याज भी चाहिये, इस वास्ते ऐ धनवान माता पिताओ यदि ईश्वर ने तुमको धन दिया है तो उसको सन्तान को शिक्षा में ख़र्च कर दो तुम्हारी सन्तान को वह धन सौ गुना होकर मिलेगा, विद्या के बराबर संसार में कोई धन और बल नहीं इसी विद्या से आज यूरुप व अम-रीका देशों के निवासी सारे संसार पर यहाँ तक कि हवा और

पानी पर भी राज्य कर रहे हैं, हर एक माता पिता को यह याद रखना चाहिये कि बच्चों को शिक्षा देने में उनके सारे फ़र्ज़ (धर्म) आ जाते हैं अगर उन्होंने अपनी सन्तान को भर मक़-दूर शिक्षा दिलाई तो सन्तान के साथ सब कुछ किया और जो अनपढ़ रक्खा तो कुछ भी न किया यदि ईश्वर के यहाँ अपना धर्म पूरा न करने वालों से जवाब तलब किया जाता है तो ऐसे माता पिता बिना सज़ा पाये न बचेंगे ।

आज कल स्कूल या कालिजों में जो शिक्षा दी जाती है वह अधूरी है इसलिये इस समय माता पिता के सामने सब से बड़ा प्रश्न यह है कि किस प्रकार की शिक्षा बच्चों को दी जाय जो उनकी आयन्दा ज़िन्दगी में काम आये और वे विद्या और शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त कर सके ।

सब से ज़रूरी बात यह है कि तालीम का असली मक़सद तालीम पाने वाला समझ जाय अगर यह न हुआ तो तालीम से कोई फ़ायदा नहीं, शिक्षा का असली मक़सद यह है कि मनुष्य हर बात को असलियत को जाने अपने धर्म को पहचाने और उसके आचरण और तहज़ीब दुरुस्त हो, शिक्षा यही नहीं है कि केवल ज़बानों को सीख लिया जाय यह तो सिखाने से तोते मैना भी सीख सकते हैं शिक्षा असल में वह है कि जिससे मनुष्य की जिसमानी दिमाग़ी और आत्मिक उन्नति हो, अब हम नीचे यह बतलायेंगे कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली में ख़ास ख़ास ख़राबियाँ क्या हैं और उनकी किस तरह दुरुस्ती की जा सकती है ।

१—हमारे यहाँ तालीम का मक़सद ग़ुलामी समझा जाता है यानी हर शख़्स यह चाहता है कि मेरा लड़का अँगरेज़ी

पढ़ कर बड़ी से बड़ी नौकरी करे यही तालीम का मक़सद समझ रक्खा है, अँगरेज़ी पढ़ना तो आज कल बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह राज्य भाषा है लेकिन अँगरेज़ी पढ़कर नौकरी ही चाहना ठीक नहीं. इतनी नोकरियाँ कहाँ से आयेंगी एक महाशय ने बी. ए. पास किया, बहुतेरी कोशिश की कहीं नोकरी नहीं मिली, उन्होंने एक ट्रेक्ट लिखा—"बी. ए. बना के क्यों मेरी मिट्टी ख़राब की" अब सोचिये कि अगर तालीम दिला कर मिट्टी ख़राब की तो तालीम दिलाने वाले ने की, तालीम ने नहीं, हिन्दुस्तान की आबादी इतनी बड़ी है कि अगर सब हिन्दुस्तानी तालीम पाकर नोकरी की तलाश में संसार भर में फैल जायँ तो भी सब को नोकरी न मिले और करोड़ों बेकार रहें फिर बतलाइये जब हर शख़्स नोकरी चाहेगा तो सिवाय मिट्टी ख़राब होने के और क्या फ़ल हो सकता है, माता पिता ग़ौर करें कि बच्चों को नौकरी कराने में वे क्या लाभ समझते हैं, परिश्रम सुख के लिये किया जाता है और नोकरी में सुख कहाँ पराधीन स्वपनेहु सुख नाहीं" इसके बाद दूसरा सवाल लाभ का है, छोटे से छोटे पेशे वाला घर बैठे रुपया रोज़ पैदा कर लेता है इधर बी. ए. एम. ए. २०–३० की तनख़ाह पर मारे मारे फिरते हैं अब हुकूमत को लीजिये कहते हैं कि नोकरी में हुकूमत है लेकिन जब नोकरी वाला ५ पर हुकूमत करके ५० की हुकूमत सहता है तो हुकूमत का क्या सुख रहा, पेशे वाला चाहे २ पर ही हुकूमत करे लेकिन उसको कहीं हाँजी २ करने की ज़रूरत नहीं असल में सुख, लाभ और हुकूमत तीनों बातें नोकरी में नहीं बल्कि दस्तकारी के पेशों और दूसरे कामों में हैं इस लिये माता पिता को

चाहिये कि नोकरी की धुन छोड़ दें और बच्चों को पढ़ा लिखा कर दूसरे पेशों में डालें, हर काम के लिये तालीम की ज़रूरत है इसलिये तालीम पाकर हर काम करना चाहिये, पुश्तों से नोकरी करते २ ,गुलामी के संस्कार हम में भर गये हैं और हम दूसरे पेशों को करना बेइज़्ज़ती समझने लगे हैं लेकिन जब पढ़े लिखे आदमी यह सब काम करने लगेंगे तो यह सब काम इज़्ज़त के हो जायँगे, माता पिता अच्छी तरह याद रक्खें कि उनकी सन्तान नोकरी से कदापि सुखी और धनवान नहीं हो सकती, होगी तो दूसरे कामों से होगी।

२—चूंकि माता पिता आमतौर पर तालीम देने का मक़सद नोकरी समझते हैं इसलिये सब बच्चों को इकसां तालीम दिलाते हैं इससे बड़ा भारी नुक़सान होता है, सब बच्चों की तबीयत अलग २ होती हैं, सगे भाइयों के हीं स्वभाव एक से नहीं होते जब उनको शिक्षा एक सी दी जायगी तो वे कैसे उसको पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकेंगे, मिसाल के तौर पर देखिये, एक घर में चार भाई हैं सब का स्वभाव अलग अलग है, एक डाकृरी पढ़ना चाहता है दूसरा मशीन का काम पसन्द करता है, तीसरे को खाती के काम का शौक़ है और चौथा पटा लकड़ी खेलने और घोड़े पर चढ़ने से .खुश होता है अब अगर बड़े को डाकृरी पढ़ाओगे तो नामी डाकृर बनेगा दूसरा इंजीनियर होकर नाम पैदा करेगा, तीसरा खाती की बदौलत बड़े कारख़ाने का मालिक हो जायगा और चौथा सिपाही भरती होकर एक दिन फ़ौज का कमान्डर होगा, यह चारों "रायसाहब" के लड़के हैं जो जाति के ब्राह्मण और डिप्टी कलकृर रह चुके हैं,

यदि "राय साहब" अपने लड़कों को ख़ल्लासी, खाती और सिपाही बनाने में अपनी बेइज़्ज़ती न समझें तो यही लड़के किसी दिन इंजीनियर सेठ और जनरल होकर "राय-साहब" के ख़ान्दान का नाम रोशन करेंगे और ख़ुद आनन्द का जोवन भोगेंगे, अगर "रायसाहब" ने इन कामों को कराना बेइज़्ज़ती समझा और लड़कों को एन्टरेन्स एफ़. ए. पास कराने की धुन में लगे रहे तो यह लड़के संसार में कोई तरक़्क़ी न कर सकेंगे अगर गिरते पड़ते मिडिल एन्टरेन्स पास भी कर लेंगे तो उमर भर दफ़्तरों में ख़ाक छानते फिरेंगे और जब इस समय में ५ सेर का आटा और ५ छटाँक का घी मिलता है तो ३०-४० की तनख़्वाह में वे कब ख़ुश रह सकते हैं बल्कि बड़ा भाई डाक्टर हो गया है तो वह भी ३ ग़रीब भाइयों की मदद करते २ सुखी न रह सकेगा इस वास्ते सब बच्चों को एक ही लकड़ी से हाँकना मुनासिब नहीं, सब के स्वभाव व रुचि अलग २ हैं जिस बच्चे की रुचि जिस काम की तरफ़ हो उसको वही काम सिखाना और पढ़ाना चाहिये, जब बच्चे काम सीखने लायक़ इब्तदाई शिक्षा पा चुके तो बहुत होशयारी के साथ इस बात को देखा जाय कि उसकी रुचि किस काम की तरफ़ है और वह काम उसे सिखाया जाय, रुचि के अनुसार जब शिक्षा दोगे तो बच्चे बड़े ख़ुशी के साथ उसको ग्रहण करेंगे और बहुत जल्दी २ तरक़्क़ी करते जायँगे, जब बच्चे की शिक्षा के किसी अंग की तरफ़ रुचि नहीं होती तो उसके पढ़ाने या सिखाने में बच्चे की आयु का बहुत सा हिस्सा व्यर्थ नष्ट हो जाता है और फिर भी पूरी सफलता नहीं होती, यह बात माता पिता थोड़ी सी

तकलीफ़ से मालूम कर सकते हैं कि बच्चे की रुचि किस काम की तरफ़ है।

३—प्रथम सुख्य निरोगी काया, जीवन का आनन्द ही आरोग्यता में है अगर मनुष्य के पास सब कुछ हो और आरोग्यता का आनन्द न हो तो सब कुछ व्यर्थ है, संसार का सारा सुख शरीर के साथ है जब शरीर ही अच्छा नहीं तो संसार का आनन्द कैसा, लेकिन अफ़सोस है, कि माता पिता पढ़ाने की धुन में बच्चों के शरीर का जैसा होना चाहिये ख़याल नहीं रखते आज कल के मदरसों में इस बात का ख़याल नहीं कि बच्चों की तन्दुरुस्ती कैसी रहनी है खेल का वक़्त रक्खा भी जाता है तो ४० मिनट का एक घंटा अब सोचिये छोटे २ बच्चों को ५ घंटे की मेहनत और ४० मिनट का खेल कब उनके शरीर दुरुस्त रह सकते हैं, फ़ुटबाल, क्रिकिट, होकी, जमनासटिक वग़ैरा के खेलों में भी सब बच्चों का हिस्सा लेना असम्भव है, क्योंकि वहाँ फ़ीस का सवाल है दूसरे यह ज़रूरी नहीं कि मदरसे का हर एक बच्चा शरीक हो असल में शरीर रक्षा मदरसे की शिक्षा का अंग होना चाहिये जिस तरह तीसरे, छटे या बारहवें महीने पढ़ाई का इम्तहान होता है इसी तरह बच्चों की तन्दुरुस्ती की जाँच होती रहना चाहिये इंग्लैंड अमरीका वग़ैरा देशों में ऐसा ही होता है परन्तु यहाँ ऐसा उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि हमारे बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हमारे अपने हाथों में न हो अभी यह संभव नहीं इसलिये माता पिता ख़ुद बच्चों के शरीर का ख़याल रक्खेंगे तो ख़ैरियत है वरना आज कल की शिक्षा बच्चों की तन्दुरुस्ती का नाश कर देती है, इसका ख़याल न

रखने से जवान लड़के मर जाते हैं और जो बचते हैं वह सदा बीमार नज़र आते हैं, माता पिता विचारें कि तन्दुरुस्ती छीन कर बच्चों को शिक्षित करने से क्या लाभ है जो काम समय पाकर धीरे २ होता है वह मज़बूत शानदार और ख़ूबसूरत होता है परन्तु बहुतेरे माता पिता का तो यह हाल देखा गया है कि किसी वक़्त बच्चे को पढ़ने से छुट्टी नहीं होने देते और यह चाहते हैं कि हमारा लड़का १० बरस की उमर में ही एन्टरेन्स पास हो जाय इसका नतीजा बुरा होता है आमतौर पर बच्चों को ६ बरस की उमर में मदरसे में भरती करा देते हैं यह नियम नहीं होना चाहिये और जैसी बच्चे की तन्दुरुस्ती हो उसके लिहाज़ से उससे पढ़ाई की मेहनत ली जाय, शुरू में उनके पढ़ने लिखने का समय कम होना चाहिये और ज़्यादा मौक़ा खेलने कूदने का देना चाहिये जिससे उनका शरीर आरोग्य और पुष्ट रहे, इस उमर में तालीम भी इस तरह की होना चाहिये जो खेल २ ही में दी जा सके और उनके नन्हें २ दिमाग़ों पर बहुत बोझ न पड़े, जैसे २ वे तन्दुरुस्ती में तरक़्क़ी कर जायँ वैसे ही वैसे उनसे मेहनत ज़्यादा ली जाय मतलब यह कि विद्या और तन्दुरुस्ती में साथ २ तरक़्क़ी होती जाय यदि बच्चों की शिक्षा का इस तरह ख़्याल रक्खा जायगा तो शिक्षा सुफल होगी।

४—अख़लाक़ और धर्म सिखाना बचपन ही से ज़रूरी है इस की तालीम उसी समय से शुरू हो जाना चाहिये चूंकि यह विषय बड़ा है और बहुत ज़रूरी है इसलिये इसपर अलग लिखा गया है।

५—प्राचीन समय की शिक्षा इस समय में पूरे तौर पर उपयोगी

नहीं और इस समय की शिक्षा में बहुत दोष है। समय बदलता है समय के साथ हालात बदलते हैं तो शिक्षा का ढंग भी बदलना चाहिये। हकीम अफ़लातून यूनान के फ़िलास्फ़रने कहा है कि "तेरे लड़के की शिक्षा तुझसे मुख़्तलिफ़ होना चाहिये क्योंकि तेरी सन्तान दूसरे समय के लिये पैदा हुई है"। इसलिये अगर बच्चों को एक ढंग पर शिक्षा दोगे तो वह शिक्षा कभी दोष रहित नहीं हो सकती ज़रूरत इस बात की है कि मौजूदा शिक्षा का तरीक़ा ऐसा क़ायम किया जाये जिसमें नये पुराने दोनों तरीक़े शामिल हो जायें।

६—एक अँगरेज़ी मसला है "One thing as a time and that done well" यानी एक समय में एक ही काम किया जाय और वह अच्छी तरह किया जाये और मामूली तौर पर होता भी ऐसा ही है। ऐसे ख़ास दिमाग़ होते हैं कि जो एक साथ कई काम कर सकें वरना मामूली दिमाग़ एक वक्त में एक ही काम कर सकता है मदरसे की तालीम में इस बात का बिलकुल ख़्याल नहीं रक्खा जाता, हर दर्जे में इतने मज़मून होते हैं और किताबें इस कसरत से होती हैं कि अच्छे ख़ासे आदमी का दिमाग़ चकरा जाय लेकिन छोटे छोटे ग़रीब बच्चे उनके पढ़ने और याद करने के लिये मजबूर होते हैं इस बात का ख़्याल नहीं कि इतनी मेहनत से इन बच्चों के दिमाग़ों पर क्या असर पड़ेगा नतीजा यह होता है कि मेहनत की ज़्यादती से बच्चे समय से पहले ही कमज़ोर होकर इस असार संसार को छोड़ जाते हैं।

७—जाति इतिहास शिक्षा में सबसे ज़्यादा मदद देता है बच्चों को

को नई नई बातें जानने का बहुत शौक़ होता है अगर उनको बड़े आदमियों के जीवन चरित्र और पुरानी इतिहासिक बातें छोटी छोटी कहानियों की सूरत में सुनाई और पढ़ाई जायें तो बहुत लाभ हो। मदरसों में जो इतिहास की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं वे केवल इम्तहान पास करने के लिये हैं उनसे बच्चों के अख़लाक़ पर आमतौर पर अच्छा असर नहीं पड़ता इसलिये उनको असली रूप में घर पर पढ़ाना चाहिये क्योंकि अपने बड़ों के सच्चे कारनामे बच्चों के सुधार में जादू का काम करते हैं।

८—साल में कुछ अरसे के लिये लड़कों को पहाड़ों और कुदरती व दूसरे मुकामों की सैर को ले जाना बहुत मुफ़ीद होता है क्योंकि इस तरह उनको नये नये ख़याल मिलते हैं और अपनी वक़फ़ियत बढ़ाने का शौक़ पैदा होता है और इसका तन्दुरुस्ती पर भी बहुत अच्छा असर पड़ता है। गुरुकुल कांगड़ी में ऐसा किया जाता है।

यह सब बातें पूरे तौर पर उसी समय अमल में आ सकती हैं जब कि शिक्षा का प्रबन्ध हमारे हाथ हो परन्तु जब तक ऐसा समय न आये माता पिता का फ़र्ज़ है कि मदरसों की पढ़ाई में जो कमी है उसको घर पर पूरा करने की और जो ख़राबियां हैं उनको अपने तौर पर रफ़ै करने का पूरा पूरा यत्न करें। अब नीचे कुछ हिदायतें लिखी जाती हैं जिन पर माताओं को ख़ास तौर पर ध्यान देना चाहिये।

१—अकसर मातायें ज़रा ज़रा सी बात पर बच्चों को पाठशाला जाने से रोक लेती हैं और यह ख़याल करती हैं कि एक दिन न जाने से क्या हर्ज हो सकता है उनको याद रखना

चाहिये कि एक पाठ का नागा हो जाने से भी बहुत नुक़सान होता है जहाँ एक पाठ का हर्ज हुआ बच्चे की तबियत दूसरे पाठ पर नहीं जमती क्योंकि सिलसिला टूट जाता है दूसरे एक लड़के के ख़ातिर पाठशाला वाले सब लड़कों का सबक़ नहीं रोक सकते। जब एक पाठ का सम्बन्ध दूसरे पाठ से होता है तो पहला पाठ न पढ़ने से बच्चा दूसरे अगले पाठों को नहीं समझता इस तरह बच्चे को एक दिन घर पर रख लेने से उसका कई दिन का नुक़सान हो जाता है इस वास्ते बिना ख़ास कारण के कभी बच्चे को नहीं रोकना चाहिये और रोज़ाना बिना नागा पाबन्दी के साथ पाठशाला भेजते रहना चाहिये।

२—बहानेबाज़ और खिलाड़ी लड़कों की आमतौर पर यह आदत होती है कि मेहनत तो करते नहीं और मास्टर नाराज़ होता है तो घर पर आकर अपनी मातओं से मास्टरों की शिकायत किया करते हैं। मूर्ख माता पिता लड़के का दोष तो नहीं देखते और गुस्से में आकर लड़के को दूसरे मास्टर के सुपुर्द कर देते हैं, लड़के को मास्टर की शिकायत करने का हौसला बढ़ जाता है और थोड़े दिन बाद वह दूसरे मास्टर की भी शिकायत शुरू कर देता है नतीजा यह होता है कि लड़का आख़िर में अनपढ़ रह जाता है इसलिये माता पिता को चाहिये कि कभी भूल कर भी लड़कों की शिकायत पर ध्यान न दें बल्कि खुद पहले पता लगायँ कि शिकायत वाजिब है या नावाजिब अगर वाजिब हो तो खुद मास्टर से मिलकर बात चीत कर लेना ठीक है लेकिन लड़कों का कभी हौसला न बढ़ायें जो उनको मास्टरों की शिकायत करने की हिम्मत हो। एक हिन्दी

कहावत है कि मास्टर की शिकायत करने वाला लड़का अनपढ़ और सुसराल वालों की शिकायत करने वाली लड़की हमेशा फूहर रहती है।

३—अकसर बच्चे जो खिलाड़ी हैं यह शिकायत किया करते हैं कि काम ज़्यादा है और वक़्त कम है इसका सब से अच्छा तरीक़ा यह है कि बच्चे के पढ़ने काम करने और खेलने के वक़्त मुक़र्रर कर दिये जायें और निगरानी रख कर पूरे तौर पर उसकी पाबन्दी कराई जाय, वक़्त बहुत होता है। इस दिन के २४ घंटे ही में बड़े आदमियों ने बड़े बड़े काम किये हैं। असल बात यह है कि समय व्यर्थ खो दिया जाता है, किसी ने अच्छा कहा है :—

वक़्त में तंगी फराखी दोनों हैं जैसे रबड़।
खींचने से बढ़ता है छोड़े से जाता है सुकड़॥

बच्चों की आदतों को शुरू से ही जैसे सांचे में ढालोगे वैसी ढल जायेगी इसलिये बच्चों के हर काम के लिये समय मुक़र्रर कर दो धीरे धीरे हर वक़्त काम में लगे रहने की उनकी आदत हो जायगी और वे वक़्त को व्यर्थ नहीं गँवायेंगे लेकिन बच्चों से ऐसी आशा उस वक़्त रक्खो जब तुम ख़ुद इसका पूरे तौर पर अमल करने लगो।

४—माताएँ अकसर बच्चों से घर का काम काज कराती हैं और कराना ही पड़ता है क्योंकि ग़रीब घर लाखों हैं और नौकर चाकर रखने की हैसियत वाले थोड़े इसमें कोई हर्ज नहीं केवल इस बात का ख़्याल रक्खा जाय कि उनकी पढ़ाई में ख़लल न पड़े और न पाठशाला जाने का हर्ज हो, अगर इन बातों में हर्ज करके काम कराया गया तो

खिलाड़ी बच्चे को फ़ौरन न पढ़ने का बहाना मिल आयगा।

५—बच्चों के पढ़ने लिखने की जगह अलग होना चाहिये यह ज़रूरी बात है, दिमाग़ी काम उसी वक़्त अच्छी तरह किया जा सकता है जब एकान्त हो, अगर बच्चों को ऐसी जगह बैठ कर पढ़ने लिखने को कहा जाय जहाँ और लोग बात चीत करते हों या शोर होता हो या ध्यान बटने के दूसरे सामान हों तो पढ़ने पर बच्चों की तबियत नहीं जमेगी और उनका नुक़सान होगा इसलिये जहाँ तक हो सके उनके पढ़ने को अलग जगह मुक़र्रर कर देना चाहिये लेकिन वहाँ भी निगरानी रखना ज़रूरी है ऐसा न हो कि अकेले बैठे बैठे खेल में समय बिता दें।

६—बड़े लड़के कालिज में पढ़ने के लिये घर से बाहर भेजे जाते हैं। बड़े शहरों के आज़ादी की हवा से उनके बिगड़ने का ज़्यादा अंदेशा रहता है इसलिये वहाँ उनकी निगरानी का बहुत काफ़ी इन्तज़ाम करना चाहिये ताकि बाहर जाने का पूरा पूरा फ़ायदा उठा सकें क्योंकि अगर चाल चलन बिगड़ गया तो आला तालीम से कुछ लाभ नहीं वह बजाय भलाई के बुराई करने में मदद देगी।

७—लड़कियों का पढ़ाना भी उतना ही ज़रूरी है जितना लड़कों का स्त्री पुरुष ग्रहस्त की गाड़ी के दो पहिये हैं। यह गाड़ी उसी समय अच्छी तरह चल सकती है जब दोनों पहिये दुरुस्त हों। यदि स्त्री पढ़ी हुई नहीं तो पुरुष पूर्ण रूप से कदापि अपने कामों में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक लड़कियों को लड़कों की तरह शिक्षा नहीं दी जायगी संसार के सभी काम अधूरे रहेंगे।

धर्म शिक्षा

मज़हबी तालीम

किसी अँगरेज़ कवि ने कहा है:—

It is religion that can give
Sweetest pleasure while we live
Tis riligion must supply
Solid comfort when we die.



तलब यह है कि धर्म से ही इस जीवन मे सच्चा आनन्द मिलता है और मौत के वक शान्ति नसीब होती है।

बाज़ लोगों का यह ख़्याल है कि संसारिक जीवन के लिये धार्मिक शिक्षा क ज़रूरत नहीं यह आम कहावत है "पूत पढ़े तुम वह ही, जामें हँडया खुद बुद होई"। ऐसे ख़्यालात प जितनी नफ़रत की जाय कम है मैं तो यह कहूँगा कि हिन्दुओं की दुर्दशा का मूल कारण यह है कि उन्होंने धार्मिक जीव छोड़ दिया और अभी तक हिन्दू ज़िन्दा हैं इसका ख़ास सब यही है कि उनमें अभी धर्म का कुछ अंश बाक़ी है वरना अ तक उनका दुनिया से नामनिशान भी मिट चुका होता, ध

मनुष्य में उसी तरह है जिस तरह अंगारे में आग जब तक अंगारे में चिंगारी मौजूद है उसे कोई हाथ नहीं लगा सकता जहाँ चिंगारी बुझी राख हुई जो चाहे चुटकी से मसल दे यही हाल हिन्दुओं का हुआ है और अगर अब भी न संभलेंगे तो राख ही हो जायेंगे। यह शिक्षा इस ज़िन्दगी में असली सुख और शान्ति के लिये उतनी ही ज़रूरी है जितना कि शरीर की परवरिश के लिये खाना, पीना, यह कैसी भारी भूल है कि आत्म सुधार पर बिलकुल ध्यान न दिया जाय। किसी मकान में आग लगे और माता पिता अपने बच्चों के कपड़े लेकर बाहर भागें और बच्चों को मकान में जलता हुआ छोड़ दें तो आप ऐसे माता पिता को जो कुछ कहें! वही हाल उन माता पिता का समझें जो अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा नहीं देते। बच्चों के शरीर उनकी आत्मा के कपड़े हैं, आत्मा अमर है और शरीर नाशमान है। शरीर की हिफ़ाज़त के लिये सारे ज़माने की फ़िक्र करना और आत्मा को अंधकार में छोड़ देना कितनी बड़ी मूर्खता है हालां कि शरीर का असली आनन्द भी आत्म सुधार पर ही है लेकिन इस पर ध्यान नहीं।

जिन क़ौमों में धार्किम शिक्षा का रिवाज है वे दूसरी क़ौमो से ज़्यादा तरक़्क़ी कर चुकी हैं और खुशहाल हैं। हिन्दुओं के बनिसबत मुसलमानों में धार्मिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है और देख लो जो काम चार हिन्दू नहीं कर सकते वह दो मुसलमान कर गुज़रते हैं। हिन्दू बच्चे को यह पता भी नहीं कि ईश्वर क्या चीज़ है या औतार किसे कहते हैं लेकिन ज़रा किसी छोटे से मुसलमान बच्चे के सामने हज़रत मोहम्मद की शान के ख़िलाफ़ कुछ कह दो और फिर तमाशा देखो कि वह तुम्हारी कैसी ख़बर लेता है ऐसा क्यों है इसलिये

कि उनको बतलाया जाता है कि मोहम्मद साहब रसूल खुदा हैं और उनको इज्ज़त और ताज़ीम करना उनका मज़हबी फ़र्ज़ है, अहल इसलाम में जहाँ बच्चा "अलिफ़, बे, ते" सीखा पहले सिपारा शुरू कराते हैं, चाहे बच्चा और कुछ न पढ़े लेकिन वे अपना फ़र्ज़ समझते हैं कि कुरानशरीफ़ ज़रूर पढ़ाया जाय अगर मतलब न जाने तो बेमतलब ही विर्द कर लिया करें, यह लोग बड़े प्रेम और भक्ति के साथ मौलूद वग़ैरा मज़हबी अंजुमनों में अपने बच्चों के साथ शामिल होते हैं इस तरह हर बच्चे को कुछ न कुछ अपने धर्म और बुज़ुर्गों के कारनामों से वक़फ़ियत रहती है, इसाइयों में मज़हबी तालीम लाज़मी है और इनका तो ज़िक्र भी क्या किया जाय इनका राज्य रहा मुसलमान हमारे भाई पड़ोसी हैं इनकी मिसाल हमारी रहनुमाई के लिये काफ़ी है अब हिन्दुओं की तरफ़ नज़र कीजिये इनमें अब भी हज़ारों ग्रेजवेट ऐसे मिलेंगे जिनको वेद शास्त्रों के नाम तक मालूम नहीं हैं, मुसलमानों में फ़ीसदी एक भी ऐसा नहीं मिलेगा जो कलमा न जानता हो लेकिन हम में शायद सैकड़ों में चन्द आदमी ऐसे मिलेंगे जो गायत्री मन्त्र जानते होंगे अलबत्ता आर्यसमाज की बदौलत हिन्दुओं का इधर ध्यान हुआ है लेकिन जब तक धार्मिक शिक्षा को शिक्षा का अंग न बना लिया जायगा सन्तान धार्मिक नहीं हो सकती यह बात हमारे इख़्तयार से बाहर है हमें तो हर एक माता पिता से यह निवेदन करना है कि बच्चों को शुरू से ही धार्मिक शिक्षा देना बहुत ज़रूरी समझें, मदरसों और कालिजों के भरोसे कभी न रहें क्योंकि मालूम नहीं वह समय कब आयेगा जब वहाँ धार्मिक शिक्षा लाज़मी होगी, बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के बहुत से तरीक़े हैं हम ख़ास तौर पर चन्द तरीक़े

नीचे लिखते हैं जिनपर माता पिता ध्यान दें और फिर ऐसे ही तरीक़ों से बच्चों को शिक्षा देते रहें।

१—सब से पहले ईश्वर का ख़्याल दिलाना ज़रूरी है इसके लिये निहायत उम्दा तरीक़ा यह है कि सनअत में साने को दिखाया जाय और जीवन के मामूली वाक़आत और क़ुदरती मनाज़िर से बच्चों को ईश्वर का यक़ीन दिलाया जाय।

१—एक लड़के ने कहा "अगर तुम मुझको दिखा दो कि ईश्वर कहाँ है तो मैं तुमको एक आम दूँ"।

दूसरे ने जवाब दिया "अगर तुम मुझको ऐसी जगह दिखा दो जहाँ ईश्वर नहीं है तो मैं तुमको दो आम दूँ"। इस तरह के लतीफ़े सुना कर बच्चों को समझाया जाय कि ईश्वर ज़र्रे २ में रमा हुआ है, कोई जगह उससे ख़ाली नहीं, उसने ही सारे संसार को बनाया है, चाँद, सूरज, सितारे, समुन्द्र, पहाड़, आग, हवा, आसमान, ज़मीन, सब उसने पैदा किये वह सब से बड़ा और सब का मालिक है हमें भी उसने ही बनाया है उसने हमें आँखें देखने को, कान सुनने को, ज़बान बोलने को, हाथ काम करने को और पैर चलने को दिये हैं, उसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिये।

२—सुबह और शाम को जब सूर्य उदय और अस्त हो उस वक़्त बच्चों को समझाओ कि सूरज कैसा चमकता है कितना बड़ा है ईश्वर ने इसे बनाया है सूरज प्राणों का भंडार है यह न चमके तो दुनिया में अँधेरा ही अँधेरा रहे सारी दुनिया मर जाय रात में भी उजाला न हो क्योंकि चाँद भी सूरज की रोशनी से चमकता है यह बातें सुनकर

बच्चों का शौक बढ़ेगा और वे सवाल करेंगे उनको जवाब देते हुए ईश्वर की महानता बताते जाओ, आसमान पर तरह तरह के रंग दिखा कर पूछो कि यह कौन से रंग हैं बच्चे जवाब देने की कोशिश करेंगे तब बतलाओ कि ऐसे रंग मनुष्य नहीं बना सकता यह ईश्वर की ही कारीगरी है बच्चे हमारे बनिस्बत ईश्वर से अधिक समीप होते हैं क्योंकि अभी वे माया जाल से बचे होते हैं वे यह सब देख सुन कर बहुत ख़ुश होंगे और इस वक़्त जो कुछ उन्हें समझाया जायगा उसे कभी न भूलेंगे इसी तरह रात के वक़्त चाँद सितारों के हालात कहकर ईश्वर की महानता दिखाओ।

३—बरसात के मोसिम में मेंह का बरसना, बादल का गरजना, बिजली का चमकना व कड़कना तरह तरह की वनास्पति का ऊगना ऐसी बातें हैं जिनमें बच्चे बड़ी दिलचस्पी लेते हैं उनको समझाया जाय कि पानी बरसने से नाज पैदा होता है इसी से घास ऊगता है नाज खाकर हम ज़िन्दा रहते हैं और घास खाकर गायें भैंसें दूध देती हैं जिससे हम तरह तरह की चीज़ें बना कर खाते हैं ईश्वर पानी न बरसायें तो काल पड़ जाय तालाब कुयें सब सूख जाँय पानी पीने को न मिले नाज खाने को न मिले सब जीव जन्तु मर जाँय, ईश्वर बड़ा कृपालु और दयालु है वह हमारे और संसार के सब जीवों के लिए इतनी कृपा करता है हमारा धर्म है कि हम हमेशा उसको याद करें और उसके गुण गायें।

४—जब बच्चों को बाग़ और जंगलों में सैर के लिए ले जाओ तो वहाँ की शोभा दिखाओ, दरख़्तों में तरह २ के फूल होते

हैं फूलों के रंग और गुण बतला कर नसीहत करो अगर कोई ख़ुशबूदार है और सफ़ेद है तो कहो कि मन की शुद्धता फूल की सुगंध की तरह है तुम अपना मन शुद्ध रक्खोगे किसी के लिये बुरा नहीं चीतोगे तो तुम्हारी तारीफ़ भी ऐसी ही फैलेगी जैसी इस फूल की सुगन्ध फैल रही है वग़ैरा—इसी तरह जंगल की बूटियों के गुण बतलाओ कि ईश्वर ने हमारे लिये कैसी कैसी चीज़ें पैदा की हैं।

५—इस तरह ईश्वर की महानता बच्चों के ज़हन नशीन करके उनको समझाया जाय कि ईश्वर तुम्हारा स्वामी है इस वास्ते हमेशा उसको ख़ुश रक्खो कभी कोई काम ऐसा मत करो जिससे वह नाराज़ हो जैसे तुम माता पिता का हुक्म मानते हो तो वे ख़ुश होते हैं इसी तरह ईश्वर का हुक्म मानने से ईश्वर ख़ुश होगा धर्म शास्त्रों में जो बातें लिखी हैं वह ईश्वर का हुक्म है उनके मुताबिक़ तुमको रहना चाहिये, ईश्वर की बड़ी कृपा है कि उसने तुमको मनुष्य जन्म दिया, संसार में बेगिनती जीव जन्तु हैं लेकिन मनुष्य सब से बड़ा है क्योंकि वह ईश्वर को याद कर सकता है ईश्वर ने उसको ज्ञान बुद्धि दिया है औरों को नहीं दिया यह उसकी बड़ी कृपा है इस जन्म को सब प्राणी तरसते हैं अगर तुम अधर्म और पाप कर्म करोगे तो ईश्वर तुमको सज़ा देगा और तुम जैसा करोगे वैसा ही तुमको फल भुगतना पड़ेगा इस वास्ते हमेशा पाप से डरते रहो ताकि ईश्वर नाराज़ न हो जावे वग़ैरा—

६—महात्मा शिवब्रत लालजी ने किसी जगह लिखा है—
"बच्चों को बा अख़लाक़ रखने की सहल, यक़ीनी और

कुदरती तदबीर यह है कि माता पिता सच्चे बा तहजीब हों, अगर तुम ख़ुद ख़िलाफ़ अख़लाक़ काम करके बच्चे को बा अख़लाक़ बनाना चाहो तो बड़ी ग़लती है, बच्चों को निरा बच्चा न समझो वे तुम्हारे दिल को इस तरह पढ़ते हैं जैसे तुम खुली हुई किताब के सफ़ों को पढ़ते हो, उनके कहने न कहने पर न जाओ उनकी निगाह माता पिता की कमज़ोरियों पर फ़ौरन जाती है और उनको छिपाने की कोशिश करने से वे ज़्यादा जान जाते हैं, हम सब बच्चगी का हालत से गुज़र चुके हैं, ख़ुद ग़ौर कर लो—"यह नसीहत कैसी अनमूल है इसपर कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं माता पिता ख़ुद सोचें अगर वे धार्मिक नहीं हैं और बच्चा को बनाना चाहते हैं तो पहले ख़ुद वैसे बनें वरना बच्चे कभी धार्मिक न होंगे बल्कि और मक्कारी सीख जायँगे, रवायत है कि मुहम्मद साहब की ख़िदमत में एक औरत अपने लड़के को लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि यह लड़का गुड़ बहुत खाता है न खाने की इसे हिदायत फ़रमा दें" हज़रत ने फ़रमाया "एक हफ़्ते बाद इस लड़के को लाना" औरत फिर हाज़िर हुई, हज़रत ने लड़के को हिदायत करके गुड़ खाना छुड़ा दिया, तब औरत ने प्रश्न किया कि आपने एक हफ़्ते बाद क्यों बुलाया पहले दिन ही हिदायत क्यों न फ़रमा दी तो फ़रमाया मैं ख़ुद गुड़ खाता था उस वक़्त मेरी नसीहत लड़के पर असर न करती इस हफ़्ते में मैंने ख़ुद खाना छोड़ा तब इस लड़के को छुड़ाने में कामयाब हुआ, यह वचन उस पैग़म्बर का है जिसके नाम लेवा इस वक़्त भी संसार में २० करोड़ मनुष्य हैं, माता पिता ख़ुद सोचें और अमल

करें।

७—बच्चे स्वभाविक चंचल होते हैं कभी निचले नहीं बैठते उनका ध्यान भी बहुत देर तक एक मज़मून पर नहीं जम सकता इस वास्ते बच्चे को धार्मिक शिक्षा उस समय दी जाय जब वह खेल में या ग़ुस्से की हालत में न हो और उसका चित्त उस शिक्षा के ग्रहण करने के लायक़ मुनासिब हालत में हो अगर इसका ख़्याल न रक्खा जायगा तो शिक्षा का कुछ फल न होगा, जो विचार प्रगट किया जाय वह बच्चे के दिल में बैठना चाहिये और ऐसा तब ही होगा कि वह तुम्हारी बात सुनने के लिये तय्यार हो और उसका चित्त और किसी तरफ़ न हो इसके अलावा यह भी ज़रूरी है कि धार्मिक बातें इस ढंग से कही जायँ कि बच्चे शौक़ के साथ उनको सुनें इसके लिये एक अच्छी सूरत यह है कि यह विषय छोटी २ कहानियों की सुरत में बच्चों को सुनाया जाय, यह शिक्षा कई तरीक़ों पर और जितने दिलचस्प ढंग से दी जायगी उतनी ही मुफ़ीद पड़ेगी, महापुरुषों और ईश्वर भक्तों के जीवन चरित्र सुनाना भी बहुत लाभदायक हैं—महात्मा शिवब्रतलाल जी की बनाई हुई ऐसी कई पुस्तकें हैं जिनसे यह ज़रूरत भलीभाँति पूरी हो सकती है और बच्चों के काम के साथ ही साथ माता पिता ख़ुद भी बड़ा लाभ उठा सकते हैं क्योंकि आत्मिक विषय को अभी तक किसी महात्मा ने इनसे ज़्यादा सुगम नहीं किया—

८—धार्मिक शिक्षा में भजनों का भी बड़ा प्रभाव पड़ता है, यदि बच्चों को छोटे छोटे भजन बचपन से ही सिखाये जायँ तो बहुत फ़ायदा हो।

९—ईश्वर प्रार्थना धार्मिक शिक्षा का ख़ास अंग है यह बच्चों को शुरू से सिखाना चाहिये लेकिन इस ख़्याल से कि शायद बाज़ माता पिता का इसपर विश्वास न हो या कम हो, महात्मा शिवब्रतलाल जी के शब्दों में यहाँ इसकी तशरीह कर देना ज़रूरी समझते हैं ताकि इसको व्यर्थ न समझें—"दुआ और प्रार्थना में असर है, दुआ क़बूल होती है इसमें ज़रा भी शक नहीं है, जो लोग दुआयें माँगा करते हैं उनकी ज़िन्दगी में कई दफ़े ऐसे मौक़े आये हैं कि उनकी मुराद पूरी हुई मगर दुआ असल में क्या है और इसकी असली मुराद क्या है ? दुआ असल में चित्त की वरती का अपने दिल के मरकज़ पर इकट्ठा और क़ायम करने का नाम है, ईश्वर सारी ताक़तों का भंडार है उस की तरफ़ झुकाव से मनुष्य में अपने आप शान्ति आती है और वह ज़ोरदार और ताक़त का वारिस हो जाता है, दुनिया में जद्दोजहद करने की ताक़त दिल से आती है दिल दुआ माँगने से मुत्तहद हो जाता है और इससे इस तरह के तसल्ली भरे ख़्याल पैदा हो जाते हैं कि मनुष्य बेडर हो जाता है, मनुष्य का आत्मा बेहद ताक़तवर है दिल उसके पास रहता है, दिली प्रार्थना के वक़्त चित्त की वृत्तियाँ इसकी तरफ़ रुजू होकर इकट्ठी हो जाती हैं इसपर आत्मा का अक्स पड़ता है जो दिल को सारी ताक़तें बख़्शता रहता है।" यह तशरीह ग़ौरतलब है और इससे साफ़ ज़ाहिर है कि धार्मिक शिक्षा में ईश्वर प्रार्थना कितनी ज़रूरी है और संसारिक जीवन में भी इसका प्रभाव बड़ा प्रबल होता है इसलिये बच्चों को शुरू से इसका आदी बनाना चाहिये, बच्चों को प्रार्थना सिखाने में इन बातों का

ख़ास तौर पर ख़्याल रखना चाहिये।

१—यह काम माता पिता का है कि प्रार्थना कहलाने से पहले बच्चे को उसके लिये तय्यार कर लें क्योंकि प्रार्थना असल में दिल से होती है अगर बच्चे की तबीयत नहीं है और उसने ख़ाली शब्दों को दोहरा दिया तो कुछ फ़ायदा नहीं, जो कुछ वह कहे दिल से कहे यानी प्रार्थना कहे नहीं बल्कि करे।

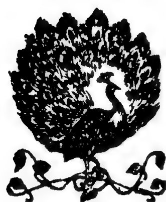
२—बच्चा दिन में कोई शरारत या ऐब करे तो उसकी माफ़ी ईश्वर से मँगवाओ अगर ऐसे मौक़े पर माता भी यह प्रार्थना करे "हे भगवन् तू मेरे बच्चे का क़ुसूर माफ़ करना" तो इसका असर बच्चे पर बहुत ही अच्छा पड़ेगा क्योंकि वह देखेगा कि माता को मेरी हरकत पर रंज है और प्रेम से मेरे लिये ईश्वर से माफ़ी माँगती है।

३—जहाँ तक हो सके बच्चों से अपने ही शब्दों में प्रार्थना कहलाई जाय मसलन बच्चे ने भाई या बहन को मारा तो उसके उस क़ुसूर के लिये सज़ा दो और फिर जब उसका मिज़ाज ठंडा हो जाय तो कहो कि ईश्वर से भी इस क़सूर की माफ़ी माँगो अगर बच्चा यह महसूस करता है कि उसने क़सूर किया तो वह जिन शब्दों में प्रार्थना करेगा वह आप के बतलाये हुए शब्दों से कहीं अच्छे होंगे क्योंकि उसके दिल से निकलेंगे।

४—अगर ज़्यादा नहीं तो सुबह और रात को सोते वक़्त छोटे बच्चों से ज़रूर प्रार्थना करानी चाहिये, प्रार्थना में यह ३ बातें ज़रूर होना चाहिये (१) ईश्वर का धन्यवाद (२) पाप कर्म से बचने की प्रार्थना और (३) संबन्धियों और सब

प्राणियों की सलामती की दुआ, बच्चों की उमर के लेहाज़ से प्रार्थना छोटी बड़ी रक्खी जायँ।

जब बच्चे अच्छी तरह समझने लगें तो उनसे बिला नाग़ा दोनों वक़् संध्या पूजा अपने अपने धर्म के माफ़िक़ कराई जाया करे और इसकी पाबन्दी कराने में पूरी सख़्ती बरती जाय, इनके अलावा बच्चों को धार्मिक कथा वग़ैरा में शामिल किया जाय और हर त्योहार के मौक़े पर उनको ख़ास तौर पर उपदेश दिया जाय और समझाया जाय कि यह त्योहार क्यों और कैसे होता है।



लड़कों को नेक बनाने की तदबीर



बहुत सी तदबीरें हैं जिनसे आप लड़कों की हालत अख़लाक़ी दुरुस्त कर सकते हो लेकिन उनके दिलों में अख़लाक़ी रूह फूंकने का आसान और जल्दी असर करने वाला तरीक़ा यह है कि उनको हमेशा क़दीम बुज़ुरगों की कहानियाँ सुनाई जायँ, यह कहानियाँ जहाँ तक मुमकिन हो अपनी ही ख़ास क़ौम के बुज़ुरगों की हों क्योंकि हम जिन्सयत और जाति संबन्ध के ख़्याल से वे आसानी से उनके औसाफ़ अपने में जज़्ब कर सकेंगे और उनमें किसी हद तक क़ौमी ग़रूर पैदा होगा जो सेल्फ़ रेसपेक्ट और ख़ुद दारी का सबब बनेगा और जिनमें यह गुण एक बार पैदा हो जाय फिर तमाम उम्र के लिये उन की तरफ़ से मुतमईयन हो रहना ग़ल्ती न होगी।

दुनियावी, दीनी, क़ौमी, मुल्की हर तरह की तरक़्क़ी की जड़ अख़लाक़ में रहती है इसलिये हमारा विश्वास है कि अगर सच्ची तरक़्क़ी मंज़ूर है तो क़ौम के अख़लाक़ व तहज़ीब के दुरुस्त करने की कोशिश करो और मिन जुमले और बातों के पुराने ज़माने की कहानियाँ और क़ौमी बुज़ुरगों के कारनामों को अपने घरों में अकसर सुनाया करो ताकि लोगों के ख़्यालात दुरुस्त हों।

शिवब्रत लाल



विवाह

(शादी)



जो देश इस वक्त उन्नति की शिखर पर पहुँचे हुये हैं वहाँ सन्तान इस तरह नहीं व्याही जाती जिस तरह यहाँ व्याही जाती है, उन देशों में माता पिता को मुख्य चिन्ता यह रहती है कि हमारी औलाद बिला किसी की मदद के आज़ादी से रोटी कमाने के योग्य हो जायँ। जब लड़का खाने कमाने लगता है तब उसके विवाह की फ़िक्र की जाती है और होना भी ऐसा ही चाहिये कि जब लड़का लड़की हर तरह की शिक्षा पा चुकें तब विवाह किया जाय, यह साधारण काम नहीं बहुत बड़ा काम है, कितने अफ़सोस की बात है कि बच्चों की खुशी के लिये मामूली काम तो उनके चाहे माफ़िक़ करें लेकिन जिस काम पर बच्चों की सारी ज़िन्दगी की खुशी निर्भर है उसमें उनकी राय भी न लें और गुड्डा गुड्डी की तरह व्याह दें, विवाह धार्मिक यज्ञ है यह उस समय होना चाहिये कि जब बर कन्या इसके करने के अधिकारी हों, विवाह बड़ी ज़िम्मेवरी का काम है यह उस वक्त होना चाहिये कि जब लड़का लड़की विवाह की ज़िम्मेवरी को अच्छी तरह समझने लगें और ग्रहस्थ के सब

काम खुद करने के लायक़ हो जायँ। भारत वर्ष में इस समय जितनी मुसीबत फैली हुई है उसमें कम से कम आधी इस अयोग्य विवाह संबन्ध के सबब से है। आप हिन्दुस्तान भर में तलाश करें आप को सौ में मुशकिल से १०-५ स्त्री पुरुष ऐसे मिलेंगे जिनमें परस्पर प्रेम हो और ग्रहस्थ जीवन आनन्द से भोग रहे हों, गृहस्थ जीवन के आनन्द का मूल कारण परस्पर प्रेम ही है। प्रेम दो तरह का होता है, अंगरेज़ी में हम इसको Love of Sense और Love of Sentiment कह सकते हैं Sentimental love असली प्रेम है और Love of Sense उस प्रेम को समझिये कि जो शामिल रहते रहते सम्बन्ध या धर्म के ख़्याल से थोड़ा बहुत पैदा हो जाता है लेकिन ऐसे भी सौ में १०-५ ही मिलेंगे जो समझदार हैं और ग़रज़ (मतलब) या ज़रूरत से इस प्रेम ब्योहार का पालन करते हैं बाक़ी सब घराने ऐसे मिलेंगे जहाँ रात दिन "तू तू मैं मैं" होती है और अशान्ति व क्लेश का डेरा जमा रहता है। हमारा अपना तो यही तजुरबा है कि मनुष्य को जब तक घर में सुख शान्ति नहीं मिलती वह संसार का कोई कार्य सफलता के साथ नहीं कर सकता। जब तक सब मनुष्य निज उन्नति न करें देश की उन्नति नहीं हो सकती इसलिये हमारी विनय है कि देश भाई बच्चों के जल्दी विवाह की फ़िक्र न करें बल्कि इस बात की चिन्ता रक्खें कि सन्तान को गृहस्थ का सुख मिले।

प्राचीन समय में हमारे यहाँ भी यही तरीक़ा था कि जब वर कन्या ब्रह्मचर्य्य पूरा कर चुकते थे तब गृहस्थ में प्रवेश होते थे परन्तु हमने वह तरीक़ा छोड़ दिया और दूसरों ने किसी न किसी सूरत में ग्रहण कर लिया नतीज़ा यह हुआ कि वे संसारिक आनन्द के ऊँचे शिखर पर चढ़ गये और हम

चढ़े हुये नीचे गिर गये। अब भी समय है कि माता पिता अपनी अपनी जाति में ऐसे प्रकार सोचकर प्रचलित करें कि जिससे बर कन्या में परस्पर प्रेम हो और वे संसारिक व आत्मिक दोनों सुख प्राप्त कर सकें क्योंकि विवाह सम्बन्ध धार्मिक सम्बन्ध है।

बाल-विवाह की ख़राबियाँ आमतौर पर जानी हुई हैं और बाल-विवाह क़रीब क़रीब बन्द हो गया है अलबत्ता राजपूताना और सेन्ट्रल इन्डिया प्रांतों में अभी यह रिवाज़ बाक़ी है परन्तु दिन दिन बन्द होता जाता है।

"विवाह" बिषय पर हमारे एक लेख का हिन्दी अनुवाद हमारे मित्र "कविरत्न" मुंशी शारदा प्रसाद साहब ने कृपा कर के किया है वह आगे देकर अब इस पुस्तक को समाप्त करते हैं और पाठकगण से भूल चूक की माफ़ी माँगते हैं। "जो माता पिता इस पुस्तक को पढ़ें या सुनें भगवान करे उनका और उनकी सन्तान का कल्याण हो" यही परब्रह्म प्रमात्मा से बारम्बार प्रार्थना है।

ओ३मशम्



विवाह भवन उत्साह

कुंडलिया छंद

चेतन जड़ नर विहँग पशु , वृत्तहु सरित प्रवाह ।
निश दिन अति उत्साह से , निज निज करत विवाह ॥

निज निज करत विवाह प्रकृति की ये ही रीती ।
करो ईश्वर नियम बीच नित चित से प्रीती ॥

होत सदा सम्यानुकूल सब जीवन को तन ।
समय समय पर घटैं बढ़ै क्या जड़ क्या चेतन ॥१॥

आओ देखो बाग़ बन , वृत्तलता द्रुम डार ।
बिन ऋतु कब फूलैं फलैं , मन में लेहु विचार ॥

मन में लेहु विचार फूल फल पात प्रफुल्लित ।
बिना समय नहिँ होत सींचिये यदि घृत अमृत ॥

बिन ऋतु आये वृथा वीर्य अपनो न गँवाओ ।
खेत पात गिर खोह बाग़ चलि देखो आओ ॥२॥

वाही नर की बुद्धि वर , जो प्रकृति अनकूल ।
पुत्र पौत्र प्रगटावते , वीर्य न खोवैं भूल ॥

वार्य न खोवैं भूलि वही बैकुंठ विराजैं।
जन समाज में रण समाज में साजहिं साजैं॥
शब्द व्याह को अर्थ अखंड प्रेम उत्साही।
त्रिभुवन चाहै हटै रही विपरीति न वाही॥ ३॥

सब से उत्तम आश्रम, है गृहस्थ की राह।
वेद शास्त्र समुझावहीं, जो हो शुद्ध विवाह॥
जो हो शुद्ध विवाह वही नित हूँ सुखदाई।
जो प्रतिकूल मिलाप वही होवै दुखदाई॥
आज काल्ह की रीति भई अनरीत ग़ज़ब से।
नदी बही मर्याद त्याग खट पट भइ सब से॥४॥

क्या पाताल अकाश है, मध्यहु में अनरीत।
चह स्वतन्त्र दुख लहै, समुझत हैं विपरीत॥
समुझत हैं विप्रीत कोइ बूढ़े पर व्याहैं।
कोऊ बालक बैस खेल गुड़िया सम चाहैं॥
एक जन्म संबंध गृहस्थी को मानैं क्या।
वेद शास्त्र नहिं पढ़ैं रीति उत्तम जानैं क्या॥५॥

कारण सच्चा व्याह का, घर बसने की रीति।
उजड़ जात घर पुर सहित, जो राखैं अनरीति॥
जो राखैं अनरीति देश के बैरी सोई।
सच्चा व्याह वही है जासों सुख नित होई॥
यजुर्वेद में लिखा सूर्य अरु भूमि निवारण।
आकर्षण दुहुमध्य प्रेम को देखो कारण॥६॥

एक दूसरे पर मरैं, प्रेम दुहून अखंड।
देत सहारा भूमिहू, शक्तिमान ब्रह्मंड॥

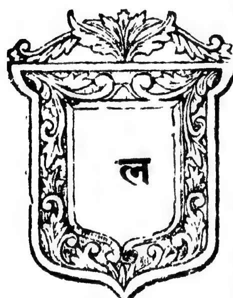
शक्तिमान ब्रह्मंड आपनो कर्तब जानैं ।
त्यों विवाह को जोड़ प्रेम को यदि पहिचानैं ॥
नर नारी यों रहैं तहाँ बैकुंठ ऊसरे ।
एक एक पर मरैं जियें लखि एक दूसरे ॥ ७ ॥
याही है रिगवेद में, बर्णन ब्याह सुरीत ।
नरनारी सम्बन्ध है, प्रेम अखंड पुनीत ॥
प्रेम अखंड पुनीत ऊष्ण परकाश किरण में ।
भान लहै इकसंग, जियन में और मरण में ॥
जियें ऊष्ण से जीव जंत चर बोलत जाही ।
तेज़ प्रकाश अचर तर वर जिय चाहत याही ॥ ८ ॥
जलधर ऊष्ण से बनै, जल प्रकाश बरसाय ।
ऊष्ण गर्म प्रकाश हिम, राह विवाह बताय ॥
राह विवाह बताय दोउ मिलि कारज करहीं ।
काम सुधरहीं सकल एक दूजे पर मरहीं ॥
नर नारी यह समुझि करैं जो प्रेम परस्पर ।
तो उपमा के योग्य सोई जल सोई जलधर ॥ ९ ॥
भारत के बीरो सुनो, तरुण पहरुआ प्रेम ।
झड़क भड़क में फड़क मति, देखु पच्छिमी नेम ॥
देखि पच्छिमी नेम त्तेम अपनो जिन जानो ।
कह्यो सयाने जनन मनन कर हित सनमानो ॥
ब्याह हाल के होत भयानक रोवैं आरत ।
नित विवाह प्रतिकूल माहिं है गारत भारत ॥ १० ॥
अच्छा जोड़ा जानिकै, करो ब्याह अनमोल ।
समय पाय शुभ वीर्य को, बोओ ऋतु को तोल ॥
बोओ ऋतु को तोल वीर्य ईश्वरी प्रसादा ।
तेज़ बुद्धि बल ज्ञान कार्य मर्यादह ज्यादा ॥

शुद्ध वीर्य से कूर्या सवत्त तरवर नर बच्छा ।
रक्षा कीजे वीर्य तबै इच्छा फल अच्छा ॥ ११ ॥

लाओ जोड़ा व्याह कर, औसर वैस विचार ।
जाति पांति कुल आचरण, शंका सब निर्धार ॥

शंका सब निर्धार पुत्र उत्पन्न कराओ ।
होहि पित्र ऋण उऋण सभ्य तिनको बनवाओ ॥
यही तपस्या कठिन प्रकृति के नियम बढ़ाओ ।
पी. डी. वर्मन रकम कियो तापर चितलावो ॥ १

माता पिता का फ़र्ज़



लड़का नालायक़ है, बुरी राह चलता है, गुमराह है, धर्म अधर्म का ख़्याल नहीं करता, बड़ों का कहना नहीं मानता, मानो यह सब बुराइयाँ इसमें हैं मगर क्या तुमको चाहिये कि तुम इन ऐबों के सबब से अपने लड़के को घर से निकाल दो और फिर इसकी ज़िन्दगी की निगरानी न करो, आज कल अख़बारों में इस तरह के इश्तहार देखने में आते हैं। एक शख़्स लिखता है "मेरा लड़का बद्‌चलन है इस लिये मैं इसके किसी बात का ज़िम्मेवार नहीं हूँ"। दूसरा इश्तहार देता है "मेरा लड़का आवारा हो गया है, कोई उस से व्योहार न करे, मुझसे और उस से कोई वास्ता नहीं है"। मामूली आदमी इसको कारोबार की निगाह से देखते हैं और माँ बाप को बे ऐब बताते रहते हैं। ख़ास कर हिन्दुओं में हर शख़्स कहा करता है "आज कल के लड़के कलयुगी औलाद हैं अपने मन की चाल चलते हैं और बड़ों का नाम बदनाम करते हैं"। दुनिया चाहे इस बात को मान ले मगर मैं इसको कभी न मानूंगा और किसी हालत में माँ बाप को लड़कों की बद-चलनी का ग़ैर ज़िम्मेवार न तसलीम करूंगा और अगर तुम

भी ग़ौर करोगे तो किसी हद तक मेरे ख़्याल से मुत्तफ़िक़ होगे। लड़का अगर आवारा है तो माँबाप का क़सूर है लड़का अगर बदतमीज़ है तो माँ बाप ने इसे ऐसा बना दिया है। लड़का अगर अधर्मी है तो माँ बाप ने अपने ख़्यालात अपनी आदत और अपने चाल चलन से इसको गुमराह कर दिया है, लड़के की बदचलनी, लड़के की बदअतवारी और लड़के की बुराई की जड़ माँ बाप के दिलों में है। गंगा का सरचशमा पाक है इसलिये इसकी धार का पानी पाक रहता है अगर इसका सरचशमा गंदा होता तो इसका पानी भी गंदा ही रहता। शतपथ ब्राह्मण कहता है "पुत्र पिता की आत्मा है" और इसलिये पिता हो हर पहलू से अपने लड़के के चाल चलन का जवाबदह है, अगर माँ बाप अच्छे होते तो कभी मुमकिन न था कि बच्चा ख़राब हो जाता। मसल मशहूर है "वली के घर शैतान पैदा हुआ करते हैं" यह सच है मगर किस इन्सान के मुँह में जबान है जो यह कह सके कि वली के दिल में कभी कभी शैतनत के ख़्यालात नहीं पैदा होते और वह दिन के २४ घंटों में वली ही बना रहता है। इनसान में कमज़ोरियां हैं जिससे फिरका इनसानी नहीं रुकता है, कोई कभी नहीं कह सकता कि मैं कमज़ोरियों का शिकार नहीं होऊँगा या नहीं होता, इनसान का दिल गहरा समुद्र है जिस में नेकी बदी की लहरें हमेशा ही उठा करती हैं कभी वह अख़लाक़ के ऊँचे तबके पर चढ़ जाता है कभी बद अख़लाकी के नीचे दलदल में गिर पड़ता है और अगर ज़रा तुम अपनी हालत पर ग़ौर करना सीख लो तो तुम कभी इनकार नहीं कर सकते कि हममें बुरे जज़बात नहीं पैदा होते। कबीर साहब फ़रमाते हैं।

मन समुद्र लख ना पड़े, उठे लहर अपार ।
दिल दरिया समरथ बिना, कौन लगावे पार ॥

ऐसी हालत में तुम कैसे कह सकते हो कि जिस वक़्त तुम अपनी औरत के पास गये थे उस वक़्त तुम में नफ़सानी जज़्बात और हैवानी ग़लबात नहीं थे, मुमकिन है आज जिस लड़के के अतवार को देखकर तुम नाक भौं चढ़ाते हो वह ऐसे हो जज़्बात के वक़्त तुम्हारी आत्मा से पैदा हुआ हो और इसलिये तुम भी अपने बच्चे की शरारत और फ़ितना परदाज़ी के इल्ज़ाम से बरी नहीं हो सकते । इसके बिगाड़ने वाले इसके ख़राब करने वाले इसको बुरे रास्ते पर लगाने वाले तुम आप ही हो वह तुम्हारे ऐमाल की मुजस्सिम तसवीर है, वह तुम्हारे विचार की झलकती हुई मूर्ति है वह तुम्हारे कर्म धर्म का वारिस है । तुमने ही अपनी बुराइयों का इस बेगुनाह को वुरसा बख़शा है और आज तुम अख़बारों में इश्तहार देकर उस से अपना गला छुड़ाना चाहते हो, कर्म और कर्म का फल मनुष्य के साथ इस तरह चिमटता है जैसे फ़रज़ी भूत चिमटते हैं । तुमको इसके सबब से दुखी होना पड़ेगा, तुमको उसके सबब से बदनामी उठानी पड़ेगी, तुम उसके सबब से लानत मलामत के निशाने बनाये जाओगे, जैसा तुमने कहा है, जैसा तुमने सोचा है, जैसा तुम्हारी ज़बान से निकला है वैसा ही तुम्हारा बच्चा बनेगा । बच्चा कोई दूसरी चीज़ नहीं है तुम ही हो जिसने स्त्री के गर्भ में आकर नया जन्म धारण किया है यही सबब है कि शतपथ ब्राह्मण का लिखने वाला पुत्र को पिता का आत्मा बताता है । इश्तहार देने से तुम छूट नहीं सकते, तुम्हारे हमसाये के लोग चाहे तुमको बे क़सूर कह दें मगर मैं कभी तुमको बेक़सूर न कहूँगा । मैं तुम्हारे दिल के गहरे परदों में इस बच्चे

की जड़ देख रहा हूँ और तुमको इसकी हस्ती, इसकी ख़राबी और इसकी बदवज़ई का मुजरिम क़रार देता हूँ। दुनियावी क़ानून तुमको बरी कर देगा मगर कुदरत का क़ानून कभी बरी न करेगा क्योंकि हज़ार आंख वाला परमात्मा जानता है कि तुम ही इसकी बदी के मूजिद, बानी और करता धरता हो तुमने जौ बोये गेहूँ को फ़स्ल कैसे काट सकोगे, जो कांटे बोता है वह फूल कैसे चुनेगा, सुनो, सुन रक्खो इस उसूल को कभी न भूलो"। "कर्म के फल से ग़ाफ़िल न रहो गेहूं से गेहूं पैदा होता है और जौ से जौ"।

हर काम की कुदरत में सज़ा और जज़ा है, हर अमल का कोई न कोई नतीज़ा है और यह बच्चा जिसको तुम आज हिकारत की नज़र से देखते हो तुम्हारा अपना पैदा किया हुआ है।

भगवान गौतमबुद्ध नादान नहीं थे जिन्होंने कहा है कि मन-बचन-कर्म से शुद्ध बनो। कबीर साहब बावले नहीं थे जो उपदेश दे गये हैं कि जो जैसा करेगा वैसा पावेगा। गोस्वामी तुलसीदास जी जूनूनी व फ़ातिरूल अक़्ल नहीं थे जिन्होंने कर्म को प्रधान माना है, जैसा किया था वैसा पाया, जैसा अब करोगे वैसा आगे पाओगे। मसल है "आज दे सो कल पावे, पूत भतार के आगे आवे"। मैं कहता हूँ "सोचे समझे करे सो पावे, बाप के रूप में फल दरसावे"। इसलिये ऐ मेरे शहवत परस्त भाइयों? तुम नाहक अपनी बुरी औलाद को मतऊन न करो, उससे छुटकारा पाने की तदबीर न ढूंढो, वह तो किसी न किसी सूरत में तुम्हारे दुख का कारण होगा। यह सृष्टि कर्म की है, ब्रह्मा को भी इससे छुटकारा नहीं है, हमारी तुम्हारी तो हैसियत ही क्या है, यह तो सनातन से ऐसा ही होता चला

आया है और हमेशा ऐसा ही रहेगा। कुदरत के कारबार में कभी फ़र्क़ नहीं पड़ता इसका क़ानून अटल है अटट है, कठिन है और कुरुर है जो ज़रा भी इसकी इनहराफ़ वरज़ी करेगा, मातूब, माज़ूब, मकहूर और मरदूद होगा। इससे न तो तुमको कोई देवता छुड़ा सकता है, न कोई देवी बचा सकती है। तुमको भुगतना पड़ेगा, अपनी करनी अपने आप को भरनी होगी। तुम लाख कोशिश करो किसी न किसी वक्त, किसी न किसी शक्ल में, किसी न किसी नतीज़े की सूरत में तुम उसका फल पाओगे और फल पाकर रहोगे।

हिन्दू माता पिता आज कल ग़ज़ब बढ़ा रहे हैं, बच्चे की ख़राबी देखकर उसको घर से बाहर निकाल दिया, अख़बारों में इश्तहार दे दिये बच्चा कुछ दिनों तक गली गली मारा मारा फिरता रहा आख़िर वह ईसाईयों या मुसलमानों के हाथ में पड़ा, पहले ही इसको माँ बाप की तरफ़ से नफ़रत थी, इसके साथ प्रेम का बरताव नहीं किया गया। ग़ैर मज़हब वालों के हाथ में आसान शिकार की तरह फँस गया और अब वह न सिर्फ़ अपने ख़ानदान को ज़िल्लत व बेइज्ज़ती का सबब हुआ बल्कि हिन्दुओं के मुख़ालिफ़ ख़्यालात का मूजिद बन गया और सारी सुसायटी के बरख़िलाफ़ दिल के फफूले फोड़ने लगा, क्या तुम समझते हो यह हद दर्जे का नुक़सान नहीं है? और क्या हिन्दू माता पिता का यह बरताव अपने सिलसिले में आलमगीर बुरे नतीज़े नहीं पैदा करता, यह सिर्फ़ एक उदाहरण है, ऐसी ऐसी कितनी मिसालें और पेश की जा सकती हैं। अगर कभी वह बाप के घर में वापिस आने का इरादा करता तो इससे नफ़रत की जाती है, इसको वापिस आकर इसलाह का मौक़ा नहीं दिया जाता वह पुश्तेनी जायदाद से हमेशा के

लिये महरूम कर दिया जाता है। माता पिता कहते हैं "इस मूज़ी ने हमको बदनाम किया, नंग ख़ानदान है, अधर्मी है, इसको मुंह न लगाओ, जाने दो जिधर सींग समाय चला जाय हम में से किसी को मुंह तक न दिखायें"। और वह चला जाता है और किसी न किसी सूरत में सौ गुना बदला लेता है।

जो मां बाप इस तरह का बरताव करते हैं उनसे मैं पूछता हूँ आख़िर तुमने इसको पैदा क्यों किया, ऐसी औलाद के पैदा करने की तुमको ज़रूरत ही क्या थी, वह बेचारा ख़ुद तो तुम्हारे घर में नहीं आया, तुमने इसको ख़ुद बुलाया था, अपने घर आने की दावत दी थी और वह दावत स्त्री और पुरुष के संयोग की सूरत में दी गई थी अगर उससे मशवरा लिया जाता तो शायद वह कभी ऐसे ना मेहरबान माता पिता के घर आना पसन्द न करता और इनको दूर ही से सलाम करता, मगर वह बुलाया गया, वह मेहमान बनकर मेहमान की हैसियत में आया था और यह कैसे ज़ुल्म की बात है कि मेहमानबाज़ी करने के बजाय तुम इसके साथ दुश्मनी का बरताव करते हो, क्या हिन्दुओं में इत्थी सत्कार का यही तरीक़ा है, जो शख़्स किसी को अपने यहाँ मेहमान करता है इसकी कुछ जवाबदही ज़रूर है। या तो वह मेहमान को अपने यहाँ न बुलाये अगर बुलाता है तो इसको चाहिये कि इसके ख़्यालात की ताज़ीम करे और जहाँ तक हो सके इसके ख़ुश करने और उसके इसलाह करने का तरीक़ा भी सोचें।

बच्चे किस तरह माँ बाप के घर पैदा होते हैं एक रूहानियत का भेद है जिसका ज़ाहिर कर देना इस मौक़े पर ज़रूरी मालूम होता है ताकि बच्चा पैदा करने वाली मशीनों के मालिक

इनको समझ सकें, इसकी असलियत यह है,,माता पिता जिस ख़्याल को दिल में जगह देकर आपस में मिलते हैं इसी तरह की रूह उनकी तरफ़ मायल होती है, यह आकाश मण्डल रूहों से भरा हुआ है जैसे सृष्टि के तमाम मसाले आकाश में रहते हैं वैसे ही रूहों का भंडार भी यही आकाश है और चूंकि इस वक़्त ख़ास तरह के जज़बात व ख़्यालात माता पिता के दिलों में मौजूद होते हैं। इन जज़बात व ख़्यालात से हमदर्दी रखने वाली रूहें इनकी तरफ़ मायल होती हैं, यह तरीक़ा है जिस से बच्चों को पैदा होने की दावत दी जाती है, तुम अगर अच्छे ख़्याल की मशशाकी पैदा करते हो तो तुम्हारे बच्चे अच्छे होंगे अगर तुम में बुरे ख़्यालात हैं तो तुम्हारा बच्चा किसी हालत में अच्छा नहीं हो सकता, यह भी सृष्टि का एक नियम है हर जिस अपने हम जिसको पास खेंच लाती है।

एक मनुष्य ग़रीबी का सताया हुआ है जिस के दिल में ग़रीबी, मायूसी और परेशानी के ख़्यालात हैं इसका लड़का ग़रीबी, मायूसी और परेशानी का संस्कार लेकर उसके यहाँ पैदा होगा, जो दिल का मज़बूत, हँसमुख और नेक है इसका बच्चा इस तरह लाल, ख़ुशी और नेकी का संस्कार लिये हुये माता के गर्भ में आवेगा, बाप अगर अच्छा है और माँ बुरी है तो इस हालत में ऐसा लड़का पैदा होगा जिसमें नेकी और बदी दोनों तरह के संस्कार मिले होंगे, माता पिता के ख़्यालात का असर उनके रज व बीरज में रहता है और यही रज व बीरज उस बच्चे की रूह के क़ाबिल का समान जमा करते हैं, प्राण बाप से आता है, रई माँ को होती है, बाप सूर्य है जो प्राणों का भंडार है, इनके रगोरेशे में ख़ास तरह के ख़्यालात व महसूसात का जोहर छिपा रहता है और यह जोहर

था निचोड़ बच्चों को बतौर मीरास के इनसे मिलता है, मूर्ख पुरुषों की औलाद मूर्ख और बुद्धिमानों की औलाद बुद्धिमान होती है मगर यह आम क़ायदा नहीं है क्योंकि ज्ञान के साथ अज्ञान छिपा रहता है और अज्ञान के पेट में ज्ञान रहता है जिस वक़्त जिसका ज़ोर होगा वही अपना नतीज़ा पैदा करेगा और इसी सबब से कभी कभी बुरों की औलाद अच्छी और अच्छों की बुरी होती है।

चत्र अंगद की दो औरतें थीं, पति मरने पर व्यास जी ने उनके साथ नियोग किया, व्यास बदसूरत थे, एक औरत ने इनकी सूरत देखकर डर के सबब से आँख बन्द कर ली, अंधा धृतराष्ट्र पैदा हुआ, दूसरी ख़ौफ से काँपती रही, इसका लड़का पांडव पीले रंग का हुआ, यह महाभारत का तारीख़ी वाका है और तुम इसके सफ़ों को खोल कर और भी बहुत सी मिसालें देख सकते हो, कुन्ती ने सूरज का ख़्याल दिल में रखकर मैल किया उसका लड़का करण सूरज की तरह शानदार और तेजस्वी हुआ, दूसरी दफ़े धर्मराज का ख़्याल किया इसका नतीजा युधिष्ठिर हुआ, इसी तरह अर्जुन, नकुल व सहदेव का भी हाल समझो, एक ही दशरथ से चार तरह के लड़के राम, लक्ष्मण भरत व शत्रुघ्न पैदा हुये इनकी सूरत शकल चाल व्योहार इनकी माता के ख़्यालात के अक्स थे, मतलब यह कि माँ बाप में जिस तरह के ख़्यालात व जज़बात होंगे वैसे ही उनकी औलाद होगी, अब ग़ौर करो इसमें बच्चों का क्या क़सूर है। क्यों तुमने समझ बूझ कर काम नहीं किया, क़सूर अपना और औलाद को बदनाम करते हो, इससे ज़्यादा अंधेर और ज़ुल्म क्या होगा।

जो किसान अपने खेत में बुरे बीज बोता है इसकी फ़सल

अच्छी कैसे होगी, मगर तुम बुरा बीज बोकर उम्मीद रखते हो कि अच्छे फल पैदा हों, यह कैसे हो सकता है। अब कहो मैं सच कहता हूँ या झूठ बकता हूं, अगर सच है तो इसको अच्छी तरह ज़हननशीन कर लो, अगर झूठ है तो मेरे कान गर्म कर दो, मैं बुरा न मानूंगा।

बुरे बाप का लड़का बुरा होगा, अच्छे बाप का लड़का अच्छा होगा मगर यह अच्छाई या बुराई इतना लतीफ़ मज़मून है जिसका समझना बहुत मुशकिल है महाशयगण! अगर आप अपनी औलाद से नाखुश व नाराज़ हों तो इसके लिये दूसरा जवाबदः नहीं है। तुम्हारा अपना ही क़सूर है, ज़रा गरेबान में मुंह डालकर इसको सोचो और फिर लड़के को घर से निकल जाने को कहो, अगर तुम्हारे दिल के दरवाज़े इसके आने के लिये बन्द न होते तो वह कब तुम्हारे यहां आता? तुमने दिलों के दरवाज़ों को खोल दिया, बुलाया हुआ मेहमान आ गया। अब शिकायत क्यों करते हो, इस लड़के की ख़राबी का पता अपने दिलों में लगाओ। यह तुम्हारे ही भर्म, मूर्खता, बद-चलनी, बदख़्याली और बदअंदेशी के नतीजे हैं। अगर तुम ईमानदार होते, अगर तुम में सच्ची समझ होती अगर तुम में धर्म होता तो क्यों तुम मुसीबत के शिकार होते।

अब सवाल यह है जो कुछ होना था हो गया। बच्चे पैदा हो गये, अब क्या करना चाहिये? इस मुसीबत से छुटकारा पाने का तरीक़ा क्या है और अब क्या किया जाय।

इसका जवाब यह कि बच्चों पर ज़ुल्म न करो क्योंकि नफ़रत और ज़ुल्म से उनके दिली मिलान को मदद मिलेगी और वे दिन बदिन बुरे से बुरे होते जायेंगे। तुमको चाहिये इनके साथ मुहब्बत से पेश आओ, इनके साथ हमदर्दी करो,

इनसे जब बात चीत करो हँस कर करो, इनकी कमज़ोरियों को जहाँ तक हो सके नज़र अंदाज़ करते रहो और हमदर्दी के क़ानून से इनको सीधे रास्ते पर लगाने की तदबीर अमल में लाओ, यह १–२ दिन का मज़मून नहीं है, इसमें बरसों लगेंगी क्योंकि रज बीरज के संस्कार जल्दी नहीं जा सकते। मेहनत करनी पड़ती है, कोशिश से काम लेना होता है, अपने दिल के नेक कश्फ़ और नेक जज़बे देने पड़ते हैं तब जाकर इसलाह की सूरत पैदा होती है।

तुम अपनी ज़िम्मेदारी और जवाबदही की तरफ़ ख़्याल करो और अगर यह मंज़ूर है कि बच्चे सुधर जायँ तो सब से पहले तुम सुधर जाओ अपनी इसलाह आप करो ताकि तुम्हारी नेक मिसाल मशाल बनकर इनको सच्चे रास्ते की तरफ़ रहबरी कर सके और धीरे धीरे इनका सुधार हो जाय, इनको हमदर्द और अच्छे साथी दो, सब से कहो कोई शख़्स रुखाई के साथ उनसे पेश न आवे न उन पर लानत मलामत की बोछार किया करे, अफ़सोस के हाथ मलने से कुछ न बनेगा, तुम हज़ार अफ़सोस करो, इससे होता क्या है। सहल और यक़ीनी तदबीर सिर्फ़ यह है कि बच्चों के लिये अपने घर का अपने दिल का और अपनी पिदरी व मादरी मुहब्बत का दरवाज़ा बन्द न करो, इनको प्यार करो, उनकी कमज़ोरियों की गर्द को अपनी मुहब्बत के आंसू से धोते रहो, इनके लिये गोद खुली रक्खो और वे सुधर जायँगे क्योंकि दिली मुहब्बत से ज़्यादा ताक़तवर उस्ताद दुनिया में कोई भी नहीं है, प्रेम धीरे धीरे इनको अच्छा बना देगा और वे कुछ के कुछ हो जायँगे।

अगर यह नहीं करते तो ऐ बदनसीब गुनहगार तू जिस तरह बुरी औलाद पैदा करके बदी का मूजिद हुआ है इसी

तरह तू आप अपने बच्चों के सुधार का दुश्मन है। तू नहीं जानता कि माँ बाप के फ़र्ज़ कैसे नाज़ुक होते हैं, अगर तू नाहक बच्चे को घर से निकालता है इसकी शिक्षा का माकूल इन्तज़ाम नहीं करता तो तू आप बड़ा पापी है और तेरे लिये, तेरे ख़ानदान के लिये और तेरे मुल्क के लिये किसी वक्त भी मग़फ़रत का सामान पैदा न होगा, कोशिश कर कि तेरा बच्चा जिसका बिगाड़ने वाला तू आप है सुधर जाय और मैं तुझको यह पैग़ाम हमदर्दी और मुहब्बत के लहजे में सुनाने आया हूँ। जो अपने बच्चे का सुधार नहीं करता वह अपना अपनी क़ौम का और अपने मुल्क का ख़ूंख़्वार दुश्मन है।

इन्तज़ाम खानेदारी



रबार का इन्तज़ाम अकसर एक राज्य के इन्तज़ाम से भी मुशकिल होता है और इसका सब से बड़ा कारण यह है कि जब तक मनुष्य गहरा विचार न करे जाहिरा इस इन्तज़ाम की ज़रूरत मालूम नहीं होती क्योंकि घरके मालिकों के ख़्यालात अलग अगल होते हैं अगर उनको घर वालों की दिलजोई का ख़्याल हो और वे अपना फ़र्ज़ अदा करने में मज़बूत हों तो किसी नियम की पाबन्दी की ज़रूरत नहीं लेकिन अगर वे ख़्याल करें कि घर के कामों में बहुत बड़ी आज़ादी है और किसी नियम की ज़रूरत नहीं जब जैसा मौक़ा मिला किया गया या यह सोचें कि अगर घर का कोई मामला आज रह गया है या मुनासिब नहीं हुआ है तो फिर कभी इसका बदला कर देंगे तो ऐसी सूरतों में घर के मालिक घर वालों के साथ अपने धर्म का पालन नहीं करते, हर रोज़ नये काम सामने आते हैं और साथ ही ख़तम हो जाते हैं। हर दिल समुद्र है और रोज़ के काम वह लहरें हैं जो मनुष्य जीवन के किनारों से टकराकर ग़ायब हो जाती हैं। लोग इन को दुबारा देखना चाहते हैं परन्तु जो लहर किनारे से टकरा-

कर टूट गई वह गई उसको फ़िर देखने की आशा व्यर्थ है।

घरू कामों में मनुष्य सब से ज़्यादा ख़ुद मुख़्तार और ज़िम्मेवार है यदि वह इनके करने में ग़लती करता है तो उस से कोई पूछने वाला नहीं इसलिये इनके करने में बहुत होशियारी समझदारी और घर वालों की दिलजोई की ज़रूरत है।

अगर घर का मालिक सब घर वालों के जज़बात व ख़्यालात से नावाक़िफ़ है तो कभी अपना फ़र्ज़ ठीक तौर पर अदा नहीं कर सकता चाहे वह कैसा हो तजुरबेकार हो, घर के मालिक के इख़्तयार बहुत बड़े होते हैं और वह अपने चाहे माफ़िक़ बहुत कुछ बुराई भलाई कर सकता है लेकिन बहुत लोग इसका ख़्याल भी नहीं करते बल्कि हुकूमत के शोक में अंधे हो जाते हैं और जब तक कोई ख़ास मौक़ा ही पेश न आ जाये वे इस पर ध्यान भी नहीं देते कि घर वाले उनकी हुकूमत को कितनी सख़्ती के साथ उठा रहे हैं इसके अलावा दूसरी ग़लती यह होती है कि घर वालों में जो लोग शिक्षा और दर्जे में छोटे हैं उनसे बे तकल्लुफ़ी का बरताव करना वे लोग इस ख़्याल से मुनासिब नहीं समझते कि ऐसा बरताव केवल उनके साथ होना चाहिये जो उच्च शिक्षा पा चुके हैं और ख़ानदानी हैं इस तरह घर के मालिकों के मिज़ाज में हुकूमत के साथ सख़्ती और भी बढ़ जाती है वरना घर वालों के मिज़ाज व आदतों से वाक़िफ़ होने के लिये इतनी बे तकल्लुफ़ी व आज़ादी बहुत ज़रूरी है। शायद बाज़ लोगों का ऐसा ख़्याल हो कि इस मेल मिलाप के बग़ैर भी घर का इन्तज़ाम अच्छी तरह हो सकता है और ऐसा संभव है लेकिन यह ज़बरदस्ती होगा, जिसमें घर वालों की तबियत रखना ज़रूरी नहीं और "ज़बरदस्ती" या जब्र इन्तज़ाम का बहुत छोटा अंश है।

अपने मातहतों को इतना मजबूर करना भी मुनासिब नहीं कि वे कहना न मानने पर मजबूर हो जायँ इसका पूरा ध्यान रखना चाहिये और ऐसा मौक़ा टाल देना चाहिये इसी तरह उनको उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करने के लिये भी इतना मजबूर करना मुनासिब नहीं कि वे जहाज़ के ग़ुलामों की तरह काम से बंधे रहें, इसके अलावा मातहतों से यह आशा रखना भी मुनासिब नहीं कि वे तुम्हारी मर्ज़ी के मुताबिक ही काम करेंगे इसमें उनके काम की क़द्र जाती रहती है। जो काम इरादे से किया जाय वह क़ाबिल क़द्र होता है, मजबूरी के काम में दिल शामिल नहीं होता और बग़ैर दिल के शामिल हुये काम की असलियत जाती रहती है ईश्वर ने हर आदमी को बुराई भलाई की पहचान के लिये अंतःकरण दी है तो यह कैसे हो सकता है कि हम किसी को "हुक्म से" नेक बना सकें, शिक्षा देने की कोशिश ज़रूर करना चाहिये लेकिन यह याद रहे कि ज़बरदस्ती कोई शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता। घर की हुकूमत को मुनासिब हद तक काम में लाना और इसकी बुनयाद मुहब्बत व इज़्ज़त होना ज़रूरी है, छोटों को कभी मजबूर मत करो कि वे तुम्हारी राय को ख़ुद भी सब से अच्छा समझें, यह ज़रूर है कि तुम्हारे हुक्म की तामील की जाय लेकिन यह आशा रखना कि तुम्हारी राय को वे लोग सब से ज़्यादा माकूल समझें सरासर बेजा है, अगर ऐसा अमल किया जायगा तो वे लोग मक्कार बन जायेंगे मामले को बिलकुल उनकी राय पर छोड़ देना भी ग़ैर ज़रूरी है लेकिन अगर ऐसा करो तो याद रक्खो कि न्याय में कोई बड़ा छोटा नहीं जब तक उनको मुनासिब मालूम न हो वे उसको कैसे मुनासिब समझेंगे चाहे तुम उनकी दलील के ख़िलाफ़ हो परन्तु इसका

उस काम के माकूल या ग़ैर माकूल होने से कुछ संबन्ध नहीं। घर के इन्तज़ाम की बुनयाद सच्चाई और प्रेम है अगर ऐसा नहीं है तो इसको ख़ालिस हुकूमत खुद इख़्यारी कहना पड़ेगा इसमें अटल प्रेम चाहिये अपने घरवालों के मिज़ाज से वाक़िफ़ होना और अपनी तबीयत से उनको वाक़िफ़ करना ज़रूरी है। ऐसा करने के लिये उनके साथ हमदर्दी करना और इस हमदर्दी का उनको यक़ीन दिलाना चाहिये क्योंकि इसी पर उनकी सच्चाई निर्भर है, सच्ची हमदर्दी से वे अपने दिल का हाल तुम पर ज़ाहिर करेंगे। इसी तरह अगर एक बच्चे को तुम सच्चा और ईमानदार बनाना चाहते हो तो उसको अपनी मुहब्बत और हमदर्दी का यक़ीन दिलाओ वह आसानी से तुम्हारा फ़रमांबरदार हो जायगा हर क़सूर पर सज़ा देने से तुम उसे सीधे रास्ते पर नहीं ला सकते। यह आम शिकायत सुनने में आती है कि घर के मालिक का एतबार नहीं है लेकिन ऐसा ख़्याल करना बड़ी भूल है, छोटे का बड़े पर एतबार करना बहुत मुशकिल है और ख़ास कर ऐसी सूरत में जब कि छोटे को बड़े की तरफ़ से यह उम्मीद हो कि बुरा भला सुनना पड़ेगा इसलिये ज़रूरी है कि छोटों को अपनी हमदर्दी का यक़ीन दिलाओ।

हर शख़्स जिसने इस मज़मून पर ज़रा भी ग़ौर किया हो जान सकता है कि घर का इन्तज़ाम इनसाफ़ और सच्चाई पर निर्भर है अगर इसमें थोड़ा भी फ़र्क़ पड़ेगा तो कई बुराईयाँ पैदा हो जायँगी। अकसर लोग कहते हैं कि "छोटी बातों पर क्या ध्यान दें" इसका यह अर्थ है कि अगर कोई बात घर में हुई जो असल में कुछ नामुनासिब है लेकिन उस से कुछ नुक़सान नहीं तो उस से आँख चुरा जाते हैं यह नामुनासिब

है। जिस काम से कोई नुक़सान नहीं तो ज़ाहिरा कह दो कि इसका करना ठीक है अगर ऐसा नहीं करते तो उससे आंख मत चुराओ यह समझ कर कि इन छोटी बातों में कुछ बुराई है लेकिन कोई मौजूदा तकलीफ़ नहीं टाल जाना ठीक नहीं है। हर हालत में मालिक का यह फ़र्ज़ होना चाहिये कि सब मामलों को वाजिब निगाह से देखे अगर मुनासिब है तो ज़ाहिरा मुनासिब करार दे और अगर नामुनासिब है तो मना कर दे हेज़ बेज़ की हालत ठीक नहीं, घरवालों के साथ बरताव करने में जितने साफ़ और सच्चे रहोगे उतना ही अच्छा है, अकसर देखा जाता है कि लोग किसी मामले पर सिर्फ़ इसलिये चश्म पोशी करते हैं कि उन्होंने अब तक उसकी अच्छाई बुराई पर ग़ौर नहीं किया है और इस तकलीफ़ से बचना चाहते हैं, यह बात बिलकुल नामुनासिब है, चश्मपोशी चाहे तवज्जह न होने से हो या सुस्ती से बिलकुल नावाजिब है—

घर वालों के दिल बहलाव और आज़ादी के ख़ातिर जिस बात की इजाज़त दी जाय वह सिर्फ़ इजाज़त ही न हो बलिक उसमें उनको तरग़ीब देना और ख़ुद हिस्सा लेना भी ज़रूरी है, अगर उनकी ख़ुशी की परवाह न की जायगी और उनके आराम व तफ़रीह से हमदर्दी नहीं रक्खी जायगी तो उनका एतबार हासिल करना ग़ैरमुमकिन है, तबयतें अलग अलग होती हैं इसलिये तफ़रीह भी अलग अलग होना लाज़मी है, अपनी पसन्द की चीज़ दूसरे को ख़ुशी नहीं दे सकती जब तक कि उसकी तरफ़ ख़्याल न दिलाया जाय अगर ऐसा नहीं करते हो तो इसका यह अर्थ हुआ कि उनको अपनी असली ख़ुशी से रोकते हो और कहने में यह कहते

हो कि तुमको उनकी ख़ुशी की परवाह है, इस सूरत में वे तुम्हारे शब्दों को असली नहीं समझेंगे और यक़ीन नहीं कर सकेंगे कि तुम उनकी असली ख़ुशी के चाहने वाले हो, मतलब यह है कि ऐसा मौक़ा न आने दो कि घर वाले यह ख़्याल करने लगें कि जो कुछ उनके वास्ते अति उत्तम है उसपर उनके ख़्याल की परवाह नहीं की जाती और अपने ख़्याल से उसके दबाने की कोशिश की जाती है।

अब हम चन्द ऐसे ज़रये बयान करते हैं कि जो इन्तज़ाम खानेदारी में काम में लाये जा सकें और जिनपर घर की ख़ुशी निर्भर है।

(१) इन्सानी ख़ुशी में सब से अच्छा और सब से पहला ज़रया अपनी अमली मिसाल है, जिन बातों के करने की उम्मीद घर वालों से रखते हो उनको ख़ुद करके दिखाओ।

(२) तारीफ़ या बुराई करने में बहुत होशयार रहो सिर्फ़ इस लिये किसी छोटे की तारीफ़ मत करो कि पहले तुम बिला सबब उसपर नाराज़ हुये थे।

(३) हँसी मज़ाक़ और मस्ख़रेपन को बिलकुल छोड़ दो यह नामुनासिब ही नहीं है बल्कि इससे अख़लाकी जुरअत और चाल चलन कमज़ोर होता है अकसर यह इलाज साबित होता है लेकिन ख़तरनाक इलाज है और इसका मुनासिब इस्तेमाल बहुत मुशकिल, अगर किसी शख़्स के किसी काम पर हँसी की जाय तो अकसर मुफ़ीद पड़ता है लेकिन साथ ही दूसरी बुराई पैदा होती है और इन्सान की आज़ाद तबीयत को बरबाद करके उसको मक्कार बना देती है।

(४) घर वाले को चाहिये कि जहाँ वह बुराइयों की हँसी न उड़ाये उससे ज़्यादा इस बात का ख़्याल रक्खे कि जो नेकी की निशान या शुरू हालत में हैं उनकी भी हँसी न करे बहुत से नेक इरादे इस तरह बरबाद हो जाते हैं, घर वालों की बुराइयों के दबाने में बड़ी होशयारी चाहिये, सख़्त बरताव से उनके गुसताख़ होने का डर है लेकिन इससे ज़्यादा इस बात की ज़रूरत है कि जो अख़लाक़ी तरक़्क़ी की शुरू हालत में हों उनकी दिलशिकनी न की जाय और ज़्यादा नरमी से बरताव किया जाय, तरक़्क़ी की हर कोशिश पर तरग़ीब देने की ज़रूरत है, लापरवाही लिये हुये ताने की बात चीत या नफ़रत हिकारत से देखना जवानों के बहुत से इरादों को पैदा होते ही बरबाद कर देते हैं, इस बात का बहुत ख़्याल रखना चाहिये कि तरक़्क़ी चाहने वालों को कभी उनके पहले ख़्यालात हालत और बेरहमाना रायजनी की याद न दिलायें, अकसर हँसी होने के डर से वे फिर अपनी पहली हालत इख़्तयार कर लेते हैं। जवानों के मामले में इस अहतयात की ख़ासतौर पर ज़रूरत है क्योंकि वे न तो यह जानते हैं कि मनुष्य हर पल बदलता रहता है और पहली बातों पर नज़र डालने से सब से ज़्यादा अचम्भे की बात यह नज़र आती है कि पहले के ख़्यालात जो बहुत मज़बूत और न बदलने वाले मालूम होते थे कितने बदल गये हैं जैसे जैसे उम्र गुज़रती है आदमी ज़्यादा अक़्लमन्द होता जाता है और न यह कि अकसर बातों में ठीक नतीजे पर पहुँचने के लिये अकसर दूसरों की रायें इख़्तयार करनी पड़ती है इन वुजूहात सेव मुख़ालफ़त के अमल से

बहुत शरमिन्दा होते हैं और पहली आदतों की इसलाह करना गुनाह समझने लगते हैं।

अब नीचे चन्दआम क़ायदे दर्ज किये जाते हैं जो हुकूमत खानेदारी में हर शख़्स के काम आ सकते हैं।

(१) पहली बात यह है कि कम से कम दफ़े सज़ा के लायक़ कामों पर सज़ा दो। हमदर्दी हासिल करने के लिये "माफ़ी" मुफ़ीद है, यह न ख़्याल करो कि घरवालों के तमाम काम बुराई के इरादे से होते हैं, और न यह उम्मीद रक्खो कि जो बातें इतनी उम्र में और इतने वसी और गहरे तजुरबे के बाद तुमने मुफ़ीद पाई हैं वे असली सच्चाइयों की तरह उनके समझ में आ जायँ। इसलिये उनको ख़ता करते हुये और इस तरह धीरे धीरे सच्चाई पर हावी होते हुये देखने का तुमको मुतहम्मिल होना चाहिये।

(२) हर शख़्स का मज़ाक अलग होता है इसलिये यह कोशिश नहीं करना चाहिये कि दूसरे भी सिर्फ़ तुम्हारे ही मज़ाक में हिस्सा लें, दूसरों की ख़ुश्यों को सिर्फ़ अपनी ही ख़ुशी में मत देखो।

(३) हुक्म देते वक़्त हमेशा सोच लो कि जिस काम के करने को कहते हो वह अमलन मुमकिन है या नहीं।

(४) कभी ग़ुस्से में सज़ा न दो और कभी सज़ा देने की तकलीफ़ के ख़्याल से माफ़ मत करो।

(५) जब किसी को अपने ख़िलाफ़ मर्ज़ी काम करते हुये देखो तो बजाय नाफ़रमानी पर मलामत करने के सोचो कि इसका सबब यह तो नहीं है कि तुम इनको अपनी मंशा

(६) शक या मिज़ाज अच्छा नहीं, घर वालों पर पूरा भरोसा रक्खो इस तरह उनकी जाती इज़्ज़त बढ़ेगी और वह तुम पर ज़्यादा एतबार करेंगे।

(७) अपनी मुहब्बत का सरचश्मा आम के लिये खुला हुआ रक्खो और तुम खानेदारी का असली आनन्द उठा सकोगे।

(अनुवाद)

कठिन शब्दार्थ

नं०	पृष्ठ	लाइन	शब्द	अर्थ
१	३	६	दारुण	कठिन
२	,,	८	कृतघ्नी	एहसान फ़रामोश
३	५	१६	दायरा	घेरा
४	६	१०	परिणाम	नतीजा
५	७	६	ऐतराज़	शंका
६	१०	४	शीरख्वारी का ज़माना	बालपन
७	,,	८	नाफ़रमानी	आज्ञा भंग
८	१७	२	मेदा	पचनी
९	,,	७	ऐतदाल	मर्याद
१०	,,	१३	तहलील	प्राप्ति
११	१८	११	हादसा	आपति
१२	२१	१	अख़लाकी हालत	सभ्यता
१३	२३	१२	तफ़रीह	भाषण
१४	२६	१	हुज्जत करना	वादाविवाद
१५	,,	४	दलीलबाज़ी	तर्क
१६	,,	५	रौब	धाक
१७	३०	१२	नाइत्तफ़ाकी	अनमेल
१८	३२	१७	अमली ख़्लाल	अनुभव ध्यान
१९	३५	४	खुराफ़ाती बकना	अश्लीलवाद
२०	,,	१०	नाशायस्तगी	असभ्यता
२१	३६	१६	बर्क़ ख़िराम	चंचला गमन
२२	,,	१७	शरर	तिनगा
२३	४३	१०	गुनजायश	संधि
२४	,,	२३	तारीख़ी मुक़ामात	इतिहासिक स्थान
२५	५०	२३	अहसान फ़रामोशी	कृतिघ्नता
२६	५३	९	दिलचस्प	मनोहर
२७	५८	१८	अहसास	कृतार्थ

नं०	पृष्ठ	लाइन	शब्द	अर्थ
२८	६२	१३	जलवा	चिमितकार
२९	६५	२३	दौरान ख़ून	रक्त प्रवाह
३०	६६	१९	बेशतर	अधिकांश
३१	७५	१	ख़िलाफ़ वरज़ी	उलटा चलना
३२	७६	६	ग़फ़लत	असावधानी
३३	८७	१	ग़रज़मन्द	स्वार्थी
३४	"	११	ख़ुदनुमाई	निज दर्श
३५	८९	१९	किफ़ायत शआरी	सुव्यय
३६	९०	६	नुमाईश	प्रदर्शनी
३७	९०	१	ज़रूरयात ज़िन्दगी	जीवन आवश्यक्य
३८	९३	१	अहतियात	सावधानी
३९	९५	१	ग़नीमत	लूट
४०	९९	१	इतमीनान	बोध
४१	१०७	१०	बेतहाशा	अतिवेग
४२	१०९	२	ज़लील	गिरा
४३	"	२४	बदज़बानी	कटुबचन
४४	१११	१८	तालिबइल्म	विद्यार्थी
४५	११५	१३	मक़सद	मनोर्थ
४६	"	१७	तहज़ीब	सभ्यता
४७	११८	१८	इब्तदाई	आरंभिक
४८	१२१	१८	मज़मून	लेख
४९	१२२	८	कारनामे	कर्तव्यता
५०	"	१३	वक़फ़ियत	जानकारी
५१	१२९	४	सनअत में सानै दिखाया जाये	कार्य में कर्ता प्रगटाना
५२	"	५	मामूली वाक़आत	साधारण होतव्य
५३	"	६	क़ुदरती मनाजिर	प्रकृति दृश्य
५४	१३४	११	दिल का मरकज़	मन चक्र
५५	"	१४	वारिस	भाग्य अधिकारी

नं०	सफ़ा	लाइन	शब्द	अर्थ
५६	१३४	१५	जद्दोजहद करने की ताक़त	परिश्रम शक्ति
५७	"	१६	मुत्तहद हो जाता है	गिना हुआ
५८	"	२०	रुजू होकर	सामना लेकर
५९	"	२१	अक्स	छाया
६०	"	२२	गौरतलब	ध्यान देने योग्य
६१	१३७	६	क़दीम	पुराना
६२	"	९	हमजिन्सयत	एक जाति
६३	"	१०	औसाफ़ जज़्ब करना	गुण ग्राहकता
६४	"	११	क़ौमी गुरूर	जाति अहंकार
६५	"	१५	दुन्यावी, दीनी, क़ौमी, मुल्की	सांसारिक, धार्मिक जातिक, देशिक
६६	१४५		न तसलीम करूँगा	न मानूंगा
६७	१४६		मुत्तफ़िक़	समविचार
६८	"		मुमकिन	संभव
६९	"		इन्सान	मनुष्य
७०	१४७		फ़ितना परदाज़ी	उपद्रव करना
७१	"		इलज़ाम	दोष लगाना
७२	"		बरी	दोष रहित
७३	"		एमाल	कर्म
७४	"		लानत मलामत	धिक्कार
७५	"		हमसाये	पड़ोसी
७६	१४८		बदवज़ई	बुरी चालचलन
७७	"		हिक़ारत	तुच्छता
७८	"		जनूनी	पागल
७९	"		फ़ातिरूल अक़्ल	"
८०	१४९		नफ़रत	ग्लानि
८१	"		मूजिद	प्रथम कर्ता

नं०	पृष्ठ	लाइन	शब्द	अर्थ
८२	"		आलमगीर	संसार ग्रसित करने वाला
८३	"		महरूम	अभागी
८४	"		नंग ख़ान्दा	कुल कलंकी
८५	"		दावत	निमंत्रण
८६	"		मशवरा	सलाह
८७	"		मेहमांनिवाज़ी	अतिथि सेवा
८८	१५१		रूह	जीव
८९	"		हमदर्दी	सहानुभूति
९०	"		मायूसी	निरासता
९१	"		परेशानी	विकलता
९२	"		इसतक़लाल	धैर्य्य
९३	१५२		मिसालों	दृष्टान्तों
९४	१५३		गरीबान में मुंह डाल कर	शिर झुका कर
९५	१५५		मग़फ़रत	क्षमा
९६	१५७		अलावा	अतिरिक्त
९७	१६०		हेज़वेज़	सोच विचार
९८	१६२		बे रहमाना	निर्दयता
९९	१६३		गुनाह	पाप
१००	"		वसूअ	लंबा चौड़ा
१०१	१६४		सरचश्मा	सोता
१०२	"		ख़ानेदार	गृहस्थी